30.00

March 2011

मरयम

नमाज़

फूल और आपकी शख़्सियत

कर्ज़ुल हुसना की अहम्मियत

झूठ के नुक़सान

रुह की तलाश

इस्लाम में वीमेन राइट्स

बच्चों को अपने खिलौने खुद बनाने दें

लडकियों की परवरिश

मां की 10 नसीहतें

नौकरी पेशा औरतों के मसले और उनका हल

अगर आपको 'मरयम'
पसंद है तो....
इसे अपने रिश्तेदारों,
साथियों और दोस्तों
के बीच फैलाने में
हमारी मदद कीजिए!

SUBSCRIPTION CHARGES WITHIN INDIA

1 year	**12** issues	*320/-*
2 years	**24** issues	*600/-*
3 years	**36** issues	*850/-*

CONTACT NO.
+91-522-4009558
+91 9892 39 3414, 9936 65 3509
maryammonthly@gmail.com
LUCKNOW-INDIA

इमाम हसन अस्करी[अ०] :

ख़ुदा ने बुराई के लिए बहुत से ताले बनाए हैं जिनकी चाबी शराब है और झूट बोलना शराब से भी बुरी चीज़ है।

(वसाएलुश्शिया, 2/223)

March
2011

Monthly Magazine

मरयम

MARYAM

A Socio-Cultural & Religious Monthly Magazine

Chief Editor
M. Hasan Naqvi

Editorial Board
M. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi

Managing Editor
Abbas Asghar Shabrez

Executive Editor
Fasahat Husain

Assist. Exec. Editor
M. Aqeel Zaidi

Contributors
Imtiyaz Abbas Rizwan
Abid Raza Noashad
Azmi Rizvi
Fatima

Graphic Designer
imagine grafix **Siraj Abidi**
9839099435

Typist
S. Sufyan Ahmad

इस महीने आप पढ़ेंगी...

फूल और आपकी शख़्सियत	30
क्या असहाबे कहफ़ का वाक़आ साइंस से मैच करता है?	16
इमाम हसन असकरी[अ०]	22
बच्चों को अपने खिलोने ख़ुद बनाने दें	41
बिलालः एक ख़ूबसूरत हबशी गुलाम	13
गाजर की खीर	15
घर में बुजुर्गों की अहमियत	24
झूठ के नुक़सान	27
मक़सद पर ईमान	36
नौकरी-पेशा औरतों के मसले	28
एहसास....कहानी	37
नमाज़	20
क़र्ज़ुल हसना	32
रूह की तलाश	8
मेदाः गिज़ाई स्टोर	40
माँ! तू अज़ीम है...	19
वीमेन राइट्सः ग़ैरों की नज़र में	9

मेहरबान ख़ुदा के नाम से

'मरयम' का 8वाँ इश्यु आपके हांथों में है। इस महीने में हमारे ग्यारहवें इमाम हसन असकरी[अ०] की मुबारक विलादत है। दूसरे इमामों की तरह आपकी ज़िंदगी भी बहुत मुश्किलों और परेशानियों में गुज़री थी, ख़ासकर इस वजह से कि आपके यहां एक ऐसा नूरानी बच्चा आने वाला था जो आगे चलकर सारी इंसानियत को निजात देने वाला, बुरों और बुराईयों को जड़ से ख़त्म करने वाला और इस दुनिया को पूरी तरह इंसाफ़ से भरने वाला था...और यह बात अपनों को ही नहीं बल्कि ग़ैरों को भी पता चल चुकी थी। जिसकी वजह से हुकूमत की तरफ़ से आपके ऊपर बहुत सख़्त पहरा लगा दिया था. ..लेकिन ख़ुदा जो फ़ैसला कर ले उसे दुनिया की कोई ताक़त बदल नहीं सकती। हुआ भी यही...इमाम मेहदी[अ०] की विलादत हुई और फिर हालात की वजह से आपको पर्दए ग़ैब में जाना पड़ा जहाँ से आप अपने वालिद के मिशन आगे बढ़ाए हुए हैं।

ख़ुदा से दुआ है कि वह हमें सच्चे और सीधे रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए!

'मरयम' में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामंदी हो, यह ज़रूरी नही है।
'मरयम' में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कारवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और 'मरयम' में छपे लेख और तस्वीरें 'मरयम' की प्रॅापर्टी हैं।
इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले 'मरयम' से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। 'मरयम' में छपे किसी भी कंटेंट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कारवाई प्रकाशन तिथी से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी तरह की पूछताछ और कारवाई पर हम जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।
संपादक 'मरयम' के लिए आने वाले कंटेंट्स मे ज़रुरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer & publisher Nazar Abbas Rizvi printed at Imagine Grafix, 4-Valmiki Marg,Lalbagh, Lucknow and published from 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017, 9936653509
email: maryammonthly@gmail.com

लड़कियों की परवरिश की अहमियत

आज के दौर में हर ज़माने से ज़्यादा लड़कियों की परवरिश पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि वह बहुत से समाजी कामों में शरीक हैं इसलिए सही और इस्लामी परवरिश पाकर ही वह इस समाज में चैन व सुकून और इज़्ज़त व पाकीज़गी की ज़िंदगी गुज़ार सकती हैं। लड़कियों की अच्छी परवरिश करने का मतलब एक अच्छे समाज की बुनियाद रखना है।

दीनी वेल्युज़ और कैरेक्टर अच्छा बनाने के अलावा लड़कियों की परवरिश का एक मक़सद उन्हें ज़िंदगी की बहुत सी ज़िम्मेदारियां जैसे घरदारी और बच्चों की अच्छी परवरिश करने के क़ाबिल बनाना है ताकि लड़कियां बड़ी होकर ज़िंदगी के इन मैदानों में अपना असर छोड़ सकें और एक मज़बूत और अच्छा घराना और समाज बना सकें। इस परवरिश की सबसे अच्छी जगह घर है जहां मां अपनी लड़कियों को ज़िंदगी के यह हुनर सिखा सकती है क्योंकि घर में लड़की के लिए मां आइडियल होती है और वह अपनी मां की हर बात और हर काम को ग़ौर से देखती और सुनती है इसलिए मां के ज़िंदगी गुज़ारने का तरीक़ा लड़की पर भी असर डालता है और वह मां की सिखाई हुई बातों और उसके किए हुए कामों को अपनी ज़िंदगी में अप्लाई करती है।

जिस्मानी स्ट्रक्चर के एतेबार से लड़कियों की परवरिश

अगरचे औरत और मर्द पैदाईश के ऐतबार से एक जैसे हैं लेकिन इनमें कुछ जिस्मानी और नफ़्सियाती फ़र्क़ हैं जिन पर ध्यान देने की ज़रूरत है। औरत अपने जिस्मानी स्ट्रक्चर के ऐतबार से ज़्यादा मज़बूत नहीं है इसी वजह से जिन कामों में जिस्मानी ताक़त की ज़्यादा ज़रूरत होती है वह काम औरतों के लिए मुनासिब नही हैं।

इस जैसे बहुत से फ़र्क़ हैं जिनकी वजह से उनकी ज़िम्मेदारियां अलग-अलग हैं और वह इन अलग-अलग रास्तों से अपने समाज और सोसाइटी की खिदमत करते हैं। पैग़म्बरे अकरम स॰ ने इसी वजह से जब हज़रत अली अ॰ और जनाबे फ़ातिमा अ॰ के बीच काम तक़सीम किया तो घर के सारे काम जनाबे फ़ातिमा अ॰ के ज़िम्मे किए और बाहर के कामों का ज़िम्मेदार हज़रत अली को बनाया।

पैग़म्बर स॰ ने औरत और मर्द के बीच पाए जाने वाले जिस्मानी और नफ़्सियाती फ़र्क़ के ऐतबार से उन्हें ज़िम्मेदारियां दीं। इसके अलावा आपस में काम बट जाने से घर में सुकून और मुहब्बत का माहौल बना रहता है।

लड़कियों की फ़ाइनेंशल परवरिश

औरतों और लड़कियों की परवरिश का एक पहलू उनकी फ़ाइनेंशली परवरिश है। अगर लड़कियों और औरतों में फ़ाइनेंशल मेनेजमेंट की सलाहियत पाई जाती हो तो वह घरदारी की ज़िम्मेदारी अच्छी तरह निभा सकती हैं। मां ही लड़की को यह सिखा सकती है कि कैसे वह सही तरह से पैसा खर्च कर सकती है, फ़ुज़ूलख़र्ची से बच सकती है, खाना पकाने, कपड़े खरीदने और इस तरह के बहुत से कामों में उसे किस तरह सूझ-बूझ से काम लेना चाहिए जिससे पैसा बर्बाद न हो।

क़ुरआन ने लोगों की फ़ाइनेंशल परवरिश पर बहुत ध्यान दिया है और उन्हें फ़ुज़ूलख़र्ची से बचने का हुक्म दिया है। जो लोग बग़ैर ज़रूरत के और बग़ैर कुछ सोचे-समझे ख़र्च करते रहते हैं क़ुरआन ने उन्हें जहन्नमी कहा है।

लड़कियों की फ़ाइनेंशल परवरिश फ़्युचर में उन्हें अपना घर अच्छी तरह चलाने में मदद करती है। अगर लड़की अपने घर से यह तरबियत पा चुकी हो तो वह शादी के बाद अपनी ज़िंदगी अच्छी तरह गुज़ारने के साथ अपने घर वालों और ख़ासकर अपने शौहर को खुश रख सकती है लेकिन अगर बचपन से ही वह फ़ुज़ूलख़र्ची करने

वाली और अपने कपड़े, ज़ेवर और दूसरे सामान पर ज़्यादा पैसा खर्च करने वाली हो तो फ़्युचर में उसे अपनी ज़िंदगी और घर चलाने में बहुत ज़्यादा मुश्किलों को सामना करना होगा और अगर वह नए माहौल में खुद को एडजेस्ट न कर सके तो वह उस नई ज़िंदगी में फ़ेल हो जाती है जिसका असर खुद उस पर और उसकी पूरी फ़ैमिली पर पड़ता है जैसा कि बड़े घराने की लड़कियों की ज़िंदगी में यह चीज़ बहुत ज़्यादा देखने में आती है और उन्हें अपने शौहरों से बहुत सी ऐसी उम्मीदें होती हैं जिसे उनके शौहर पूरा नहीं कर पाते हैं। इस सिलसिले में हज़रत ज़ेहरा[अ०] बेहतरीन आइडियल हैं। उन्होंने अपनी शादी की रात में ही अपना शादी का जोड़ा एक ज़रूरतमंद को दे दिया। यह काम ऐसा है जिसे आपके अलावा आज तक किसी और ने अंजाम नही दिया है और न ही हर लड़की के लिए ज़रूरी है कि वह अपना शादी का जोड़ा किसी को दे लेकिन आपके काम से इतना मैसेज तो ज़रूर मिलता है कि लड़कियों का सारा ध्यान क़ीमती कपड़े और ज़ेवर पहनने पर नहीं होना चाहिए।

जज़्बात से सही फ़ाएदा उठाना

औरत में मर्द से ज़्यादा प्यार व मुहब्बत के जज़्बात पाए जाते हैं और मां की मामता की मिसाल दी जाती है। औरत की यह क्वालिटी घरदारी और बच्चों की परवरिश में बहुत अच्छा और अहम रोल अदा कर सकती है इसलिए उसकी परवरिश इस तरह होनी चाहिए कि वह अपने जज़्बात और अपनी मुहब्बत का सही इस्तेमाल कर सके।

लड़कियों का बालिग़ होना

औरत और मर्द के जिस्म में कुछ फ़र्क़ पाए जाते हैं जिसकी वजह से लड़कियां लड़कों से जल्दी बालिग़ हो जाती हैं और उन पर दीनी वाजिबात और ज़िम्मेदारियां आ जाती हैं। हो सकता है कि कुछ मां-बाप इससे बेख़बर हों और उनकी लड़की बालिग़ होने के बाद उन वाजिबात को अंजाम न दे रही हो और वह उस वक़्त ध्यान दें जब उससे बहुत सी इबादतें छूट चुकी हों। इसलिए मां की ज़िम्मेदारी है कि बालिग़ होने से पहले वह लड़कियों को इन चीज़ों के बारे में बताए जो उसे बालिग़ होने के बाद सामाना करना होगा क्योंकि मालूमात न होने की वजह से लड़कियां घबरा जाती हैं। इसलिए लड़कियों को उस वक़्त शरई मसाएल और दूसरी ज़रूरी बातें बताना ज़रूरी है। यह तरबियत उसे निजनतम की बहुत सी मुश्किलों और परेशानियों से बचा सकती है।

औरतों के कुछ रोल

औरत की ज़िंदगी में इसका एक अहम किरदार शौहर के साथ अच्छा बर्ताव है। यह किरदार समाजी और घरेलू ज़िंदगी पर बहुत असर डालता है और अगर औरत इस रोल को अच्छी तरह निभाती है तो वह घर में चैन व सुकून लाने के अलावा अच्छे बच्चों की परवरिश करके उन्हें सोसाइटी के हवाले करती है।

बीवी और शौहर की आपसी मुहब्बत घर की बुनियादों को मज़बूत बनाती है इसी वजह से खुदा ने यह मुहब्बत उनके नेचर और फितरत में डाल दी है जो एक खुशहाल घर और समाज बनाने में अहम रोल करती है।

इस्लामी रिवायात में शौहर के साथ अच्छे बर्ताव पर बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया गया है और उसे औरत का जिहाद कहा गया है।

हज़रत फ़ातिमा[अ०] की ज़िंदगी मुसलमान औरतों के लिए इस सिलसिले में भी बेहतरीन आइडियल है। हज़रत अली[अ०] ने कभी नही देखा कि उन्होंने कभी मेरी मुखालिफ़त की हो या मेरी मर्ज़ी के खिलाफ़ कोई काम अंजाम दिया हो।

मां का रोल

मां एक खूबसूरत लफ़्ज़ है जो हर मज़हब और क़ौम में मुहब्बत और क़ुर्बानी की निशानी समझा जाता है। मां अपने बच्चों के आराम के लिए हर क़िस्म के दुख-दर्द हंसी-खुशी बरदाशत करती है और मुहब्बत भरी गोद में उन्हें पालती है।

एडीटर साहब

अस्सलामु अलैकुम

मरयम मैगज़ीन का फर्स्ट ऐडीशन मैंने अपने रिश्तेदार के यहां पढ़ा था। तभी से हम इस मैगज़ीन के फ़ैन हो गए। हमने इसी मैगज़ीन से हर बार नई मालुमात हासिल कीं और हर बढ़ते हूए कदम पर अपने अंदर एक नए बदलाव को मलसूस किया जो हमें बहुत ख़ुशी देता है। हम अपनी सहेली की तरफ से आपका शुक्रिया अदा करते हैं कि आपने इस नेक काम की शुरूआत दिल को छू लेने वाले अंदाज़ से की है।

अल्लाह आपको कामयाबी अता फरमाए।

तहसीन फ़ातिमा, लखनऊ

एडीटर साहब

अस्सलामु अलैकुम

ख़ुदा आप सबकी तौफ़ीक़ात में इज़ाफ़ा फ़रमाए।

मरयम मैगज़ीन हर महीने पाबन्दी से पढ़ती हूँ, इसका हर इश्यू बहुत अच्छा होता है।

मैं सब बहनों से गुज़ारिश करती हूँ कि वह मरयम की मिम्बर ज़रूर बनें और इसे दूसरों तक भी पहुंचाएं।

नाज़नीन
अहमदाबाद

अस्सलमु अलैकुम

जनाब एडीटर साहब!

मार्च की मैगज़ीन मिली बहुत अच्छी लगी।

सारे आर्टिकिल अच्छे हैं, ख़ास कर ''बच्चा ना समझ क्यों पैदा होता है''।

ख़ुदा करे आप लोग इसी तरह मैगज़ीन निकालते रहें और हम लोग इसे हर महीने इसी तरह पढ़ते रहें।

हैदर अब्बास नक़वी
नौगावां सादात

मां का टाइटिल हर लड़की के लिए फ़ख़्र का सबब होता है और शादी के बाद से ही वह उस वक़्त का इंतिज़ार करती है जब उसे यह टाइटिल मिले। बच्चे के दुनिया में आने के बाद हर तरफ ख़ुशी का माहौल पैदा हो जाता है और यह बच्चा घर में बहुत से लड़ाई झगड़ों को ख़त्म करने की वजह बन जाता है।

घर वाले इस ख़ुशी के आगे बहुत सी नाराज़गियों को भुला देते हैं।

हर मुसलमान औरत को इस जगह पर भी जनाब फ़ातिमा[अ॰] की ज़िंदगी पर ध्यान देना चाहिए कि उन्होंने कितनी मुहब्बत और मेहनत के साथ अपने बच्चों की तरबियत की है।

घरदारी

घरदारी से हमारी मुराद घरेलू कामों को अच्छी तरह अंजाम देना और उनका सही मैनेजमेंट है। अच्छी घरदारी से घर की फ़िज़ा में हर तरफ़ मुहब्बत और सुकून होता है और घर जंनत का नमूना बन जाता है।

सभी लोग जानते हैं कि घर के डेकोरेशन और मेहमान नवाज़ी से लेकर घर के खर्च पर ध्यान देना वह काम है जिनमें औरतें मर्दों से ज़्यादा सलाहियत रखती हैं। अच्छी घरदारी ख़ुद-बख़ुद बच्चों की अच्छी परवरिश में मददगार होती है।

परवरिश

घर और समाज में औरत का सबसे अहम किरदार बच्चों की परवरिश है क्योंकि बच्चा इस दुनिया में आंखें खोलने के बाद सबसे मां को देखता है और उसी की गोद में पलता-बढ़ता है। बहुत सी समाजी और अख़्लाक़ी बातों को उसी से सीखता है। वह मां से ही यह सीखता है कि दूसरों के साथ कैसे रहे और उनके साथ कैसा बर्ताव रखे। मां का बच्चे के साथ किरदार उसकी पर्सनालिटी बनने में बहुत अहम रोल अदा करता है। चूंकि औरत में नर्मी और मुहब्बत ज़्यादा होती है इसलिए वह परवरिश में ज़्यादा कामयाब होती है। इसी वजह से परवरिश के स्पेशलिस्ट हमेशा औरत के इस किरदार पर बहुत ज़ोर देते हैं और उसे बहुत अहम मानते हैं।

रूह की तलाश

■ हकीम मोहम्मद सईद

हमारी ज़ात के दो हिस्से हैं: ज़ाहिरी और अंदरूनी। दूसरे लफ़्ज़ों में जिस्म और रूह। हमारी आँख जो कुछ देखती है हम उसी को हक़ीक़त समझते हैं। उसे कमज़ोर जिस्म नज़र आते हैं या फिर मज़बूत डील-डौल। हम ज़ाहिरी दुनिया ही को सब कुछ समझते हैं। ज़ाहिरी शानो शौकत और अज़मत हमारी नज़रों को चकाचौंध और हमारी सोच को इम्प्रेस करते रहते हैं। आज के दौर में यह सोचने का अंदाज़ रोज़ बरोज़ मज़बूत होता जा रहा है कि ज़ाहिरी ताक़त और पॉवर ही सब कुछ है लेकिन आपने कभी ग़ौर किया है कि इस सोच का नतीजा क्या है ? हम ज़ाहिर तौर पर तो पावरफ़ुल, ख़ुश और मुतमइन नज़र आते हैं लेकिन ऐसे हैं नहीं, आज का इंसान अंदर से बिल्कुल टूट फूट गया है। इसलिए वह ख़ुश और पॉवरफ़ुल नज़र आने के ड्रामे रचाता नज़र आता है। कहीं कान फाड़ देने वाली म्युज़िक का सहारा लेता है, कहीं तोड़-फोड़ और मारधाड़ की नुमाइश करके अपने पावरफ़ुल होने की नाकाम कोशिश में लगा रहता है। मारधाड़ और क़त्ल व ग़ारत इंसान के अंदर की तबाही की निशानी है।

हम यह बात भूल बैठते हैं कि हमारी एक और हैसियत भी है। हम जिस्म ही नहीं, रूह भी रखते हैं। यह वही रूह है कि जिसने माँ के पेट में हमें हिलना डुलना सिखाया। हमारी ताक़त सिर्फ़ जिस्म ही में नहीं, हमारे दिल और हमारी रूह में भी है। जिस्म की मज़बूती बेशक ज़िंदगी के लिए ज़रूरी है लेकिन रूह उससे कहीं ज़्यादा पावरफ़ुल होती है। यह किसी के दबाए नहीं दबती। न वह तीर व तलवार से घबराती है और न ज़ुल्म के आगे झुकती है। उसकी हालत बिल्कुल उस गेंद या बंद बोतल की सी होती है जिसे पानी में डुबोने की हर कोशिश नाकाम हो जाती है। कितने ही जतन कीजिए वह अपने आप को पानी से ऊपर ले आती है। जिस की रूह पॉवरफ़ुल होती है वह न मुश्किलों से घबराता है, न दुनियावी ताक़तों के आगे झुकता है। यह रूह ही है कि इंसान सिर्फ़ ख़ुदा से डरता है और उसके बाद दुनिया की हर ताक़त का बाग़ी हो जाता है।

हमें चाहिए कि अपनी रूहानी ताक़त को तलाश करें और उसे अच्छे अख़्लाक़ से संवारें। मुहब्बत, हमदर्दी, हिम्मत व बहादुरी बाज़ार में नही बिकती है। उसकी दुकान तो आपकी अपनी ज़ात में है, ऊँची हस्तियों के कैरेक्टर और उनकी टीचिंग्स में है। उनके कारनामों को पढ़िए। वह आपको कहीं मज़बूत पहाड़ नज़र आएंगे तो कहीं दरियाओं के दिल उनसे दहेलते नज़र आएंगे। अल्लामा इक़बाल के बक़ौल, नौजवानों की रूह जाग उठती और तरो ताज़ा हो जाती है तो उनमें ऐसी ताक़तें करवटें लेने लगती हैं कि उनको अपनी मंज़िलें आसमान में नज़र आने लगती है।

रूह की ताक़त यक़ीन बन कर मोजिज़े दिखाती है। कहीं उससे ग़ुलामी की ज़ंजीरें कटती हैं तो कहीं दरे ख़ैबर उखड़ जाता है। कहीं मुहब्बत व इंसानी दोस्ती की वह ऊँची मिसालें क़ायम होती हैं कि उन्हें देखकर गहरी ठंडक और सुकून व राहत का एहसास मिलता है। यही वह रूह है जो सोच की आज़ादी का पैग़ाम लेकर आई है और सियासी आज़ादी की हिफ़ाज़त के ताने बाने बुनती है। यही वह रूह है कि जो आज़ादी का सबक़ देती रहती है और ग़ुलामी से नफ़रत का जज़्बा जवान रखती है।

हमें चाहिए कि अपनी रूह की तलाश में लग कर उसे तलाश करें। अपनी अज़ीम ज़ात की खोज लगाएं और फिर उसे झूठे नज़रियात, छोटी-छोटी बातों, नफ़रत व अदावत के बोझ से आज़ाद कर दें। अपनी इस कोशिश में अल्लाह तआला से मदद तलब करना चाहिए, हमारी कोशिश में उसका करम भी शामिल हो जाएगा और हम हैरतअंगेज़ तौर पर ख़ुद को सही मानों में पुरसुकून व ताक़तवर महसूस करेंगे। नफ़रत की जगह मुहब्बत ले लेगी। हमारे पक्के इरादे व हिम्मत से हमारी कम हिम्मती हार जाएगी। ज़ेहन के बन्द दरीचे खुल जाएंगे और फिर उसमें मुहब्बत व ख़ुलूस के झोंके आने लगेंगे, दुनिया और दुनिया वालों के बारे में हमारी सोच बदल जाएगी। हम ख़ुद को नफ़रतों और कुदूरतों से आज़ाद पाएंगे। ख़ुदा की ज़ात से हमारा तअल्लुक़ गहरा होता चला जाएगा, ज़िंदगी की अंधेरों और नफ़रतों के कांटों और दुश्मनी के रोड़ों से पटी ज़िंदगी रौशन, साफ़ और बराबर हो जाएगी। अच्छे ख़्यालात के करिश्मे होने लगेंगे। यह उसी वक़्त हो सकता है कि जब हम अपने मन के बंद किवाड़ खोलें और ख़ुदा की ज़ात को तलाश करें। इस इंक़ेलाब के बाद हम हर मुश्किल, हर परेशानी और हर बला से आसानी से मुक़ाबला कर लेंगे। ●

इस्लाम में वीमेन राइट्स ग़ैरों की नज़र में

इस्लाम इस दुनिया में उस वक़्त आया है जब इंसानियत दम तोड़ रही थी, इंसानी ज़ुल्म पर ज़ुल्म की तारीख़ भी आंसू बहा रही थी और दुनिया से इंसाफ़ का क़रीब-क़रीब ख़ात्मा हो चुका था। इस्लाम ने ऐसे हालात में इंसाफ़ और बराबरी का नारा लगाया। काले-गोरे, आक़ा-ग़ुलाम और ऊँच-नींच के टीलों से भरे इंसानियत के चटयल मैदान में इंसाफ़, बराबरी और मुहब्बत के फूल खिलाकर हर तरफ़ गुलशन बना दिया।

जो औरत इस ज़मीन पर जानवरों बल्कि जानवरों से भी ज़्यादा बेक़ीमत और मज़लूम थी, उसको इस्लाम ने ज़िल्लत और हिक़ारत के अंधेरों से ऊपर उठाकर उस ऊँचाई पर लाकर खड़ा कर दिया जहां से वह सर उठाके जी सकती है।

उसे ऐसे-ऐसे हक़ अता किए जिनका इस्लाम से पहले तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता था मगर आज हर तरफ़ कहा ये जा रहा है कि इस्लाम ने औरतों के साथ इंसाफ़ और बराबरी का ख़्याल नहीं रखा। हांलाकि अगर देखा जाए तो यह बात बिल्कुल साफ़ है कि औरत क्योंकि इंसानियत की ज़ीनत है, इसलिए इस्लाम ने बाविक़ार तरीक़े से उसे उन सारे समाजी हक़ों से नवाज़ा है जिनकी वह मुस्तहक़ थी। इस्लाम ने औरत को घर की मलिका बनाया है, उसे अपनी जायदाद और माल-दौलत रखने का हक़ दिया है, शौहर से अनबन की सूरत में उसे उससे अलग होने की छूट दी है, विरासत में उसका हिस्सा तय किया है, उसे समाज में एक इज़्ज़तदार हस्ती बताया है और उसके सारे जाएज़ क़ानूनी हक़ों की तरफ़ इशारा किया है। जितने हक़ इस्लाम ने औरतों को दिए हैं, उतने किसी दूसरे मज़हब या स्कूल ऑफ़ थॉट ने बिल्कुल नहीं दिए हैं।

दूसरी तरफ़ अगर आज हम आज़ादी और बराबरी के नारों और उनके रिज़ल्ट पर ग़ौर करें तो इन नारों ने इस बेचारी को इसके सिवा कुछ नहीं दिया कि वह ऑफ़िसेस में क्लर्क या ग़ैर मर्दों की प्राइवेट सेक्रेट्री बने, बिज़िनेस चमकाने के लिए सेल्स गर्ल बने और अपने एक-एक जिस्मानी हिस्से को आम बाज़ार में रुसवा करके कस्टमर्स को नज़ारों की दावत दे, इन सबका नतीजा क्या निकला?! तलाक़ के गिराफ़ में ज़बरदस्त ग्रोथ, नाजाएज़ बच्चों की तादाद का बहुत ज़्यादा बढ़ना, एडस् की महामारी यानी सारी समाजी और अख़्लाक़ी ख़राबियां इसी एक 'आज़ादी और बराबरी' के नारे की वजह से सामने आई हैं।

इस्लाम नें औरतों को कितनी तरक़्क़ी दी और कितना बुलंद मुक़ाम दिया, इसका अंदाज़ा क़ुरआने करीम की अनगिनत आयतों और बेशुमार हदीसों से अच्छी तरह लगाया जा सकता है। इस्लाम ने पूरी दुनिया के सामने वीमेन राइट्स का ऐसा हसीन तसव्वुर पेश किया और औरतों के हक़ में वह नज़रिए अपनाए कि अपने तो अपने बहुत से ग़ैर भी इस पॉलीसी पर वाह-वाह करते नज़र आए और यह कहने पर मजबूर हो गए कि इस्लाम ही दरअस्ल वीमेन राइट्स का सच्चा अलमबरदार है। आज अगर वेस्टर्न कल्चर या उसपर आंख बंद करके अमल करने वाले इस्लाम को क्रिटिसाइज़ करते हैं और इस्लाम को वीमेन राइट्स के रास्ते में रुकावट मानते हैं तो यह हक़ीक़त से नज़र फेरने के अलावा और कुछ नहीं है।

आज भी बहुत से नॉन-मुस्लिम थिंकर्स और वेस्टर्न फ़िलास्फ़र्स हक़ीक़त को मानते हुए इस्लाम ही को वीमेन राइट्स का अस्ली

UN WOMEN

अलमबरदार समझते हैं। इस बारे में ई ब्लाईडन लिखते हैं, "सच्चा और अस्ली इस्लाम जो मुहम्मद[स॰] लेकर आए, उसने औरतों को वह हक़ अता किए जो इससे पहले उन्हें पूरी इन्सानी हिस्ट्री में कभी नसीब नहीं हुए थे।"

डब्लू लाइटर लिखते हैं, "औरत को जो इज़्ज़त मुहम्मद साहब ने दी है वह वेस्टर्न सोसाइटी और दूसरे मज़हबों ने उसे कभी नहीं दी।"

ई. डरमंघम इस बारे में लिखते हैं, "इससे कौन इंकार कर सकता है कि मुहम्मद साहब की टीचिंग्स ने अरबों की ज़िंदगी बदल दी, उनसे पहले औरतों को कभी वह एहतेराम नहीं मिला था जो मुहम्मद साहब की टीचिंग्स के बाद मिला। जिस्म फ़रोशी, वक़्ती शादियां और आज़ादाना मुहब्बत पर रोक लगा दी गई, लौंडियों और कनीज़ों को जिन्हें इससे पहले सिर्फ़ अपने आक़ाओं की दिल्लगी का सामान समझा जाता था, उन्हें भी उनके हक़ दिए गए।"

डब्लू. डब्लू. केश कहते हैं, "इस्लाम ने औरतों को पहली बार इन्सानी हक़ दिए और उन्हें तलाक़ का हक़ दिया।"

वीमेन राइट्स और उसके कुछ पहलू

आमतौर पर औरतों को ज़िन्दगी में तीन अहम ज़मानों से गुज़रना पड़ता है:-

1- पैदाईश से शादी तक
2- शादी-शुदा ज़िंदगी
3- शौहर के बाद की ज़िंदगी

1- पैदाईश से शादी तक

इस पहले ज़माने में यह बात साफ़ है कि शादी-शुदा ज़िंदगी तक जब ही पहुंचा जा सकता है जब औरत को औरत का दर्जा तो हासिल हो जाए मगर इस्लाम से पहले इंसान के अंदर ज़ुल्म करने का माद्दा कूट-कूट कर भरा हुआ था। इसीलिए औरतों के साथ ग़ुलामों से भी बद्तर सुलूक किया जाता था। तीन साल, पांच साल की बच्चियों को सिर्फ़ इसलिए मिट्टी में दबा दिया जाता था कि कहीं बाप की नाक न कट जाए लेकिन इस्लाम नें क़ुरआनी हुक्म के ज़रिए लड़कियों को ज़िन्दा दफ़नाने के इस फ़ितने को ही हमेशा-हमेशा के लिए दफ़्न कर दिया और डूबती हुई इंसानियत को ज़िंदगी और हव्वा की बेटी को जीने का हक़ अता कर दिया।

आईरीना मेडमिक्स ने इस्लाम और इस्लाम से पहले औरत की ज़िंदगी के बारे में लिखा है, "मुहम्मद साहब ने इन चीज़ों को अपनी पसंदीदा चीज़ें बताया है: नमाज़, रोज़ा, ख़ुशबू और औरत। वह औरत का बहुत एहतेराम करते थे, समाज में जहां मर्द अपनी बेटियों की पैदाईश के बाद उन्हें ज़िन्दा दफ़्न कर दिया करते थे, मुहम्मद[स॰] ने औरत को जीने का हक़ दिया।"

जनरल गल्प पाशा ने रसूले इस्लाम[स॰] की सीरत पर एक किताब लिखी है जिसमें वह विरासत के बारे में इस्लामी नज़रिए की तारीफ़ करते हैं और फिर आगे लिखते हैं, "हुज़ूर[स॰] ने लड़कियों को ज़िंदा दफ़न करने का पूरी तरह से ख़ातमा कर दिया था।"

रेवेंड जी. एम. राडवेल एक कट्टर ईसाई हैं मगर हक़ को मानते हुए वह भी अपने आपको ये कहने से नहीं रोक सके कि क़ुरआन ने ख़ानाबदोशों की दुनिया बदल डाली, लड़कियों को ज़िन्दा दफ़नाने को ख़त्म कर दिया और शादी की तादाद को बांध के इंसानियत पर एक बहुत बड़ा एहसान कर दिया। क़ुरआनी आयतों को सुनकर सीधे साधे ख़ानाबदोश ऐसे बदल गए थे जैसे किसी ने उन पर जादू कर दिया हो। औलाद को ज़िंदा दफ़नाने को ख़त्म करना, बीवियों की तादाद घटाकर एक हद तय करना वग़ैरा वह चीज़ें हैं जो औरतों के लिए बेशक बरकतें लेकर आई थीं।"

2-शादी शुदा ज़िंदगी

ज़िंदगी के इस हिस्से में औरत को बहुत कुछ नर्म-गर्म सहना पड़ता है। अगर कभी शौहर की जिस्मानी ज़रूरत बीवी से पूरी नहीं हो पाती तो वह दूसरे रास्ते तलाश करता है, अख़्लाक़ और तहज़ीब की हदों को पार करके ग़ैर औरतों से नाजाएज़ रिश्ते बना लेता है और फिर मियां बीवी की ज़िंदगी अजीरन बन कर रह जाती है। इस्लाम ने इन्ही ख़राबियों और नुक़्सान से बचाव के लिए कई शादियों की इजाज़त दी है। इस्लाम के ख़िलाफ़ प्रोपेगंडा करने वाले बड़े ज़ोर-शोर से कहते हैं कि शादी की तादाद में औरतों का एक्सप्लॉयटेशन होता है, उनका हक़ बंट जाता है और सौतन की शक्ल में तरह-तरह की ज़ेहनी, जज़बाती और समाजी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।

हक़ीक़त ये है कि इस्लाम से पहले भी एक से ज़्यादा शादी की रस्म रही है और उसके बाद भी जारी है बल्कि इस्लाम ने तो अपने मानने वालों के लिए एक हद तय की है।

आज के ज़माने में भी कई शादियों का रिवाज पाया जाता है, फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि इस्लाम में क़ानूनी और नेचुरल तौर पर इसके बारे में बात की है और ग़ैरों ने जानवरों की तरह...आज हमारे समाज में जो कुछ हो रहा है उसे हम सब अच्छी तरह जानते हैं। अगर कोई ज़हर को शकर कह दे तो क्या उसकी हक़ीक़त बदल जाएगी या वह शकर बन जाएगा? नहीं! बल्कि धोखाधड़ी और फ़रेब का इल्ज़ाम और ज़ियादा लग जाएगा।

यही नज़रिया मशहूर थियोसोफ़िस्ट, नीट बेसेंट का भी है जो छुपी हुई शादी पर रौशनी डालते हुए यूरोप की अख़लाक़ी तौर पर गिरी हुई हालत के बारे में लिखती हैं, "हमारे कल्चर में ज़ाहिरी और नुमाइशी तौर पर तो एक ही शादी दिखती है मगर हक़ीक़त ये है कि हम एक नहीं बल्कि कई शादियों के क़ायल हैं, बात सिर्फ़ इतनी सी है कि हम कई शादियां तो करते हैं मगर किसी ज़िम्मेदारी के बग़ैर। जब अपनी औरत से मर्द का दिल भर जाता है तो उसे वह निकाल बाहर करता है। जब हम बाज़ारों में मुसीबत की मारी औरतों को देखते हैं जो यूरोप के शहरों में रात के वक़्त सड़कों पर भीड़ लगाए हुए चलती हैं तो हमें यक़ीनन यह महसूस करना पड़ता है कि हमें शादी की तादाद के सिलसिले में इस्लाम पर ऐतराज़ करने का कोई हक़ नहीं है।"

इस्लामी शादी की तादाद की अच्छाईयां और फ़ाएदे और

करके दिखाइए कहिए मत!

बच्चा अपनी पैदाइश के रोज़ ही से परवरिश के क़ाबिल होता है। माँ-बाप ध्यान दें या न दें, वह पल-पल परवरिश पाता है और एक ख़ास मिज़ाज में ढलता चला जाता है। बच्चा परवरिश के लिए इस बात का इन्तिज़ार नहीं करता कि माँ-बाप उसे किसी काम का हुक्म दें या किसी चीज़ से रोकें। बच्चे का नाज़ुक और हस्सास ज़ेहन पहले दिन ही से एक कैमरे की तरह सारी चीज़ों की फ़िल्म बनाने लगता है। इसी फ़िल्म के एतेबार से उसकी शख़्सियत बनती है और वह परवरिश पाता है। 5.6 साल के बच्चे की बाक़ाएदा एक शख़्सियत होती है जो एक ख़ास रंग में ढल चुका होता है और जो कुछ उसे बनना होता है बन चुकता है। अच्छाई या बुराई का आदी हो चुकता है इसलिए बाद की परवरिश बहुत मुश्किल और कम असर वाली होती है। बच्चा तो कहते ही उसको हैं जो दूसरों को देखकर काम करे, वह अपने माँ-बाप और आस-पास रहने वाले दूसरे लोगों के कैरेक्टर, अख़लाक़, कामों और रहने-सहने के अंदाज़ को देखता है और उसी तरह करने लगता है। वह माँ-बाप को एहतेराम की नज़र से देखता है और उन्हीं की ज़िंदगी और कामों को अच्छाई और बुराई का पैमाना मान लेता है और फिर उसी के मुताबिक़ अमल करता है। पैदाइशी तौर पर तो बच्चे का वुजूद किसी सांचे में नहीं ढला होता, वह अपने माँ-बाप को नमूना समझ कर उनके एतेबार से अपने आपको ढालता है। वह उनके कैरेक्टर को देखता है, उनकी बातों और नसीहतों पर ध्यान नहीं देता और अगर उनका कैरेक्टर, उनकी बातों और नसीहतों से मैच न करता हो तो वह कैरेक्टर को अपना लेता है।

बेटी अपनी माँ को देखती है और उस से ज़िंदगी के आदाब, शौहरदारी, घरदारी और बच्चों की परवरिश का सलीक़ा सीखती है और बाप को देख के मर्दों को पहचानती है। बेटा अपने बाप की ज़िंदगी से सबक़ लेता है। उसको देखकर वह सीखता है कि बीवी और बच्चों से कैसा सुलूक करना चाहिए और अपनी माँ की ज़िंदगी को देखकर औरतों को पहचानता है और अपनी आने वाली ज़िंदगी के लिए उसी को देखकर मन्सूबे बनाता है।

इसलिए समझदार लोगों को पहले अपना सुधार करना चाहिए। अगर उनके आमाल, कैरेक्टर और अख़लाक़ ऐबदार हैं तो उनका सुधार करें और उनकी जगह नेक अख़लाक़ को अपनाएं।

माँ-बाप को सोचना चाहिए कि वह किस तरह का बच्चा समाज को देना चाहते हैं। अगर उन्हें ये पसंद है कि उनका बच्चा ख़ुशअख़लाक़, मेहरबान, हमदर्द, दीनदार, शरीफ़, बहादुर, अपने फ़र्ज़ को पहचानने वाला हो तो ख़ुद उन्हें भी ऐसा ही होना चाहिए ताकि वह बच्चे के लिए आइडियल बन सकें। जिस माँ की ख़्वाहिश हो कि उसकी बेटी अपनी ज़िम्मेदारियों को पहचानने वाली, ख़ुशअख़लाक़, मेहरबान, समझदार, शौहर की वफ़ादार, बाअदब, हर तरह के हालात में गुज़र-बसर कर लेने वाली और अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारने वाली हो तो ख़ुद उसे भी ऐसा होना चाहिए ताकि उसकी बेटी उसे देखकर अपनी ज़िन्दगी को संवार सके।

अगर माँ बदअख़लाक़, बेअदब, सुस्त, बेमुरव्वत, गंदी-संदी, दूसरों से ज़्यादा उम्मीदें बाँधने वाली और बहाने बनाने वाली होगी तो वह सिर्फ़ नसीहतों से एक अच्छी बेटी परवान नहीं चढ़ा सकती।

एक बार पैग़म्बरे अकरम[अ॰] ने अबूज़र से फ़रमाया, "जब कोई शख़्स ख़ुद नेक हो जाता है तो अल्लाह तआला उसके नेक हो जाने से उसकी औलाद और उसकी औलाद की औलाद को भी नेक बना देता है।

हज़रत अली[अ॰] फ़रमाते हैं, "जो दूसरों का लीडर बनना चाहे उसे चाहिए कि पहले वह अपनी इस्लाह करे। फिर दूसरों के सुधार के लिए उठे और दूसरों को ज़बान से अदब सिखाने से पहले अपने किरदार से अदब सिखाए। जो अपने आप को अदब सिखाता है वह उस शख़्स से ज़्यादा इज़्ज़त का हक़दार है जो दूसरों को अदब सिखाता है।"

यूरोपी कल्चर की शादी की तादाद के नुक़्सान पर रौशनी डालते हुए आगे लिखती हैं, ''औरत के लिए यह कहीं ज़्यादा अच्छी और ख़ुशी की बात है कि वह इस्लामी शादी की तादाद के सिस्टम के हिसाब से ज़िंदगी गुज़ारे। उसका रिश्ता एक मर्द से हो, हलाल बच्चा उसकी गोद में हो और वह इज़्ज़त के साथ जी रही हो। इसके मुक़ाबले में यूरोपियन शादी का हाल ये है कि उसकी इज़्ज़त के साथ खेला जाता है, वह सड़कों पर निकाल बाहर कर दी जाती है, उसके पास कोई ठिकाना नहीं होता, कोई उसकी फ़िक्र करने वाला नहीं होता, उसकी रातें इस तरह गुज़रती हैं कि वह किसी भी रास्ता चलने वाले का शिकार बन सकती है..।''

डाक्टर मोसयोलोबिन लिखते हैं, ''मुसलमानों की जाएज़ कई शादियां यूरोप की नाजाएज़ कई शादियों से हज़ार गुना अच्छी हैं। इस्लाम को जिस ग़लत तरीक़े से पेश किया जाता है उसकी यूरोप के मौजूदा समाज के आगे कोई हक़ीक़त नहीं है। सच्ची बात ये है कि यूरोपियन मुल्कों में पाकीज़गी और पाकदामनी कहीं नज़र ही नहीं आती है।''

3-शौहर के बाद की ज़िंदगी

इस्लाम से पहले होता यह था कि शादी से पहले औरत की ज़िम्मेदारी बाप के सर होती थी और शादी के बाद शौहर के ज़िम्मे। विरासत में बाप से उसे कोई हिस्सा नहीं मिलता था। इसलिए हमारे यहां जहेज़ का चलन शुरू हो गया कि मां-बाप से विरासत तो नहीं मिलती इसलिए जहेज़ में जो कुछ दिया जा सकता हो, दे दें। अगर शादी के बाद इत्तेफ़ाक़ से शौहर का इन्तेक़ाल औरत से पहले हो जाए तो औरत को शौहर की जायदाद से फूटी कौड़ी भी नहीं मिलती थी बल्कि सारा माल ग़ैरों का हो जाता था। जिसका नतीजा सती की रस्म थी। मगर इस्लाम ने आते ही उस रस्म को ही ख़त्म कर दिया जिसकी वजह से औरत जीते जी मुर्दा बनकर रह जाती थी। क़ुरआने करीम में अल्लाह ने मीरास की आयत के ज़रिए उसका हिस्सा बयान करके इस फ़ितने को भी ख़त्म कर दिया। इस्लाम की इन्हीं ख़ूबियों का सराहते हुए फ़्रांसीसी स्कॉलर डाक्टर गस्तावली लिखते हैं, ''इस्लाम ने औरतों की कल्चरल हालत पर बहुत फ़ाएदेमंद और गहरा असर डाला। उसे ज़िल्लत के बजाए इज़्ज़त से नवाज़ा और तक़रीबन हर मैदान में उसे आगे बढ़ने के मौक़े भी दिए। क़ुरआन की 'विरासत और वीमेन राइट्स की थ्योरी' यूरोप के 'विरासत वाले क़ानूनों'' और 'वीमेन राइट्स' के मुक़ाबले में बहुत ज़्यादा फ़ाएदेमंद और औरतों के नेचर से बहुत ज़्यादा मैच करती है।''

प्रोफ़ेसर डी. एस. मार्गोलियोथ एक यूरोपी राइटर हैं जो इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम[स०] पर ऐतराज़ और इल्ज़ाम का कोई मौक़ा हाथ से जाने नहीं देते मगर इस मौक़े पर वह अपने ज़मीर की आवाज़ को दबा नहीं सके और कह बैठे, ''जिहालत के ज़माने वाले अरब तो एक तरफ़ रहे, ईसाईयत और यहूदियत में भी यह तसव्वुर नहीं किया जा सकता कि औरत की भी कोई हैसियत हो सकती है और जायदाद की मालिक हो सकती है। यह मज़हब इसकी इजाज़त नहीं देते थे कि औरत भी मर्दों की तरह माली ऐतबार से ख़ुशहाल हो सके। औरतों की हैसियत इन मज़हबों और समाजों में कनीज़ों की सी थी जो मर्द के रहमो-करम पर ज़िन्दगी बसर करती थीं। मुहम्मद[स०] ने औरत को आज़ादी अता की, ख़ुदमुख़्तारी दी और कांफ़िडेंस के साथ जीने का हक़ दिया।''

आख़िरी बात

औरत क्योंकि घर की ज़ीनत है इसलिए इस ज़ीनत को बुरी नज़र से बचाए रखने के लिए इस्लाम ने कुछ हदें बना दी हैं लेकिन ऐसा नहीं है कि इन पाबन्दियों से औरत को कोई नुक़्सान पहुंचा हो या उसे किसी परेशानी का सामना करना पड़ा हो बल्कि इस्लाम ने जो कुछ पाबंदियां लगाई हैं वह तो उसकी शर्मो-हया, ग़ैरत और विक़ार का तक़ाज़ा है। इस बारे में हेमिल्टन लिखते हैं, ''इस्लाम के एहकाम औरतों के बारे में बहुत साफ़ हैं। उसने औरतों को हर उस चीज़ से बचाने की कोशिश की है जो औरतों को तकलीफ़ पहुंचाए और उनके दामन पर धब्बा लगाए। इस्लाम में पर्दे का दायरा इतना तंग नहीं है जितना कुछ लोग समझते हैं बल्कि वह तो उसकी हया, ग़ैरत और विक़ार की डिमांड है।''

सर जान बेग्ट लिखते हैं, ''सच ये है कि मुहम्मद साहब ने औरतों पर जो पाबन्दियां लगाई हैं वह बहुत सख़्त नहीं है बल्कि इन पाबंदियों में औरतों के लिए तो बहुत आसानियां हैं।''

ग़ैरों के हक़ीक़त को मान लेने के बाद ख़ुद बख़ुद दिल और दिमाग़ में क़ुरआन की यह आयत धड़कन बनकर धड़कने लगती है कि यक़ीनन अल्लाह के नज़दीक बहतरीन दीन इस्लाम है।

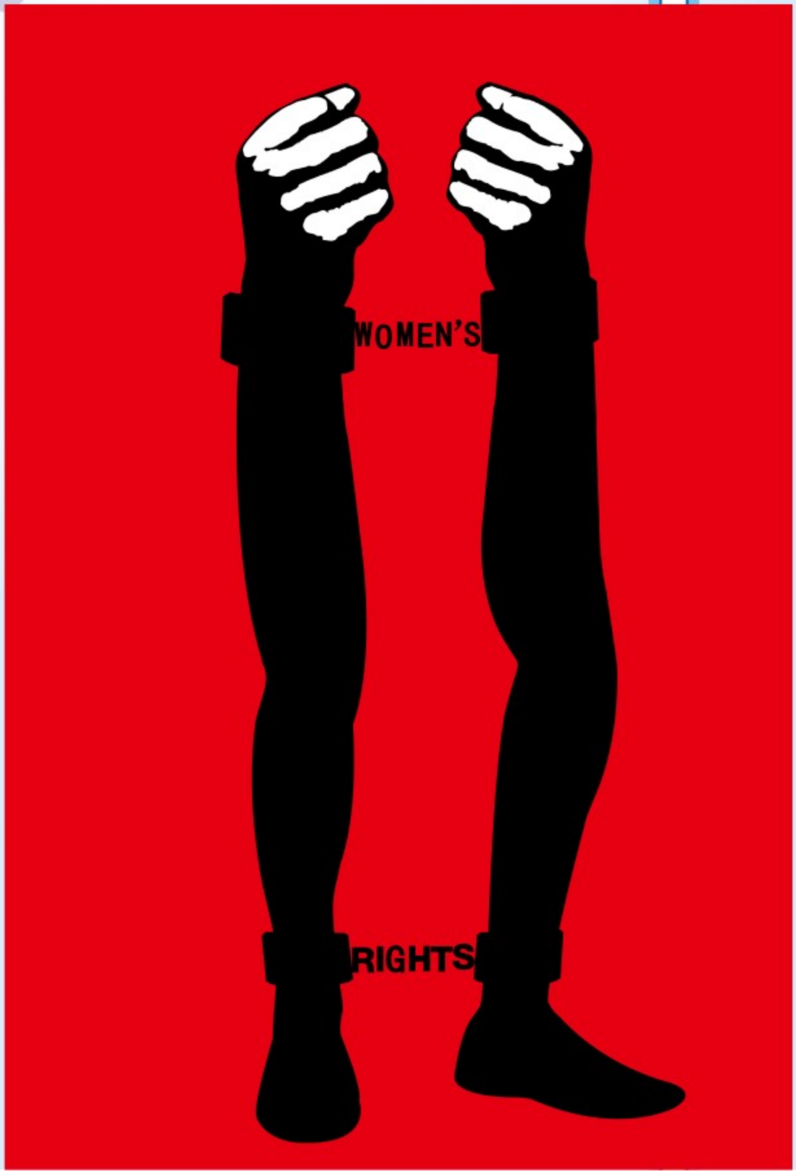

बिलाल

एक खूबसूरत हबशी गुलाम

बिलाल उन पहले अफ़्रीकी मुसलमानों में से एक हैं जिनका नाम सारी दुनिया के मुसलमान बड़े प्यार और मुहब्बत से लेते हैं। बिलाल की पैदाईश पश्चिमी अरब के पहाड़ी इलाक़ों के एक गांव में हुई थी। उनके वालिद का नाम रिबाह और माँ का हमामा था। यह लोग इथोपिया से ग़ुलाम बनाकर अरब में लाये गये थे। यह दोनों कुरैश ख़ानदान के एक अमीर आदमी उमय्या बिन ख़लफ़ के ग़ुलाम थे। इस तरह बिलाल की पैदाईश इसी ग़ुलामी वाले माहौल में हुई और जब कुछ बड़े हुये तो घर की सफ़ाई सुथराई का काम उन्हें भी सौपं दिया गया।

बिलाल का मालिक उमय्या बिन ख़लफ़ मूसलमान नहीं था इसलिये बिलाल के आस-पास का पूरा माहौल ग़ैर इस्लामी था। जब बिलाल चालीस साल के हुये तो यह वह वक़्त था जब रसूले इस्लाम[स॰] नये दीन, इस्लाम का पैग़ाम लोगों तक पहुँचा रहे थे और लोगों को एक सच्चे ख़ुदा पर ईमान लाने की दावत दे रहे थे। दूसरे और बहुत से लोगो की तरह बिलाल पर भी इस्लाम के इस पैग़ाम का गहरा असर पड़ा क्योंकि इस मज़हब में अमीर-ग़रीब, काले-गोरे, आक़ा-ग़ुलाम और अरब-अजम का कोई फ़र्क नहीं था। जब उमय्या बिन ख़लफ़ और उसकी फ़ैमिली के लोग बुतों की पूजा करने चले जाया करते थे तो बिलाल घर ही पर इस्लाम के बताये हुये रास्ते पर चलकर ख़ुदा वन्दे आलम की इबादत करते रहते थे।

मक्के में क़ुरैश क़बीला एक बहुत बड़ा और मज़बूत क़बीला था लेकिन इस्लाम के शुरूआती दिनों में यह क़बीला भी इस्लाम का मुख़ालिफ़ था। इस क़बीले के लोग रसूले इस्लाम के पैग़ाम और उनकी बातों के ही मुखालिफ़ नहीं थे बल्कि ख़ुद रसूल इस्लाम[स॰] को भी पसन्द नहीं करते थे। जब भी कोई आदमी इस्लाम क़ुबुल करता था तो यह लोग उसको बहुत परेशान करते और सताते थे।

आख़िरकार एक दिन उमय्या बिन ख़लफ़ को बिलाल के इस्लाम लाने का पता चल ही गया। उसने बिलाल को बुलाया और कहा, ''ऐ बिलाल! क्या तुम इबादत करते हो और मौहम्मद के ख़ुदा को सजदा करते हो?''

बिलाल बिल्कुल नहीं डरे और बड़े आराम से कहा, ''जी आक़ा, मैं सच्चे और एक ख़ुदा की इबादत करता हूँ।''

इस जवाब ने उमय्या को ग़ुस्से से पागल कर दिया और उसने बिलाल को अपनी लातों और घूसों पर रख लिया। उसके बाद उन्हें रस्सियों से जकड़कर मक्के की जलती हुई ज़मीन पर दोपहर तक लिटाकर छोड़ दिया। दोपहर के बाद जब उमय्या को लगा कि अब बिलाल अपने ख़ुदा से तौबा कर चुका होगा तो वह बिलाल के पास आया और उनसे कहा कि चलो अपने ख़ुदा का पीछा छोड़ो और हमारे अज़ीम ख़ुदाओं ''लात और उ़ज़्ज़ा'' के नाम पर सर झुकाओ।

लेकिन बिलाल अपने नए अक़ीदे पर दिल की गहराईयों से ईमान ला चुके थे। उन्होने बुतों को सजदा करने से इन्कार कर दिया और ''अहद-अहद'' चिल्लाने लगे यानि ''एक ख़ुदा-एक ख़ुदा''।

बिलाल पर ज़ुल्म और ज़्यादती और ज़्यादा बढ़ा दी गई। लोहे की गर्म गर्म छड़ों से उनके ज़ख़्मी बदन को गोदा जाने लगा। मगर बिलाल थे कि अपने आक़ा की बात मानने को बिल्कुल तैयार नहीं थे।

एक दिन बिलाल को अरब की तपती हुई रेत पर रस्सियों से जकड़कर लिटा दिया गया और उसके बाद एक बहुत भारी और बड़ा पत्थर उनके सीने पर रख दिया गया। बिलाल से अब न गर्मी बर्दाश्त हो रही थी और न उस पत्थर का बोझ। अब वह बहुत कमज़ोर भी हो गये थे। इतनी बुरी हालत थी उस पर बिलाल को पानी भी नहीं दिया जा रहा था। गर्मी प्यास और बोझ से बिलाल को मौत अपने सामने खड़ी साफ़ दिखाई दे रही थी।

आख़िरकार बिलाल बेहोश हो गए। जब दिन ढला और गर्मी कुछ कम हुई तो बिलाल होश में आये। आंख खुली तो देखा कि वह पत्थर अब उनके सीने पर नहीं है। बिलाल को बहुत ताज्जुब हुआ कि आखिर किसने उनको इस तकलीफ़ से निजात दी है। ज़रा कुछ और होश आया तो रसूले इस्लाम हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा[स॰] का मुस्कुराता हुआ चेहरा अपने सामने देखा।

रसूले इस्लाम[स॰] ने बिलाल पर होने वाले इस ज़ुल्मो सितम के बारे में सुन लिया था और अब अपनी आंखो से देख भी लिया था। रसूल[स॰] को यह सब देखकर बेहद तकलीफ़ हुई। आपने अपने एक सहाबी से कहा कि जाओ और जाकर बिलाल को उसके मालिक से ख़रीद लाओ और इस तरह बिलाल को ख़रीद कर रसूले इस्लाम[स॰] के सामने ले जाया गया और आपने बिलाल को आज़ाद कर दिया। सिर्फ़ बिलाल को ही नहीं बल्कि रसूल[स॰]

ने ऐसे ही दूसरे बहुत से मुसलमानों को ख़रीद कर आज़ाद कराया था। आपका सख़्त हुक्म था कि ग़ुलामों और कनीज़ो के साथ बिल्कुल वैसा ही इन्सानी और अख़्लाक़ी बरताव होना चाहिये जैसा दूसरे आम लोगों के साथ होता है यहां तक कि अपने अख़्लाक़ और किरदार से भी ग़ुलामों के साथ अच्छा बरताव करके लागों के लिये नमूना पेश करते थे।

बिलाल जब पहली बार रसूले इस्लाम^{स०} के सामने आये थे तो उन्होंने अपनी मादरी ज़बान में एक शेर के ज़रिये रसूल^{स०} की तारीफ़ की थी। रसूले अकरम^{स०} ने हस्सान बिन साबित से कहा कि इस शेर का अरबी में तरजुमा करके सबको सुनाओ। हस्सान ने तरजुमा किया और कहा:

''जब हमारे यहां अच्छाईयों का ज़िक्र आता है तो आपके किरदार को अच्छाईयों के नमूने के तौर पर पेश किया जाता है।''

अफ़्रीक़ी ग़ुलामों में से जितने लोग भी मुसलमान हुये उन में बिलाल सबसे पहले इस्लाम लाने वाले थे। अल्लाह पर बिलाल का ईमान बहुत गहरा और रसूले इस्लाम^{स०} से मौहब्बत दिल में कूट कूट कर भरी हुई थी। बिलाल का किरदार भी बहुत पाक साफ़ था। जल्दी ही वह वक़्त आया कि रसूले इस्लाम^{स०} के साथ दूसरे सारे मुसलमान भी उनकी बहुत इज़्ज़त और उनसे बहुत मौहब्बत करने लगे।

रसूल^{स०} को बिलाल का लेहजा भी बहुत अच्छा लगता था और इसीलिए आपने उनको इस्लाम का पहला मुअज़्ज़िन भी बना दिया था।

बिलाल सारी ज़िंदगी रसूल^{स०} के सच्चे और क़रीबी सहाबी रहे और हर-हर जगह आपके साथ रहे जब रसूले अकरम^{स०} की वफ़ात हुई तो बिलाल का दिल पाश-पाश हो गया और उनपर ग़मों का एक पहाड़ टूट पड़ा। उसके बाद लोगों ने बिलाल को हमेशा ग़मज़दा और ग़मगीन ही देखा।

जिस वक़्त रसूल^{स०} मक्के को छोड़ कर हमेशा के लिए मदीने आ गये थे, बिलाल भी आपके साथ साथ चले आये थे लेकिन आपकी वफ़ात के बाद बिलाल को मदीने में रहना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। आख़िर में उन्होंने अपने दुख भरे दिल से अज़ान देना भी बन्द कर दिया और एक दिन मदीने को हमेशा-हमेशा के लिये छोड़कर शाम की तरफ़ चले गये और वहीं बस गये। 8-10 साल वहां रहने के बाद उनका इन्तिक़ाल हो गया। आज भी शाम में मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में उनकी क़ब्र मौजूद है जहां लोग अक़ीदत से उनको सलाम करते हैं।

एक माँ की 10 नसीहतें

अरब की एक मशहूर आलिमा और अदीबा की दस वसीयतें जो उन्होंने अपनी बेटी के लिए की थीं:

1- मेरी प्यारी बेटी! मेरी आंखों की ठंडक, शौहर के घर जाकर क़िनाअत वाली ज़िंदगी गुज़ारने का एहतेमाम करना। जो दाल-रोटी मिले उस पर राज़ी रहना, जो रूखी-सूखी शौहर की ख़ुशी के साथ मिल जाए वह उस मुर्ग़ पुलाव से बेहतर है जो तुम्हारे इसरार करने पर उसने नाराज़गी से दिया हो।

2- मेरी प्यारी बेटी! इस बात का ख़्याल रखना कि अपने शौहर की बात को हमेशा ध्यान से सुनना, उसको अहमियत देना और हर हाल में उनकी बात पर अमल करने की कोशिश करना इस तरह तुम उनके दिल में जगह बना लोगी।

3- मेरी प्यारी बेटी! अपनी ख़ूबसूरती का ऐसा ख़्याल रखना कि जब वह तुझे निगाह भर के देखे तो अपने इंतेख़ाब पर ख़ुश हो और सादगी के साथ जितना भी हो सकता हो ख़ुशबू का ख़याल ज़रूर रखना और याद रहे कि तेरे जिस्म व लिबास की कोई भी अच्छी या बुरी बात उसे नफ़रत व कड़वाहट न दिलाए।

4- मेरी प्यारी बेटी! अपने शौहर की निगाह में भली मालूम होने के लिए अपनी आंखों को सुर्मे का काजल से हुस्न देना क्योंकि पुरकशिश आंखें पूरे वजूद को देखने वाले की निगाहों में जचा देती हैं। ग़ुस्ल करना और बावुज़ू रहना कि यह सब से अच्छी ख़ुशबू है और पाकीज़गी का बेहतरीन ज़रिया है।

5- मेरी प्यारी बेटी! उनका खाना वक़्त से पहले ही एहतेमाम से तैयार रखना क्योंकि देर तक बर्दाशत की जाने वाली भूख भड़कते हुए शोले की तरह हो जाती है और उनके आराम करने और नींद पूरी करने के वक़्त में सुकून का माहौल बनाना क्योंकि नींद अधूरी रह जाए तो तबीयत में ग़ुस्सा और चिड़चिड़ापन पैदा हो जाता है।

6- मेरी प्यारी बेटी! उनके घर और उनके माल की निगरानी यानी उनके बग़ैर इजाज़त कोई घर में न आए और उनका माल फ़ालतू कामों, नुमाईश व फ़ैशन में बर्बाद न करना क्योंकि माल का सबसे अच्छा इस्तेमाल उसे सही जगह पर लगाना होता है।

7- मेरी प्यारी बेटी! उनकी राज़दार रहना, उनकी नाफ़रमानी न करना क्योंकि उन जैसे रोबदार शख़्स की ना-फ़रमानी जलते पर तेल का काम करेगी और तुम अगर उसका राज़ दूसरों से छिपा कर न रख सकीं तो उसका भरोसा तुम पर से हट जाएगा और फिर तुम भी उसके दो रुख़ेपन से नहीं बच सकोगी।

8- मेरी प्यारी बेटी! जब वह किसी बात पर ग़मगीन हों तो अपनी किसी ख़ुशी का इज़हार उनके सामने न करना यानी उनके ग़म में बराबर से उनका साथ देना। शौहर की किसी ख़ुशी के वक़्त ग़म के असर चेहरे पर न लाना और न ही शौहर से उनके किसी बर्ताव की शिकायत करना। उनकी ख़ुशी में ख़ुश रहना वरना तुम उनके दिल को परेशान करने वाली कहलाओगी।

9- मेरी प्यारी बेटी! अगर तुम उनकी निगाहों में बाइज़्ज़त बनना चाहती हो तो उसकी इज़्ज़त और एहतेराम का ख़ूब ख़्याल रखना और उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ चलना तो उसको भी हमेशा-हमेशा अपनी ज़िंदगी के हर-हर मरहले में अपना बेहतरीन साथी पाओगी।

10- मेरी प्यारी बेटी! मेरी इस नसीहत को पल्लू से बांध लो और उस पर गिरह लगा लो कि जब तक तुम उनकी ख़ुशी और मर्ज़ी की ख़ातिर कई बार अपना दिल नहीं मारोगी और उनकी बात ऊपर रखने के लिए चाहे तुम्हें पसंद हो या ना-पसंद, ज़िंदगी के कई मरहलों में अपने दिल में उठने वाली ख़्वाहिशों को दफ़्न नहीं करोगी उस वक़्त तक तुम्हारी ज़िंदगी में भी ख़ुशियों के फूल नहीं खिलेंगे।

ऐ मेरी प्यारी और लाडली बेटी! इन नसीहतों के साथ में तुम्हें अल्लाह के हवाले करती हूं। अल्लाह तआला ज़िंदगी के हर मोड़ पर तुम्हें कामयाब करे और हर-हर बुराई से तुमको बचाए!

गाजर की खीर

- गाजर.........................एक किलो
- चावल........................आधा किलो
- बादाम..............7 अदद (पिसे हुए)
- मूँगफली........सात दाने (पिसी हुई)
- खोया.......................आधी प्याली
- शकर.......................आधा किलो
- तेल............................ एक पाव
- मेवा..............ज़रूरत के हिसाब से

तरकीबः

चावलों को पानी में आधे घण्टे के लिए भिगोकर हलका सा ग्राईन्ड कर लें। गाजरों को कद्दूकश कर लें, फिर उनमें आधी प्याली चीनी और ज़रूरत के हिसाब से तेल डाल कर भून लें। जब गाजरों का पानी अच्छी तरह सूख जाए तो उनमें चावल और दूध डाल कर पकाएं, दूध डालने के बाद बराबर चम्मच चलाएं। पाँच मिनट पकाने के बाद खोया और चीनी डाल दें फिर पन्द्रह मिनट और पकाने के बाद मेवा भी डाल दें। क़रीब तीन मिनट बाद उतार लें।

ठंडा करने के बाद ऊपर बादाम और मूँगफली का चूरा छिड़क लें।

क्या असहाबे कहफ़ का वाक़ेआ साइंस से मैच करता है?

■ आयतुल्लाह मकारिम शीराज़ी

शहर ''अफ़सोस'' के लम्बे वक़्त तक सोने वालों यानी असहाबे कहफ़ की नींद के बारे में कुछ लोग शक कर सकते हैं। हो सकता है कि इसको साइंस के उसूलों के मुताबिक़ न समझें। इसलिए इसको क़िस्से कहानियों जैसा समझ लें क्योंकिः

1- जागते रहने वालों के लिए ही सैकड़ों साल तक ज़िंदा रहना मुश्किल है, सोते हुए लोगों के लिए तो बहुत दूर की बात है।

2- जागते हुए तो यह माना भी जा सकता है कि इतनी लंबी उम्र हो सकती है लेकिन जो शख़्स सोया हुआ हो उसके लिए नामुमकिन है क्योंकि खाने पीने की मुश्किल पेश आएगी, इंसान इतनी मुद्दत तक बग़ैर खाए पिए कैसे ज़िंदा रह सकता है और अगर फ़र्ज़ करें कि इंसान के लिए हर रोज़ एक किलो खाना और एक लीटर पानी की ज़रूरत होती है तो असहाबे कहफ़ की उम्र के लिए दस कुंटल खाना और एक हज़ार लीटर पानी ज़रूरी है जिसको बदन में स्टोर नही किया जा सकता।

3- अगर इन सबसे आंखें बंद भी कर लें तो फिर यह सवाल पेदा होता है कि बदन के एक ही हालत में इतनी लंबी मुद्दत तक बाक़ी रहने से इंसानी जिस्म के हिस्से बेकार हो जाते हैं।

इस तरह के ऐतराज़ों के सामने आने से ज़ाहिरी तौर पर कोई हल दिखाई न देता, जबकि ऐसा नही है, क्योंकि :

(1) ऐसा नहीं है कि किसी की इतनी लंबी उम्र नहीं हो सकती क्योंकि हम जानते हैं कि साइंस के लिहाज़ से हर ज़िंदा चीज़ के लिए कोई तय कसौटी नहीं है कि कब उसकी मौत होगी।

दूसरे लफ़्ज़ों में यूं कहें कि यह बात अपनी जगह तय है कि इंसान की ताक़त कितनी भी हो आखिरकार एक दिन ख़त्म होने वाली है लेकिन इसका मतलब यह नही है कि इंसान का बदन या कोई दूसरा जानदार इस आम उम्र से ज़्यादा ज़िंदगी गुज़ारने की सलाहियत नही रखता जैसे सौ डिग्री टम्प्रेचर पर पहुंचने पर पानी खौल जाता है और ज़ीरो डिग्री टम्प्रेचर होने पर पानी बर्फ़ बन जाता है। इसलिए इंसान के सिलसिले में ऐसा कोई क़ानून नहीं है कि जब इंसान सौ साल या डेढ़ सौ साल का हो जाए तो इंसान के दिल की हरकत बंद हो जाए और वह मर जाए बल्कि इंसान की उम्र की कसौटी ज़्यादा तर उसकी ज़िंदगी के हालात पर टिकी होती है और हालात को बदलने से उसकी उम्र में तबदीली आ सकती है इसका सुबूत यह है कि हम देखते हैं कि दुनिया भर के स्कालर्स ने इंसान के लिए कोई ख़ास उम्र तय नहीं की है। इसके अलावा बहुत से स्कालर्स ने कुछ जानवरों की उम्र को कुछ स्पेशल लेबोरेट्रीज़ में रखकर दोगुना, कई गुना और 12 गुना तक पहुंचाया है, यहां तक कि रिर्सच साइंटिस्टों ने हमें उम्मीद दिलाई है कि फ़्युचर में साइंस के नए तरीक़ों के ज़रिए इंसान की उम्र इस वक़्त की उम्र से कई गुना बढ़ जाएगी, यह मिसाल ख़ुद लंबी उम्र के सिलसिले में है।

(2) इस लंबी नींद के बारे में खाने पीने का मसला अगर आम नींद हो तो ऐतराज़ सही है कि यह मसला साइंस से मिलता जुलता नही है, वैसे सोते वक़्त खाने-पीने की ज़रूरत कम होती है लेकिन कुछ सालों के लिए यह मिक़दार बहुत ज़्यादा होनी चाहिए लेकिन इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि ऐसी भी नींद पाई जाती हैं जिसमे खाने-पीने की ज़रूरत बहुत ही कम होती है, इसके लिए जानवरों की मिसाल दी जाती है जो ठंडे मौसम में सो जाते हैं।

सर्दियों की नींद

बहुत से जानवर ऐसे हैं जो पूरी सर्दियों के मौसम में सोते रहते हैं। और इसे साइंस की ज़बान में 'सर्दियों की नींद' कहा जाता है।

ऐसी नींद में ज़िंदगी के असर तक़रीबन ख़त्म हो जाते हैं और ज़िंदगी का मामूली सा

शोला रौशन रहता है, दिल की धड़कन तक़रीबन रुक जाती है और इतनी हलकी हो जाती है कि बिल्कुल महसूस नहीं होती।

ऐसे मौक़ों पर बदन को ऐसा बड़ा भट्टा कहा जा सकता है जो बुझ जाता है और एक छोटा सा शोला भड़कता रहता है। साफ़ है कि आसमान से बातें करते हुए शोलों के लिए भट्टे को एक दिन के लिए जितने कोयले का तेल या गैस की ज़रूरत होती है, एक हलके से शोले के लिए इतनी खुराक़ बरसों या सदियों के लिए काफ़ी है। वैसे इसमें जलते हुए भट्टे की मिक़दार और हलके से शोले की मिक़दार के लिहाज़ से फ़र्क़ हो सकता है।

जानवरों की सर्दियों की नींद के बारे में साइंस का कहना है कि अगर किसी मेंढक को सर्दियों की नींद में उसकी जगह से बाहर निकालें तो वह मुर्दा लगेगा, उसके फेफड़ों में हवा नहीं होगी और उसके दिल की हरकत इतनी कमज़ोर होगी कि पता ही नहीं चलाया जा सकता। ठंडे खून वाले जानवरों (Cool Blooded) में से बहुत से जानवर सर्दियों की नींद सोते हैं। इस बारे में कई तरह के कीड़े-मकोड़े, ज़मीनी सीप (सदफ़) और रेंगने वाले जानवरों के नाम लिए जा सकते हैं, कुछ गर्म ख़ून वाले जानवर (Warm Blooded) भी सर्दियों की नींद सोते हैं। इस नींद के आलम में बदन की हरकत बहुत सुस्त पड़ जाती है और बदन में जमा चर्बी धीरे-धीरे ख़त्म होती रहती है।

मतलब यह है कि एक ऐसी भी नींद है जिसमें खाने-पीने की बहुत कम जरूरत पड़ती है और बदन के मूवमेंटस क़रीब ज़ीरो तक पहुंच जाते हैं, इत्तेफ़ाक़ की बात यह है कि यही हालत जिस्म के हिस्सों को ख़राब होने से बचाने और जानवरों को एक लंबी मुद्दत तक जीने में मदद देती है। उसूली तौर पर जो जानदार सर्दियों में अपनी गिज़ा जमा करने की ताक़त नहीं रखते उनके लिए सर्दियों की नींद बहुत बड़ी चीज़ है।

योगा के एक्सपर्टस : एक और मिसाल

योगा के एक्सपर्टस के बारे में देखा गया है कि उनमें से कुछ को यक़ीन न करने वाले और ताअज्जुब में पड़े हुए लोगों की आंखों के सामने एक बक्स में रख कर हफ़्ता भर के लिए मिट्टी के नीचे दफ़न कर देते हैं और एक हफ्ते के बाद उन्हें बाहर निकालते हैं, उनकी मालिश की जाती है और आर्टिफ़िशल सांस दी जाती है और वह धीरे-धीरे असली हालत पर पलट आते हैं।

इतनी मुद्दत के लिए अगर खाने-पीने का मसला कोई ख़ास न हो तो भी आक्सीज़न का मसला बहुत ख़ास है क्योंकि हम जानते हैं दिमाग़ के Cells आक्सीज़न के मामले में इतने सेंस्टिव और ज़रूरतमंद होते हैं कि अगर कुछ सेकेंड भी उन्हें आक्सीज़न न मिले तो तबाह हो जाएंगे। इसलिए सवाल पैदा होता है कि एक योगा करने वाला पूरा हफ़्ता किस तरह ऑक्सीज़न की इस कमी को बर्दाशत कर लेता है।

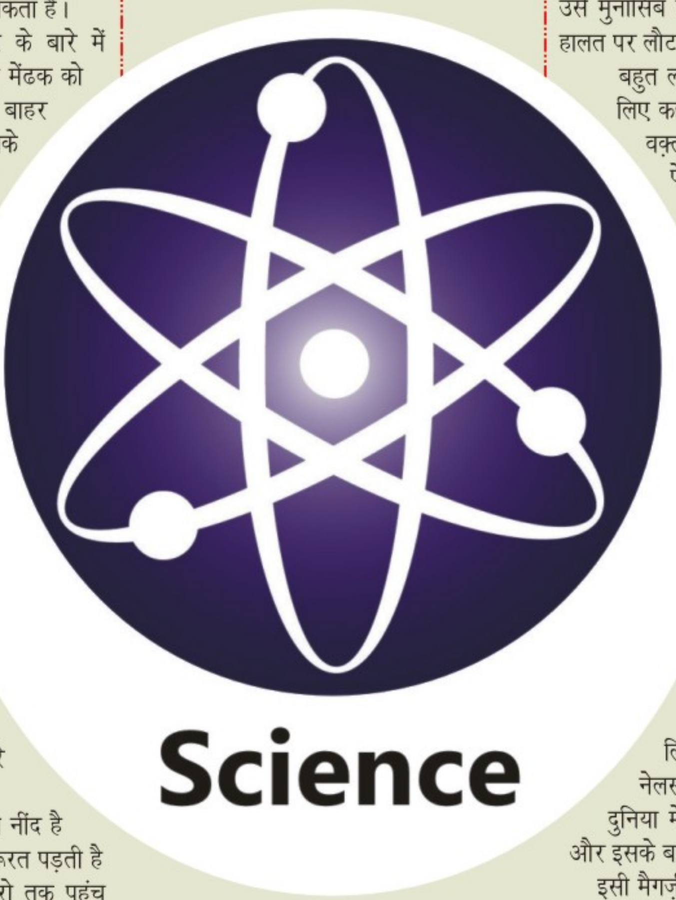

अभी तक ऊपर जो कुछ हमने कहा है उसको सामने रखते हुए इस सवाल का जवाब कोई ज़्यादा मुश्किल नहीं है। बात यह है कि योगा करने वाले के बदन के मूवमेंटस इस बीच में तक़रीबन रुक जाते है। इस दौरान Cells को आक्सीज़न की ज़रूरत बहुत कम पड़ती है यहां तक कि वही हवा जो ताबूत के अंदर होती है बदन के Cells की हफ़्ते भर की गिज़ा के लिए काफ़ी हो जाती है!!

ज़िंदा इंसान के बदन को जमा देना

जानवरों बल्कि इंसानी बदन को भी जमा के उसकी उम्र बढ़ाने के बारे में आजकल बहुत सी थ्योरियां पेश की जा रही हैं उनमें से कुछ पर तो अमल भी हो चुका है।

इन थ्योरीज़ के मुताबिक़ यह हो सकता है कि एक इंसान या जानवर के बदन को एक ख़ास तरीक़े के तहेत ज़ीरो डिग्री से कम टम्प्रेचर पर रख कर उसकी ज़िंदगी को रोक दिया जाए जिससे उसकी मौत न हो। फिर एक वक़्त के बाद उसे मुनासिब टम्प्रेचर दिया जाए और वह आम हालत पर लौट आए!!

बहुत लम्बे-लम्बे आसमानी सफ़र जिनके लिए कई सौ साल या कई हज़ार साल का वक़्त चाहिए, उनके लिए कई मंसूबे पेश किए जा चुके हैं। उनमें से एक यही है कि स्पेस में जाने वाले के बदन को एक खास बाक्स में रखकर उसे जमा दिया जाए और जब सैंकड़ों साल की दूरी के बाद वह अपने तय प्लानेट के क़रीब पहुंच जाए तो एक ऑटोमेटिक सिस्टम के तहेत उस बाक्स में टम्प्रेचर पैदा हो जाए और स्पेस में जाने वाले अपनी ज़िंदगी की अस्ली हालत पर लौट आए।

एक साइंसी मैगज़ीन में यह ख़बर छपी है कि हाल ही में इंसानी बदन को लम्बी उम्र के लिए जमाने के बारे में बराब्रट नेलसन ने किताब लिखी है। साइंस की दुनिया में यह किताब बहुत मशहूर हुई है और इसके बारे में बहुत कुछ कहा गया है।

इसी मैगज़ीन में यह भी लिखा है कि हाल ही में इस सब्जेक्ट के तहेत एक ख़ास साइंसी सेक्शन क़ायम हो गया है, आगे लिखा है, ''हमेशा से इंसानी हिस्ट्री में ''हमेशा की ज़िंदगी'' इंसान का सुनेहरा ख़्वाब रही है लेकिन अब यह ख़्वाब हक़ीक़त में बदल गया है। यह चीज़ एक नए इल्म की खुशगवार और हैरतअंगेज़ तरक़्क़ी की वजह से सामने आ पाई है। यह इल्म इंसानी बदन को जमा के ज़िंदा रखने के बारे में है। इसके मुताबिक़ इंसान के बदन को जमा के उसे बचाया जा सकता है यहां तक कि साइंटिस्ट उसे फिर से ज़िंदा कर सकते हैं

क्या इस बात पर यक़ीन किया जा सकता है? बहुत से बड़े-बड़े साइंटिस्ट इस मसले पर ग़ौर कर रहे हैं, इसके बारे में बहुत सी किताबें छप चुकी हैं जैसे "लाइफ़" और "स्कवायर", पूरी दुनिया के अख़बारों में पूरे ज़ोर व शोर से इस मसले पर बहेस चल रही है और सबसे अहम बात यह है कि इस बारे में अब तर्जुबे शुरू हो चुके हैं।

कुछ वक़्त पहले एक अख़बार में यह ख़बर छपी थी कि नार्थ-पोल के बर्फ़ीले इलाक़े से कुछ हज़ार साल पहले की एक जमी हुई मछली मिली है जिसे खुद वहां के लोगों ने देखा है। इस मछली को जब एक ख़ास टम्प्रेचर वाले पानी में रखा गया तो सब लोग हैरत में पड़ गए कि वह मछली फिर से जी उठी और तैरने लगी।

ध्यान रहे कि इस ज़माने वाले हालात में ज़िंदगी का चिराग़ मौत की तरह बिल्कुल बुझ नहीं जाता क्योंकि अगर ऐसा होता तो ज़िंदा होना मुमकिन नही है बल्कि इस हालत में ज़िंदगी के मूवमेंट्स बहुत सुस्त हो जाते हैं।

इन सारी बातों से हम यह नतीजे निकालते हैं कि इंसानी ज़िंदगी को ठहराया या बहुत ही सुस्त किया जा सकता है। साइंस की बहुत सी तहक़ीक़ात इस चीज़ को सही भी ठहराती हैं। इस हालत में गिज़ा का इस्तेमाल बदन में क़रीब ज़ीरो तक पहुंच जाता है और इंसान के बदन में मौजूद गिज़ा का थोड़ा सा स्टोर उसकी सुस्त ज़िंदगी के लिए सैंकड़ों और हज़ारों सालों तक के लिए काफ़ी हो सकता है।

यह ग़लतफहमी न हो कि इन बातों के ज़रिए हम असहाबे कहफ़ की नींद के मोजिज़े होने का इंकार करना चाहते हैं। हम यहां सिर्फ़ यह चाहते हैं कि साइंस के ऐतबार से भी इस वाक़ेए को साबित कर सकें क्योंकि यह बात तय है कि असहाबे कहफ़ हमारी तरह नही सोए थे। उनकी नींद हमारी नींद नहीं थी, इसमें ताज्जुब की कोई बात नहीं है कि वह खुदा के इरादे और मर्ज़ी के तहेत एक लंबी मुद्दत तक सोते रहे, इस दौरान न उन्हें गिज़ा की कमी का एहसास हुआ और न उनके बदन के ऑरगेनिज़्म को कोई नुक़्सान पहुंचा।

> इमाम
> **हसन असकरी** अ०
> ने फ़रमाया है:
>
> **1- इंसानों में सबसे कम सुकून, कीना और जलन करने वाले को मिलता है।**
>
> **2- जिसने किसी को तन्हाई में नसीहत की उसने उसे संवार दिया और जिसने दूसरों के सामने किसी को नसीहत की उसने उसे बेइज़्ज़त कर दिया।**
>
> सैय्यदा सहेर फ़ातिमा
> सैय्यद मुहम्मद काज़िम ज़ैदी
> (मलीर कोरंगी)

यह बात भी ध्यान देने लायक़ है कि सूरए कहफ़ की आयातों से उनके बारे में यह नतीजा सामने आता है कि उनकी नींद आम तरीक़े की नींद से बहुत अलग थी।

"तुम्हारा ख़्याल है कि वह जाग रहे हैं हांलाकि वह सो रहे हैं और हम उन्हें दाएं-बाएं करवट भी बदलवा रहे है और उनका कुत्ता डयोढ़ी पर दोनों हाथ फैलाए डटा हुआ है। अगर तुम उनकी हालत को समझ पाते तो उलटे पांव भाग निकलते और तुम्हारे दिल में डर समा जाता।" (1)

यह आयत बता रही है कि उनकी नींद आम नींद नहीं थी बल्कि ऐसी नींद थी जो मौत की तरह थी और उनकी आंखें खुली हुई थीं।

इसके अलावा कुरआन में बयान हुआ है कि सूरज की रौशनी उनकी गुफ़ा के अंदर नही पड़ती थी। साथ ही इस बात पर भी ध्यान देना चाहिए कि उनकी गुफ़ा शायद किसी बुलंद और ठंडी जगह पर थी तो उनकी नींद के एक अलग नींद होने वाली बात और साफ़ हो जाती है।

दूसरी तरफ़ क़ुरआन कहता है कि हम उन्हें दाहिने बाएं करवट भी बदलवा रहे हैं। इससे मालूम होता है कि वह बिल्कुल एक ही हालत में नही रहते थे। किसी तरह जो अभी तक हमारे लिए मोअम्मा है शा[illegible] साल में एक बार उन्हें दाएं-बाएं पलटा जाता था ताकि उनके बदन के ऑरगेनिज़्म को कोई नुक़्सान न पहुंचे।

(सूरेए कहेफ़/18)

email: muammal@al-muammal.org
آج ہی ممبر بنئے
زرسالانہ
Rs.150
دوماہی مؤمّل لکھنؤ
द्विमासिक मुअम्मल लखनऊ
MUAMMAL

उमदा तबाअत	عمدہ طباعت
आसान ज़बान	آسان زبان
कुर्आनी मालूमात	قرآنی معلومات
अख़्लाक़ी बातें	اخلاقی باتیں
आर्ट गैलरी	آرٹ گیلری
इस्लामिक पज़ल	اسلامک پزل
कामिक्स	کامکس

AL-MU'AMMAL CULTURAL FOUNDATION
546/203 Near Era's Lucknow Medical College Sarfarazganj, Hardoi Road, Lucknow-3 U.P. (India) Ph.: 0522-2405646, 9839459672

ऐ माँ! तू अज़ीम है।

■ निकहत नसीम

ऐ माँ! तू अज़ीम है।

माँ! एक बरस बीत गया, कल ही की तो बात है
तू हम से मुँह मोड़ गई, इस दुनिया से नाता तोड़ गई
फिर भी न जाने क्यों, मेरे दिल की यही आस है
जब भी मेरे हाथ दुआ को उठ्ते हैं
तेरा वह पुरनूर चेहरा, लब ख़ामोश, बन्द निगाहें
जब भी मेरी हथेलियों पर नमूदार होती हैं
बस उसी एक लम्हे में ये सोचती हूँ
कि दुनिया की नज़रों में तुम मेरे पास नहीं हो
लेकिन मेरे दिल से ये आवाज़ क्यों आती है
मुझे हर एक लम्हा ये यक़ीन क्यों दिलाती है
तुम्हारी ममता की वह गर्मी, तुम्हारे हाथों की वह नर्मी
मेरे रूबरु, मेरे चार सू, मेरा ये गुमाँ मेरे दरमियाँ
मुझे हर एक पल तेरी ही आस है
मेरे पास भी न हो कर तुम हर एक लम्हा मेरे पास हो
मेरी उम्मीद भी तुम, मेरी आस भी तुम
मेरे हर एक दर्द का एहसास भी तुम
मेरा अरमान भी तुम, मेरी फ़ुग़ां भी तुम
मेरी ज़मीन भी तुम मेरा आसमान भी तुम
मेरी ये दुआ हर एक लम्हा तेरे साथ रहे
वह मक़ाम तेरा बुलंद हो, फ़रिश्तों के तू संग हो
गर्मी न तुझे छू सके, हर गुनाह से तू पाक हो
तेरा वह जहाँ जहन्नम से दूर जन्नत में आबाद हो
तझे मिले सुकूँ, तू अपने रब के पास हो

नमाज़

■आयतुल्लाह मोहसिन क़राअती

क्या आपने अब तक ऐसे लोगों का शुक्रिया अदा किया है जिन्होंने आपकी मदद या आपके साथ कोई अच्छाई की हो? ऐसा ज़रूर हुआ होगा। लेकिन सवाल पैदा होता है कि आख़िर क्यों? वह इसलिए कि इंसान की अक़्ल और उसकी फ़ितरत उसे इस बात पर उकसाती है कि ऐसे लोगों को थैंक्यु बोला जाए जो उसके साथ अच्छाई करते हैं या मुश्किल घड़ी में उसके काम आते हैं।

इससे पता चलता है कि नेमत की वजह से इंसान को शुक्रिया का मौक़ा मिलता है और उसकी अक़्ल और फ़ितरत उसको इस बात पर मजबूर करती है। यहां तक कि अगर कोई हमारा दोस्त पढ़ाई में हमारी मदद करे, अपनी कोई कापी किताब हमें दे, हमारे पढ़ने लिखने के लिए मुनासिब मौक़ा फ़राहम करे, क्लास में अपनी कमियों को पूरा करने में हमारी मदद करे या किसी मुश्किल में हमारे काम आए। इन तमाम सूरतों में हम अपने को उसका एहसानमंद समझते हैं और चाहते हैं कि हम भी कभी उसकी इन अच्छाईयों का जवाब दें।

हम सब इस बात को मानते हैं कि सबसे अच्छी नेमतें अल्लाह ने हमें दी हैं और जो नेमतें उसने हमें दी हैं वह कोई और नहीं दे सकता। हमें अक़्ल, जान, सोच, इरादा और सलाहियतें दीं। ज़िंदगी का रास्ता दिखाने को रसूल भेजे, ज़िंदगी जैसी अज़ीम नेमत दी और उसी की ख़ातिर इस पूरी दुनिया को आबाद किया। वह पैदा करने वाला है तो हम पैदा होने वाले। उसे किसी की कोई ज़रूरत नहीं, वह सब कुछ कर सकता है। हम उसके मोहताज हैं और हमारी सारी ज़रूरतों को भी वही पूरा करता है और हम उसकी मदद के बग़ैर कुछ भी नहीं कर सकते। अगर हम पढ़ते लिखते भी हैं तो यह उसी का करम है क्योंकि उसी ने हमें इस बात की सलाहियत दी है।

ज़िंदगी के लिए सांस की ज़रूरत होती है और सांस लेने के लिए ज़रूरी चीज़ें भी हमारे ख़ुदा ने ही हमें दी हैं।

एक हक़ीर और मोहताज बंदे से सिवाए बंदगी के और हो भी क्या सकता है? एक कमज़ोर और नातवां इंसान से ख़ाकसारी और इन्केसारी के अलावा और क्या उम्मीद रखी जा सकती है? एक आदमी जो नेमतों में डूबा हुआ हो, उससे शुक्र के सिवाए किस चीज़ की उम्मीद रखी जा सकती है?

हम सबके पास अक़्ल है, सोचते समझते हैं, यह भी जानते हैं कि किस ने यह सब नेमतें दी हैं, तो ऐसे में अगर हम अल्लाह की इबादत करते हैं उसको पूजते हैं, उससे मांगते हैं, उसके सामने सर झुकाते हैं, तंहाई में बैठ कर उससे बातें करते हैं या नमाज़ पढ़ते हैं तो सिर्फ़ इसलिए ताकि यह बताएं कि वह ख़ुदा है और हम उसके बंदे।

अगर हम इबादत न करें तो उसका मतलब यह है कि हम अपने असली मक़सद को पूरा नही कर रहे हैं। इसलिए कि क़ुरआन में अल्लाह फ़रमाता है कि मैंने जिनों और इंसानों को सिर्फ़ अपनी इबादत के लिए पैदा किया है।

एक और दूसरी जगह पर है, ''उसकी इबादत करो क्योंकि यही सीधा रास्ता है।''

ऐसे में अगर हम इस सही और सीधे रास्ते से हट जाएं और अल्लाह की इबादत न करें, उसका कहा न सुनें तो इसका मतलब यह है कि हम नाशुक्री कर रहे हैं और उसकी रहमत और करम से अपने को दूर कर रहे हैं। जो अल्लाह से दूर होता है तो फिर वह शैतान और उसके मानने वालों के जाल से नहीं बच सकता। सिर्फ़ अल्लाह की इबादत

ही आदमी को ताक़त और इज़्ज़त देकर उसे दूसरी ज़ालिम ताक़तों के चंगुल से बचाती है।

नमाज़ क्यों और कैसे?

हमारे नमाज़ पढ़ने से अल्लाह को कोई फ़ायदा नहीं होता और न ही हमारे नमाज़ न पढ़ने से उसे कोई नुक़सान पहुंचता है। अगर हम खुद चाहते हैं कि अपनी रूह को बनाएं संवारे तो यह नमाज़ से होगा। और अगर नमाज़ को छोड़ देते हैं तो खुद हम ही उसके माद्दी, मानवी फ़ायदों बरकतों से महरूम हो जाएंगे और फ़िर इस दुनिया में भी अज़ाब से नहीं बच सकते।

कमाल तो उसी वक़्त है कि जब हम अल्लाह के बंदे रहें और उसकी इबादत करें। उसकी इबादत का सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि हम नमाज़ पढ़ें। नमाज़ का मतलब है अल्लाह की इबादत, उसके सामने सर झुकाना, उसको पूजना, उसकी बातें करना और उससे मांगना। यह काम हम दिन में कम से कम पांच बार करते हैं।

जो अल्लाह का बंदा बन जाता है फ़िर वह ख़्वाहिश, हवस और शैतान के क़ब्ज़े में नहीं आ सकता। जो नमाज़ पढ़कर अल्लाह के सामने सर झुका देता है वह फ़िर किसी भी दूसरी ताक़त के सामने हार नहीं मान सकता। हम नमाज़ इसलिए पढ़ते हैं ताकि हमें हमेशा याद रहे कि हम बंदे हैं और वह हमारा सरपरस्त और पालने वाला है।

क़ुरआन शरीफ़ में है, ''नमाज़ हर बुराई और बदकारी से रोकने वाली है।'' (सूरए अनकबूत/45)

लेकिन अब यह नमाज़ कैसे पढ़ी जाए?

हम जैसे नमाज़ पढ़ते हैं, यह खुदा का हुक्म और पैग़म्बरे अकरम स॰ फ़रमाते हैं। इसलिए ज़रूरी है कि नमाज़ के बारे में जो एहकाम हदीसों और तौज़ीहुल मसाएल में मौजूद हैं, उनको जाना और समझा जाए ताकि जिस तरह अल्लाह का हुक्म है उसी तरह नमाज़ किसी कमी के बग़ैर पढ़ी जा सके।

खुदा, रसूल और इमामों ने नमाज़ और इबादत के कुछ आदाब बताए हैं :

1- नमाज़ को शुऊर, आगाही और ध्यान के साथ होना चाहिए। मतलब यह कि आदमी को नमाज़ पढ़ते वक़्त यह मालूम हो कि क्या पढ़ रहा है, क्या कह रहा है, क्या कर रहा है, किसके सामने ख़ड़ा है। ध्यान और शुऊर के बग़ैर पढ़ी जाने वाली नमाज़ में कोई सवाब भी नहीं होता। पैग़म्बर स॰ फ़रमाते हैं, ''यक़ीन के साथ दो रकत पढ़ी जाने वाली नमाज़, ग़फ़लत के साथ की जाने वाली शब्बेदारी से बेहतर है।

2- नमाज़ को इश्क़ के साथ होना चाहिए। ज़बरदस्ती और सुस्ती के साथ पढ़ी जाने वाली नमाज़ का कोई फ़ायदा नहीं है। दिल में अल्लाह की मुहब्बत और लगाव के साथ नमाज़ पढ़ी जाए। इसे समझते हुए नमाज़ पढ़ी जाए कि अल्लाह ही है जिसने हमें यह सब नेमतें दी हैं। पैग़म्बर स॰ फ़रमाते हैं कि नमाज़ मेरी आंखों का नूर है।

नमाज़ से ऐसा शौक़ और इतनी मुहब्बत होना चाहिए कि अज़ान की आवाज़ कान में पड़ते ही हर काम को छोड़ दें और अपने अल्लाह की बारगाह की तरफ़ दौड़ पड़ें।

3- नमाज़ को खुलूस के साथ होना चाहिए। जितने भी दीनी, मज़हबी काम और इबादतें हैं उन सब में खुलूस होना चाहिए और सिर्फ़ खुदा के लिए ही अंजाम दिया जाना चाहिए। क़ुरआन में है कि उन्हें हुक्म दिया गया है कि अल्लाह की इबादत करें और अपने दीन को सिर्फ़ उसके लिए ख़ालिस करें।

इबादतों और कामों में दिखावा भी एक तरह का शिर्क है और उससे काम की कोई क़ीमत नही रह जाती। अल्लाह भी ऐसी इबादत को क़ुबूल नहीं करता जो दिखावे के लिए की जाती हैं और इस पर कोई सवाब नहीं दिया जाता। नमाज़ एक बदन की तरह है और उसकी रूह खुलूस है।

4- नमाज़ में खुशू होना चाहिए। मतलब यह कि अपनी फ़िक्र, ख़्याल, ध्यान को सिर्फ़ नमाज़ में रखें। इधर-उधर न देखें, अपने हाथों से न खेलें, दूसरों की बातें न सुनें, अपना बदन न हिलाएं। अगर हम इन तमाम बातों का ख़्याल रखते हैं तो इसका मतलब यह है कि हम नमाज़ खुशू के साथ पढ़ रहे हैं। एक हदीस में आया है कि अल्लाह की इस एहसास के साथ इबादत करो कि वह तुम्हें देख रहा है। अगर इस एहसास के साथ इबादत की जाए तो खुशू अपने आप पैदा हो जाएगा।

एक तरफ़ जब हम इन आदाब पर नज़र डालते हैं और दूसरी तरफ़ नबियों और इमामों, उलमा और अल्लाह के ख़ालिस बंदों की नमाज़ को देखते हैं तो हमें अपनी नमाज़ से शर्मिंदगी होती है और हमारा सर झुक जाता है। काश हम भी ऐसी नमाज़ पढ़ने लगें जैसी खुदा चाहता है।

कोशिश करें कि पाबंदी के साथ और अव्वल वक़्त पर ही नमाज़ को पढ़ा जाए इसलिए कि नमाज़ को हलका समझना, उसको अहमियत न देना और कभी पढ़ना और कभी न पढ़ना ऐसा गुनाह है जो आदमी को मासूमीन अ॰ की शिफ़ाअत से महरूम कर देता है। इमाम सादिक़ अ॰ फ़रमाते हैं, ''जो नमाज़ को हल्का समझता है वह हमारी शिफ़ाअत से फ़ायदा नहीं उठा सकता। खुदाया हमें अपने ख़ालिस नमाज़ियों में से क़रार दे! ●

Haji S. Kazim Husain (Prop.)
HK

Kazim Zari Art
All Kinds of Sarees, Suit and Lehanga Chunni
Hata Dhannu Beg, Kazmain Road, Lucknow 0522-2264357, 9839126005

दीने खुदा के मुहाफ़िज़
इमाम हसन अस्करी[अ०]

इमाम हसन अस्करी[अ०] दसवें इमाम हज़रत अली नक़ी[अ०] के बेटे हैं। 10 रबीउस्सानी 232 हिजरी में मदीने में पैदा हुए थे। आप की मां का नाम सोसन था।

आपको 8 रबीउल अव्वल सन 260 हिजरी में मोतमद अब्बासी ने शहर सामर्रा (ईराक़) में ज़हर देकर शहीद कर दिया था।

आपके के ज़माने में अब्बासियों के सामने ऐसी मुश्किलें आईं जिनसे उनकी ताक़त कम हो गई और हुकूमत तुर्की ग़ुलामों के हाथ आ गई। इसके बावजूद हुकूमत ने इमाम के ऊपर ज़ुल्म का सिलसिला जारी रखा।

मुतवक्किल ने आपको बग़ैर किसी जुर्म के क़ैदखाने में डाल दिया और अब्बासियों की कोशिश यह थी कि इमाम को अपने बीच रखें ताकि उन पर कड़ी नज़र रख सकें और उन्हें उनके चाहने वालों से दूर रख सकें। अपने वालिद की तरह आप भी सामर्रा में रहने पर मजबूर थे।

तौहीद की मुख़ालिफ़ों के मुक़ाबले में इमाम[अ०] के ठोस इल्मी जवाब, बात-चीत के ज़रिए से हक़ को फैलाने के तरीक़े ने इमाम की शख़्सियत को मोमिनीन के सामने और अहम बना दिया था और मोमिनीन के अंदर यह हौसला पैदा कर दिया था कि वह ग़लत फ़िक्रों का मुक़ाबला कर सकें।

इमाम के ज़माने में ईराक़ में एक बहुत ही मशहूर फ़िलॉस्फ़र था जिसका नाम इस्हाक़ किंदी था उसने एक किताब लिखी जिसमें यह दावा किया कि क़ुरआनी आयतें एक दूसरे को काटती हैं। इमाम को इसकी ख़बर हुई तो इमाम ने किंदी की इस सोच का आलिमाना जवाब दिया जिससे किंदी अपनी बात पर शर्मिंदा हुआ और अपनी किताब को जला डाला।

इमाम अस्करी[अ०] के पास दुनिया भर के मोमिनीन उनके नाएबों के ज़रिए माल-दौलत भेजते थे और इमाम उन्हें हुकूमत से छुपा कर अपने पास महफ़ूज़ रखते और छुपा कर लोगों के बीच ख़र्च किया करते थे।

अब्बासी हुकूमत इमाम के चाहने वालों का बेरहमी से मुक़ाबला करती थी और उन्हें इमाम के पास से दूर करने के लिए हर तरह की कोशिश किया करती थी।

10 रबीउस्सानी

इमाम हसन असकरी [अ०] की विलादत आप सब को बहुत-बहुत मुबारक हो!

इमाम मेहदी[अ०] और उनकी ग़ैबत

इमाम अस्करी[अ०] को इस बात का यक़ीन था कि ख़ुदा चाहता है कि उनके बेटे इमाम मेहदी के ज़रिए दुनिया भर में इंसाफ़ की हुकूमत क़ायम होने के लिए इमाम की ग़ैबत भी ज़रूरी है।

पिछले इमामों की बार-बार पेशिंगोईयों और पैग़म्बरे अकरम[स०] की रिवायतों से यह बात यक़ीनी है कि इमाम मेहदी आएंगे और इंसाफ़ की हुकूमत की बुनियाद डालेंगे। इन रिवायतों को सही बुख़ारी, सही मुस्लिम और अहमद बिन हंबल की किताब मुस्नद में नक़्ल किया गया है।

ऐसी सूरत में इमाम अस्करी[अ०] की कोशिश थी कि लोगों को यह यक़ीन दिला दें कि ख़ुदा का वादा सच्चा है और उसका वक़्त भी आ पहुंचा है, इमाम के बेटे इमाम मेहदी के ज़रिए ही यह वादा पूरा होगा। साथ ही साथ इमाम की ग़ैबत के मसले को भी लोगों के बीच फैलाते ताकि लोगों के दिल-दिमाग़ ग़ैबत को समझने और क़ुबूल करने के लिए तैयार हो जाएं।

दूसरी तरफ़ से इमाम के चाहने वाले भी ख़त-किताबत के ज़रिए इमाम से न जाने कितनी बार इमाम मेहदी[अ०] और उनकी ग़ैबत के बारे में सवाल पूछते थे और इमाम उन्हें मुनासिब जवाब लिखते जो उनके लिए काफ़ी होता था।

जब कोई शिया कोई शरई रक़म इमाम को देना चाहता तो वह उसे उस्मान बिन सईद उमरी के पास ले जाता और वह उसे ख़ामोशी से इमाम के पास पहुंचवा देते थे ताकि हुकूमत को पता न चले चूंकि अगर हुकूमत को पता चल जाता था तो वह माल छीन लिया करती थी।

मेहदी अब्बासी के ज़माने में साहेबुज़ जंज नामी आदमी ने हुकूमत के ख़िलाफ़ क़ियाम किया और यह दावा किया कि वह पैग़म्बर की नस्ल से है, उसने बसरे पर क़ब्ज़ा कर लिया और अब्बासी हुकूमत से इस तरह डट कर मुक़ाबला किया कि बग़दाद पर भी क़ब्ज़ा क़रीब ही था।

वह जहां पहुंचता औरतों और बच्चों तक को क़त्ल करता और घरों को आग लगा देता था। इस ग़ैर इंसानी काम की वजह से इमाम हसन अस्करी[अ०] उसके रसूल की नस्ल से होने का इंकार करते थे और उसे ख़्वारिज में से बताते थे।

लेकिन हो सकता है कि इमाम ने उसकी निसबत से इंकार न किया हो बल्कि उसके कामों की वजह से यह कहा हो कि उसके कामों व किरदार का हम अहलेबैत[अ०] से कोई तअल्लुक़ नहीं है।

इमाम हसन अस्करी[अ०] के साथ मोतमिद अब्बासी का बर्ताव दूसरे अब्बासी हुक्मरानों से अलग न था, उसने भी इमाम पर कड़ी नज़र रखनी शुरू कर दी। इस तरह कि इमाम के क़रीबी लोगों के अलावा कोई इमाम से मुलाक़ात नहीं कर सकता था। इमाम से बाहर वालों का राब्ता सिर्फ़ ख़तो-किताबत के ज़रिए ही हो सकता था।

जब इमाम की बीमारी की ख़बर मोतमिद अब्बासी को मिली तो उसने हुक्म दिया कि इमाम को घर में नज़रबंद कर दिया जाए। फिर इमाम की शहादत के बाद पूरे घर की तलाशी ली गई और उनके सारे माल को ज़ब्त करके इमाम के बेटों के बारे में तहक़ीक़ शुरू हुई और दाया को बुलाकर घर की सब औरतों के मुआयने का हुक्म दिया गया।

इमाम मेहदी, जिनकी बशारत पैग़म्बर[स०] ने दी थी और उन्हें पूरी इंसानियत का रिफ़ार्मर और ज़ुल्म की बिसात लपेटने वाला बताया था, का डर अब्बासियों के दिलों में बढ़ता जा रहा था।

वह चाहते थे कि इमाम को क़त्ल कर के उनके ज़हूर का रास्ता बंद कर दें, इमाम अस्करी[अ०] ने भी अपने ख़त में इसकी तरफ़ इशारा किया है, "उनका ख़्याल है कि मुझे क़त्ल करके मेरी नस्ल को ख़त्म कर देंगे जब कि ख़ुदा ने उनको झुठलाया है, उस ख़ुदा का शुक्र जिसने उस वक़्त तक मुझे मौत न दी जब तक मेरे जानशीन को मुझसे मिला न दिया। वह सूरत और सीरत में पैग़म्बरे अकरम[स०] से सबसे ज़्यादा मिलते हैं। ख़ुदा उसे पर्दए ग़ैबत में महफ़ूज़ रखेगा। फिर उसे ज़ाहिर करेगा ताकि वह ज़ुल्म से भरी हुई ज़मीन को इंसाफ़ से भर देगा।

फ़ैमिली में बुज़ुर्गों की अहमियत

फ़ैमिली के बारे में जब भी बातचीत होगी तो फ़ैमिली में बुज़ुर्गों की ज़रूरत और घर के अंदर उनके मुक़ाम और मर्तबे के बारे में बात ज़रूर की जाएगी। यह वह लोग होते हैं जिन्होंने अपनी लम्बी ज़िंदगी कोशिशों और तजुर्बों में गुज़ारी हुई होती है और अब उनको एहतेराम और मुहब्बत की ज़रूरत होती है। उनका एहतेराम इस्लामी कल्चर का एक अटूट हिस्सा है। यह एहतेराम ख़ानदानी और समाजी वेल्युज़ को मज़बूत करता है। जिस तरह हर उम्र में बच्चों की ज़रूरतें अलग-अलग होती हैं और पैरेंट्स और टीचर्स के लिए ज़रूरी होता है कि वह वक़्त के लिहाज़ से सही तरीक़ा अपना कर बच्चे की परवरिश करें ताकि उसकी सलाहियतें परवान चढ़ सकें, बिल्कुल इसी तरह बड़ी उम्र के लोगों की ज़रूरतें और ख़्वाहिशें भी अलग-अलग होती हैं। वह अपने बच्चों और साथ रहने वाले लोगों से अपने पिछले कामों और परेशानियों की क़द्र और शुक्रगुज़ारी की उम्मीद रखाते हैं। इस्लाम में बूढ़ों और बड़ी उम्र के लोगों को ख़ास मुक़ाम हासिल है।

बड़ी उम्र के लोग अपने इर्द-गिर्द के लोगों की तवज्जोह और नेक सुलूक से खुश और उनकी तरफ़ से बरती जाने वाली बे-ताल्लुक़ी से परेशान हो जाते हैं। बुज़ुर्गों की इन्ही ज़रूरतों को इस्लामी रिवायतों में बार-बार बयान किया गया है। एक रिवायत में इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं, ''अपने बुज़ुर्गों का एहतेराम करो।''

एक और जगह पर रसूले ख़ुदा[स०] फ़रमाते हैं, ''जो कोई बुज़ुर्गों का एहतेराम न करे और बच्चों के साथ मेहरबानी व मुहब्बत से पेश न आए वह हम में से नही है।''

लोगों की ज़िंदगी की बेहतरी के लिए इस तरह की रिवायतों से यह नतीजा मिलता है कि बच्चों, नौजवानों और बुज़ुर्गों की साइकॉलोजिकल ज़रूरतों पर ध्यान देना बहुत ज़्यादा अहम और ज़रूरी है।

बुज़ुर्ग और बड़ी उम्र के लोग समझदार और तजुर्बेकार हुआ करते हैं। अगरचे जवानी की सरगर्मियां, चुस्ती और ताक़त उनके हाथों से निकल चुकी होती है लेकिन उसके बावजूद अपने तजुर्बों की बुनियाद पर वह मसलों को बेहतर तौर पर समझने और हल करने की सलाहियत रखते हैं। इसलिए नौजवानों और बीच की उम्र के लोगों

के लिए अच्छे रहबर और गाइड साबित होते हैं।

एक औरत जिन्होंने अपनी ज़िंदगी में बुज़ुर्गों के तजुर्बों और गाइडेंस से भरपूर फ़ायदा उठाया था, कहती हैं, "मैं कभी अपनी दादी की अहमियत को नहीं समझती थी। मेरे लिए वह मेरी मम्मी की सास और एक बूढ़ी औरत के अलावा कुछ भी नही थीं जिनका काम सिर्फ़ दूसरों में ग़ल्तियां निकालना होता है। लेकिन जब से मैंने उनके तजुर्बों और गाइडेंस से फायदा उठाना शुरू किया है और अपनी ज़िंदगी पर उसके असर को होते हुए देखा है, मैं उनकी इज़्ज़त करने लगी हूं। हुआ यूं कि शादी के बाद मैंने अपने माइके और ससुराल के रहन-सहन में बहुत फ़र्क़ पाया। मैं अपने शौहर के सामने उनके तौर तरीक़ों पर लगातार एतेराज़ करती रही जिससे हमारे आपसी ताअल्लुक़ात में कड़वाहट आ गई। कुछ दिनों बाद हम नौकरी की वजह से दूसरे शहर शिफ़्ट हो गए और वहां मैंने अलग घर भी किराए पर ले लिया और अपने ससुराल से अलग होकर अलग घर में रहने लगी। एक दिन मेरे माइके वाले मुझसे मिलने आए और उन्होंने ससुराल के साथ मेरे बिगड़े हुए ताअल्लुक़ात को महसूस कर लिया। मेरी दादी मेरा यह तरीक़ा देखकर सख़्त नाराज़ हुईं और कहने लगीं कि बेटी तुम्हारे ससुराल वाले चाहे किसी भी क़बीले या खानदान से ताअल्लुक़ रखते हों, तुम्हें हरगिज़ उनके साथ इस तरह का रवैय्या नही रखना चाहिए। एक बहू को चाहिए कि वह अपने आपको ससुराल का एक मिम्बर समझे और ससुराल वालों को भी अपने घर वालों की तरह समझे। तुम उनकी बेटी जैसी हो। ज़रा-ज़रा सी बातों की वजह से तुमने क्यों उनके साथ ताअल्लुक़ात ख़त्म कर लिए?

मैं उस वक़्त दादी अम्मा की बातों को न समझ सकी बल्कि हमेशा की तरह मैंने उनकी बातों का बुरा माना और उनसे नाराज़ हो गई लेकिन उन लोगों के जाने के बाद तन्हाई में मैंने दादी अम्मा की बातों पर ग़ौर किया और सोचा कि एक बार ही सही लेकिन मैं उनके तजुर्बों से फायदा ज़रूर उठाऊँगी। एक हफ़्ते के सोच-विचार के बाद आख़िर मैंने फ़ैसला किया और फूलों का गुलदस्ता लेकर अपने शौहर के साथ ससुराल गई और कोशिश की कि उनके साथ अच्छी तरह से पेश आऊं। मुझे उस दिन इतना मज़ा आया कि उससे पहले कभी नहीं आया था। इससे पहले लोगों के बारे में अच्छा सोचने की ख़ूबी और ज़िंदगी की मिठास को मैंने कभी महसूस नही किया था। उस दिन मुझे मालूम हुआ कि वह लोग मुझे कितना चाहते हैं और मेरे अब इस काम की वजह से उनके बेटे के साथ भी उनके ताअल्लुक़ात मज़बूत हो गए थे।

घर आने के बाद मेरे शौहर ने मेरे रवैय्ये में बदलाव की वजह पूछी तो मैंने उन्हें दादी अम्मा की बात बताई। यह सुनकर उन्हें बहुत ख़ुशी हुई।

अब मैं एक बड़ी उम्र की औरत यानी अपनी दादी की बातों से अपनी ज़िंदगी में अच्छा बदलाव महसूस कर रही थी। उनके तजुर्बों ने हमारी ज़िंदगियों को बदल कर रख दिया था। फिर मैं अपने शौहर के कहने पर उनके साथ दादी से मिलने और उनका शुक्रिया अदा करने उनके घर भी गई।"

इसलिए बड़ी उम्र के लोगों की क़द्र की जानी चाहिए और इसका तरीक़ा यही है कि उनके साथ अच्छा बर्ताव किया जाए, एहतेराम के साथ पेश आया जाए और उनकी ज़रूरतों को समझा जाए। दरअसल उनकी सब से बड़ी ज़रूरत मुहब्बत और तवज्जोह होती है। हो सकता है कि उनमें से ज़्यादातर को किसी चीज़ की ज़रूरत न हो, उनकी पोज़ीशन मज़बूत हो, लकिन वह अपने छोटों से सिर्फ़ मुहब्बत और तवज्जोह चाहते हों। उनकी ख़्वाहिश होती है कि उनके इर्द-गिर्द के लोग उनकी मेहनतों और कोशिशों का शुक्रिया अदा करें। इससे न तो किसी का कुछ बिगड़ता है और न ही यह काम किसी के लिए नुक़्सानदेह है लेकिन इससे बुज़ुर्गों को ख़ुशी और मसर्रत मिलती है।

यह बात भी ध्यान देने वाली है कि इज़्ज़त हमेशा एक ही तरीक़े से नही की जाती बल्कि कभी एहतेराम की शक्ल में, कभी मुहब्बत के साथ बात करके, कभी उनके साथ मश्वेरा करके और ख़ुद पर उन्हें अहमियत देकर भी की जा सकती है।

रसूले ख़ुदा[स॰] बुज़ुर्गों की अहमियत को बयान करते हुए फ़रमाते हैं, "बरकत तुम्हारे बुज़ुर्गों के साथ है।"

शायद कुछ लोग यह कहें कि हमारे बुज़ुर्ग हर वक़्त ग़ुस्से में रहते हैं, हमेशा ख़ुद को अहमियत देते हैं, हर काम में दख़लअंदाज़ी करते हैं और हमसे बेजा उम्मीदें रखते हैं।

इस तरह के लोगों को यह याद रखना चाहिए कि बुढ़ापा एक नेचुरल चीज़ है जो सबके साथ पेश आता है। इस दौरान नई ख़्वाहिशें और उम्मीदें जन्म लेती हैं। उन्हें पूरा करने के लिए नौजवानों को चाहिए कि बुज़ुर्गों पर ख़ास तवज्जोह दें और उनके मामले में सब्र व बर्दाशत से काम लें और किसी भी तरह की मुहब्बत और एहतेराम से पीछे न हटें। उनका दिल न तोड़ें, उनके आंसूओं को लापरवाही से नज़रअंदाज़ न करें, उनके साथ सख़्ती से पेश न आएं, उनकी ग़ल्तियों का क़ुसूरवार उन्हें न ठहराएं और न ही उनकी तौहीन करें क्योंकि यह काम न सिर्फ़ यह कि फ़ाएदेमंद नही होगा बल्कि उन्हें ज़िद्दी बना देगा।

ज़्यादा मुश्किल उन बुज़ुर्गों के लिए पेश आती है जिन्हें इस ढलती हुई उम्र में घर के अंदर जगह नही मिलती। उनके बच्चे और पोते उनके हक़ों को नज़रअंदाज़ करते हुए लापरवाही, उकताहट, झुंझलाहट, हिक़ारत और ग़ुस्से से पेश आते हैं। ऐसे में ज़िंदगी उनके लिए नाक़ाबिले बर्दाशत हो जाती है। दुनिया उनकी निगाहों में अंधेर हो जाती है। हो सकता है कि बहुत दबाव का शिकार होकर उनकी हिम्मत और टूट जाए।

बहुत से लोग अपने बूढ़े मां-बाप को जो अपने हाथों से ख़ुद अपना काम भी अंजाम नही दे सकते, बात करना और चलना फिरना भी उनके लिए मुश्किल होता है, वह उन्हें अलग कमरे में रखते हैं या फिर ओल्ड हाउस में छोड़ आते हैं। उनको यह मालूम नही कि उनके पैरेंट्स ख़ुद इस हाल को नही पहुंचे हैं बल्कि यह वक़्त उन पर भी आ सकता है। आइए कुछ लम्हों के लिए बैठकर सोचें और उनकी पिछली परेशानियों को न भूलें। वरना एक दिन हमारी औलाद भी हमारे साथ ऐसा ही करेंगी।

पैग़म्बरे अकरम[स॰] फ़रमाते हैं, "बड़ी उम्र वालों की इज़्ज़त व एहतेराम ख़ुदा का एहतेराम व इज़्ज़त है।"

इमाम सज्जाद[अ॰] से रिवायत है, "बड़ी उम्र के लोगों का हक़ यह है कि उनके बुढ़ापे का एहतेराम करो। उन्हें अहमियत दो और इख़्तेलाफ़ की सूरत में गुस्से में उनका सामना न करो, रास्ता चलते वक़्त उनसे आगे न बढ़ो। अगर वह जाहिलाना हरकत करें तो उन्हें बरदाशत करो, बुढ़ापे और पिछले तजुर्बों की वजह से उनका एहतेराम करो।"

बुज़ुर्गों से गुज़ारिश

अब हम कुछ बातचीत अपने मोहतरम बुज़ुर्गों के साथ करना चाहेंगे ताकि बच्चे उनका एहतेराम करें और घर के माहौल में तनाव पैदा न हो जाए।

तेज़ मिज़ाजी और बदअख़्लाक़ी से बचें

बदअख़्लाक़ी और तेज़ मिज़ाजी की वजह से लोगों के साथ दूरी पैदा होती है।

लम्बी उम्र और जिस्मानी कमज़ोरी की वजह से आपका हौसला टूट जाता है और आप दूसरों से बेजा उम्मीदें जोड़ने लगते हैं। इसलिए अपने साथ रहने वालों की मामूली सी हरकत और बात भी आपके मिज़ाज पर सख़्त गुज़रती है और आप गुस्से में आकर नाराज़गी जताने लगते हैं। यह बात दूसरों को बुरी लगती है और वह आपसे दूर होने लगते हैं।

अगर खाना आपकी पसंद का न बने, अगर आपकी बात का जवाब देर से मिले, अगर घर की चीज़ें मिज़ाज के मुताबिक़ न रखी गई हों, अगर बच्चे खेल-कूद रहे हों तो आप चीखने-चिल्लाने लगते हैं। यह बदअख़्लाक़ी और तेज़ मिज़ाजी है जिससे दूसरे परेशान होते हैं। आपको मालूम होना चाहिए कि यह हालत इस्लाम के समाजी और अख़्लाक़ी हुक्मों के ख़िलाफ़ है।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ॰] फ़रमाते हैं, "सख़्त और तेज़ मिज़ाज मत बनो क्योंकि लोग तुमसे दूर हो जाएंगे।"

इस्लाम में बुज़ुर्गों को भी ताकीद की जाती है कि वह अपने आस-पास वालों की हैसियत और मुक़ाम को पहचानें। अपनी उम्मीदों को छोटा रखें और हमेशा खुश व खुर्रम रहें और बे-वजह बहाने न बनाएं।

लेकिन कुछ बुज़ुर्ग और बूढ़े ऐसे भी होते हैं जिन्होंने अपने बच्चों और पोते-पोतियों और नवासे-नवासियों को किस्से कहानियां सुनाकर और अपने पिछले वाक़िआत और तजुर्बों को बयान करके, साथ ही मौक़े की मुनासिबत से तोहफ़े देकर प्यार व मुहब्बत के साथ उन्हें अपने गिर्द जमा कर रखा होता है। उनके वुजूद से घर और घराने का माहौल खुशगवार रहता है।

उम्मीदों में कमी

बच्चों और घर वालों को चाहिए कि वह अपने बुज़ुर्गों का एहतेराम करें और हमेशा उनका साथ दें लेकिन बूढ़ों के लिए भी ज़रूरी है कि घर वालों की हैसियत को समझें और उन पर तवज्जोह दें, साथ ही अपनी बेजा उम्मीदों को भी कम से कम रखें क्योंकि आपकी औलाद भी इंसान है, वह भी बीमार पड़ सकती है, उन्हें भी कोई मुश्किल पेश आ सकती है। कभी वह सफ़र पर गए हुए होते हैं तो कभी आपका कोई काम भूल भी सकते हैं। आज के इस मशीनी दौर में दसियों मुश्किलें उनके सामने खड़ी हैं और क़ुदरती बात यह है कि यह सब मसरूफ़ियतें आपस के ताअल्लुक़ात में कमी का सबब बन रही हैं।

हम बूढ़ों से दरख़्वास्त करते हैं कि अगर आप अपने बच्चों और घर वालों का सुकून व आराम चाहते हैं तो फिर अपनी उम्मीदों को कम करें, मुहब्बत और खुले दिल के साथ पेश आएं अपने प्यार से उन्हें अपनी तरफ़ ध्यान दिलाएं। यक़ीनन आपके सामने इसका अच्छा नतीजा आएगा। ●

सूरए फ़ातिहा की गुज़ारिश

मरहूम सै. मोहसिन अली नक़वी
(MA, LLB, PG-HRD)
पैदाइश: 09-05-1959 (शोपोर, एम.पी.)
इंतेक़ाल: 31-01-2006 (दिल्ली)
और उनकी एहलिया **मरहूमा कनीज़ हुसैन** (MA)
पैदाइश: 02-02-1950 (इलाहाबाद)
इंतेक़ाल: 15-12-2009 (इलाहाबाद)

मरहूम मोहसिन अली नक़वी स्टेट लेविल के स्पोर्टसमेन थे। बड़ोदा, गुजरात में पैट्रोफ़िल्स में पर्सनल मैनेजर रहे। फिर वहीं पर वकालत भी करते रहे। मरहूम बहुत सोशल और कल्चरल एक्टिविस्ट थे। जिसकी वजह से बड़ोदा में हर तबक़े के लोग उनको आज भी याद करते हैं। मरहूम की शादी बिलगिराम के सै. रज़ीउल हसन मरहूम की बेटी से हुई थी। मरहूम के पसमंदगान में तीन बेटियां हैं।

मरहूम की बेटियों ने मरयम के साथ तआवुन किया है जिसके लिए हम उनके शुक्रगुज़ार हैं। ख़ुदा उन्हें इसका अज्र अता फ़रमाए!

इन मरहूमीन के लिए सूरए फ़ातिहा की गुज़ारिश है:

मरहूम सै. रज़ीउल हसन
मरहूमा सै. मेहदी बेगम
मरहूम सै. सलामत हुसैन नक़वी
मरहूम सै. मुनव्वर अली नक़वी
मरहूम सै. रज़ा अब्बास ज़ैदी
मरहूमा सै. तसनीम ज़ेहरा

झूठ के नुक़सान

सच्चाई जितनी अच्छी चीज़ है झूठ उतनी ही बुरी। सच्चाई बेहतरीन सिफ़त है और झूठ बदतरीन सिफ़त है। ज़बान, इंसान के अंदरूनी एहसास और ख़यालात को बताती है। झूठ अगर दुश्मनी व हसद की बिना पर हो तो ख़तरनाक गुस्से का नतीजा है और अगर लालच या आदत की बिना पर हो तो इंसान के अंदर भड़कते हुए जज़बात का नतीजा होता है।

अगर ज़बान को झूठ का मज़ा मिल गया और बात-चीत में झूठ शामिल हो गया तो झूठ बोलने वाले की अज़मत इस तरह हवा हो जाती है जैसे पतझड़ के मौसम में पेड़ के पत्ते या शीशों से बने हुए मकान पर बरसते हुए पत्थर! झूठ इंसान की नापाकी व ख़यानत की रूह को मज़बूत करता है और ईमान के भड़कते हुए शोलों को बुझा देता है। झूठ मोहब्बत, युनिटी और भाईचारे के रिश्तों को तोड़ देता है और समाज में दुश्मनी और नफ़रत के बीज बो देता है। गुमराहियों का ज्यादातर हिस्सा झूठे दावों का नतीजा होता है। बुरे लोग अपने बुरे मक़सदों को पूरा करने के लिए अपनी मीठी ज़बान और झूठी हमर्ददी से सीधे-सादे लोगों को अपनी तरफ़ ख़ीच लेते हैं। झूठा आदमी कभी यह सोचता ही नहीं है कि कोई दूसरा उसके राज़ों को जान लेगा। इसी इत्मिनान की बुनियाद पर अपनी बातचीत में ग़ल्तियों का शिकार होता रहता है और कभी शदीद रुसवाई से दो चार ही जाता है।

इस बुरी आदत के आम होने की एक वजह जिसने पूरे समाज को गंदा कर दिया है वह मशहूर मुहावरा है जो हर एक की ज़बान पर होता है: "वह झूठ जिससे फ़ाएदा पहुंचे उस सच से अच्छा है जिससे फ़ितना और फ़साद पैदा हो जाए।" यही वह रेशमी पर्दा है जिसने इस बुराई को छुपा रखा है और आमतौर पर लोग अपने सफ़ेद झूठ को सही करने के लिए इसी मुहावरे का सहारा लेते हैं लेकिन इस बात की तरफ़ ध्यान नहीं देते कि अक़्ल और शरीअत ने ख़ास शर्तों के साथ इसको जाएज़ बताया है।

अक़्ल व शरीअत का यह फ़ैसला है कि अगर किसी मुसलमान की जान, आबरू या बहुत ज़्यादा माल को ख़तरा हो तो उसकी हर तरह से मदद की जा सकती है। यहां तक कि अगर झूठ बोलकर इन तीनों में से किसी एक को बचाया जा सकता हो तो झूठ भी बोला जा सकता है। लेकिन यह सिर्फ़ ज़रूरत ही के वक़्त हो सकता है क्योंकि ज़रूरत हराम को मुबाह कर देती है लेकिन इसके साथ यह शर्त है कि इंसान इसका इस्तेमाल सिर्फ़ ज़रूरत भर ही कर सकता है, ज़रूरत से ज़्यादा झूठ नही बोला जा सकता।

अगर इस मसलेहत के दायरे को अपने ज़ाती फ़ाएदे और ख़्वाहिशों तक फ़ेला दिया जाए और हम यह समझ लें कि अपनी ज़ाती मसलेहत व फ़ायदा और शहवत व ख़्वाहिश के लिए भी इसी क़ायदे पर अमल किया जा सकता तो फिर बिला मसलेहत वाले झूठ के लिए कोई जगह बाक़ी नही रहेगी। जैसा कि एक बहुत बड़े स्कॉलर ने लिखा है, "वैसे तो हर चीज़ की एक वजह होती है और न भी हो तो हम अपने अमल के लिए बहुत सी वजहें पैदा कर सकते हैं और यही वजह है कि मुजरिम से जब उसके जुर्म की वजह पूछी जाती है तो वह अपने जुर्म के लिए पचासों बहाने, दलीलें और वजहें तलाश कर लेता है और इसीलिए पूरी दुनिया में जो झूठ बोला जाता है इसमें कोई न कोई फ़ाएदा और अच्छाई का पहलू बहेरहाल होता है और अगर ऐसा न हो तो वह झूठ बेकार हो जाएगा और फिर इसमें कोई ज़्यादा नुक़्सान भी न रहेगा।"

जिस चीज़ में भी इंसान का ज़ाती फ़ायदा होता है उसको वह फ़ितरी तौर से अच्छा समझता है और फिर जब वह अपने ज़ाती फ़ाएदे को सच बोलने की वजह से ख़तरे में देखता है या वह झूठ बोलने में अपना फ़ायदा देखता है तो धड़ल्ले से झूठ बोलता है और दूर-दूर तक उसकी बुराई का तसव्वुर भी नहीं करता क्योंकि सच्चाई में शर व फ़ितना देखता है और झूठ बहेरहाल एक बुराई है। अगर शर्तों के साथ झूठ बोलकर बुराई को दूर किया गया तो यह मतलब नहीं है कि वह झूठ अच्छा हो गया बल्कि इसका मतलब यह है कि एक ज़्यादा बुरी चीज़ को कम बुराई वाली चीज़ के ज़रिए दूर किया गया है।

बयान और ज़बान की आज़ादी की अहमियत फ़िक्र से बहुत ज़्यादा है क्योंकि अगर सोच में किसी तरह की ग़लती हो गई तो उसका नुक़्सान सिर्फ़ फ़िक्र करने वाले को पहुंचेगा लेकिन अगर बातचीत में ग़लती हो गई तो उसका असर पूरे समाज पर पड़ेगा।

इमाम ग़ज़ाली कहते हैं, "ज़बान एक बहुत बड़ी नेमत है और ख़ुदा का एक बड़ा ही प्यारा और क़ीमती तोहफ़ है। इंसानी जिस्म का यह हिस्सा, ज़बान अगरचे बहुत ही छोटा है लेकिन इताअत व गुनाह के ऐतबार से बहुत ही बड़ा है।" कुफ़्र या ईमान का इज़हार ज़बान ही से हुआ करता है और यही दोनों चीज़ें बंदगी व सरकशी की मेराज हैं। इसके बाद कहते हैं, "वही ज़बान की बुराईयों से बच सकता है जो उसपर दीन की लगाम लगा दे और सिवाए उन जगहों के कि जहां दुनिया व आख़िरत का फ़ाएदा हो किसी भी जगह आज़ाद न करे।"

बच्चों में झूठ जड़ न पकड़ने पाए, इसके लिए बच्चों से कभी भी झूठ और ग़लत बात नही करना चाहिए क्योंकि बच्चे जिन लोगों के साथ हर वक़्त रहते हैं नेचुरल तौर से उन्हीं की बातों को अपनाने की कोशिश करते हैं। घर बच्चों की परवरिश के लिए सबसे अहम जगह है।

अगर झूठ और मन-गढ़त बातें आम हो गईं और पैरेंट्स की कहनी और करनी में फ़र्क़ हो गया तो किसी भी क़ीमत पर अच्छे व सच्चे बच्चे परवरिश पाकर नहीं निकल सकते। मोरीश टी० यश कहते हैं, "हक़ीक़त के मुताबिक़ सोचने की आदत, हक़ीक़त के मुताबिक़ बात करने की सीरत, हर सच व हक़ीक़त को क़ुबूल करने की फ़ितरत सिर्फ़ उन्हीं लोगों का तरीक़ा होता है जिनकी परवरिश बचपन ही से इसी माहौल में हुई हो।

नौकरी पेशा औरतों के मसले और उनका हल

■ सईदा बीबी

इसमें कोई शक नही है कि औरत को मां, बेटी, बहन, बहू और बीवी के रूप में अहम रोल अदा करना पड़ता है। साथ ही आज के ज़माने में उसे घरेलू ख़र्चों को चलाने में शौहर का साथ भी देना पड़ता है।

इस्लाम ने औरतों का अस्ल मुक़ाम उनका घर ठहराया मगर इस पर पाबंदी नही लगाई कि वह ज़रूरत के तहेत भी बाहर नहीं जा सकती है। जहां तक औरत का जॉब करने के लिए घर से बाहर निकलने की बात है तो यह हक़ीक़त माननी पड़ेगी कि बहुत कम तादाद उन औरतों की है जो शौक़ से मज़दूरी करती हैं बल्कि बहुत सी मजबूरियां, लाचारियां और परेशानियां होती हैं जो औरत को मेहनत-मज़दूरी करने पर तैयार करती हैं। कई वजहें हैं जो औरत को घर से बाहर फाइनेंशल मैदान में भी हिस्सा लेने पर मजबूर करती हैं जैसे आज के ज़माने में मंहगाई की वजह से औरत काम करने पर मजबूर है। एक मर्द दस लोगों वाले कुंबे को पालता है। इस सूरते हाल में ऐशो आराम तो दरकिनार बुनियादी ज़िंदगी की ज़रूरतें भी मुश्किल से पूरी होती हैं। अक्सर घर में औरतें पढ़ी-लिखी हों या कोई हुनर जानती हों तो उनको मर्दों के लिए हेल्पिंग हैंड बनना पड़ता है ताकि पूरा खानदान खुशहाल और अच्छी ज़िंदगी गुज़ार सके।

कभी-कभी औरत के घर से बाहर काम करने की एक यह भी वजह है कि घर में कोई मर्द नही होता तो औरत को घर से बाहर नौकरी करनी पड़ती है। बेवा को अपने बच्चों का पेट पालने के लिए काम करना पड़ता है। चाहे उसके लिए उसे लोगों के घरों में काम करना हो या बाहर दफ़्तरों में जॉब करनी हो और वह सब कुछ करती है। नौजवान लड़कियों को जहेज़ की लम्बी-लम्बी लिस्ट को पूरा करने के लिए जॉब करनी पड़ती है ताकि वह मां-बाप पर बोझ न बनें। मर्दों के मुक़ाबले में औरतों की तादाद ज़्यादा होने से जहां दूसरे मसलों ने जन्म लिया वहां एक औरत की फ़ाइनेंशल ज़िम्मेदारी ने भी। इसलिए मुल्क की तरक़्क़ी में मर्दों के साथ औरतों का साथ भी ज़रूरी हो गया। इसलिए औरत मर्दों के हाथ बटाने के लिए जॉब करती है।

आज औरत फ़ैक्ट्रियों, दफ़्तरों, अस्पतालों और हर तरह के निजी इदारों यहाँ तक कि दुकानों, पेट्रोल पम्पों और सड़कों पर पुलिस की वर्दी में नज़र आती है। जितनी ज़्यादा औरत बिज़ी है उतनी ही औरत को तकलीफ़ दी जाती है जैसे लड़कियों को छेड़ना और तंग करना, दफ़्तरों में काम-काज करने वाली औरतों की तादाद अगरचे थोड़ी है मगर उनके मसले कई तरह के हैं। औरत अपनी बेहतरीन सलाहियतों के बावजूद अपने साथी मर्द मुलाज़िमों चपरासी से लेकर आला अफ़सरों तक मक़ाम नही हासिल कर सकती जो उसके अपने साथी मर्दों को हासिल होता है। औरतों को कम और कमज़ोर समझना, जिंसी तौर पर परेशान करना, दूसरे और कई मसले झेलने पड़ते हैं।

सबसे अहम मसला यह है कि औरत मर्द के बराबर काम करती है मगर उसे तन्ख़ाह कम दी जाती है। नौकरी करने वाली औरतों में शादीशुदा औरत का अहम मसला शौहर से ज़ेहनी हम आहंगी पैदा करना और बच्चों की परवरिश का सामने आता है। हमारे समाज में नौकरी करने पर शौहर और दूसरे लोग जो औरत से ताअल्लुक़ व रिश्तेदारी रखते हैं मदद न होने का मुज़ाहिरा करते हैं। औरत जब बाहर की ज़िम्मेदारी पूरी करती है तो उसे घरेलू ज़िम्मेदारियों को पूरा करने में कई मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। पर्दे में औरत की नौकरी पर तो बहुत सों को ऐतराज़ है क्योंकि औरत को पर्दे के अंदर आतंकवादी समझा जाता है। जैसे मर्दों की लम्बी दाढ़ी से खतरा महसूस किया जाता है।

औरत को ज़रूरत की चीज़ों को खरीदने के लिए एडर्वटाइज़मेंट की ज़ीनत बनाना, उसकी पाकीज़गी को दावं पर लगाना और उसको रौशन ख़्याली का नाम देना यह मसाएल ही तो हैं। क्या ऐसी औरत जो मार्डन बनने के नाम पर अपनी पाकीज़गी को खो बैठे, अच्छी मां कहला सकती है? नही! कभी नहीं।

औरत को तरह-तरह से तंग किया जाता है जैसे एक प्राइवेट सर्वे के मुताबिक़ सरकारी अस्पतालों की नर्सों से लिए गए इन्टरव्यू में 58% नर्सों ने कहा कि साथ काम करने वाले लोग और मरीज़ों के रिश्तेदार उन्हें तंग करते हैं। यह औरतें बाइज़्ज़त तौर पर नौकरी करना चाहती हैं। इसी तरह मारपीट के बारे में सवाल करने पर 93% औरतों ने बताया कि उनके साथ काम करने वाले मर्द या उनके बॉस उनको परेशान करते हैं। उनको ज़ाती ताअल्लुक़ात क़ायम करने पर मजबूर करते हैं। मांग पूरी न करने पर नौकरी ख़त्म कर देने की धमकी देते हैं।

मज़दूर औरतें जो खेतों में काम करती हैं या भट्टों में ईंटें बनाती हैं या फिर गारा, मिट्टी का काम करती हैं वह सबसे ज़्यादा मुसीबत उठाती हैं। उनकी हालत दूसरी तमाम औरतों के मुक़ाबले में ज़्यादा ख़राब होती है। सारा दिन मर्दों के साथ धूप और गर्मी में काम करने के बाद मज़दूरी भी कम दी जाती है और छोटी-छोटी ग़ल्तियों पर बेइज़्ज़ती अलग की जाती है। नौकरी पेशा औरतों का सबसे

बड़ा मसला सफ़र में सहूलतों की कमी भी है। जो थोड़ी बहुत सहूलतें अगर हैं तो स्टाप पर औरतों और खास तौर पर लड़कियों से राह चलते लड़कों की बदतमीज़ी तो आए दिन देखने में आती है। काम करने की जगहों पर या पब्लिक जगहों पर औरतों के लिए टवायलेट्स की सहूलतों की कमी भी एक अहम मसला है।

समाजी दबाव, ग़लत बर्ताव, आने-जाने की पाबंदी की वजह से औरतें एजुकेशन व आर्ट की सतेह पर भी नाइंसाफ़ी का शिकार होती हैं। औरतों के लिए मुलाज़िमत का कोई खास कोटा भी नही होता जो एक तरह से नाइंसाफ़ी है। ऐसी औरतें जो देहातों, गांवों या दूसरे शहरों से नौकरी के लिए आती हैं उनके लिए एक अहम मसला सस्ते और साफ़ हास्टल्स की कमी है जिसकी वजह से अच्छी नौकरी मिलने पर भी वह नौकरी नही कर सकतीं।

औरतों को पेश आने वाले मसलों का हल बहुत ज़रूरी है ताकि औरत को उसके हक़ मिलें और वह अपनी ज़िम्मेदारियों को बेहतरीन तरीक़े से पूरा कर सके। औरतों के मसलों को हुकूमत की पालिसियों और स्कीमों के ज़रिए हल किया जा सकता है। औरतों की तरक़्क़ी के लिए जो हुकूमती सतेह पर क़दम उठाए जाते हैं उनको सही मायनों में रौशन ख़्याली पर बेस्ड होना चाहिए। औरतों की तरक़्क़ी और हक़ों के लिए सही रास्ता चुना जाए।

आज की औरत को जो हर मैदान में पेश-पेश है मर्दों की तरह उसके मसलों को भी हल करना चाहिए। इसलिए नौकरी पेशा औरतों के मसलों और मुश्किलों के हल के लिए सरकारी व ग़ैर सरकारी सतेह पर नीचे दिए गए क़दम उठाने की ज़रूरत है:

1- औरतों की नौकरी का मुनासिब कोटा तय किया जाए।

2- औरतों की इज़्ज़त व हुरमत को सेक्योरिटी दी जाए।

3- पर्दे के बारे में अलग-अलग ख़्याल के लोगों के अलग-अलग नज़रिये हैं। इन तमाम ख़्यालात के लोगों को क़ुरआन व हदीस से मदद लेनी चाहिए ताकि पर्दे के बारे में ख़ुदा के हुक्मों का पूरा-पूरा ख़्याल रखा जा सके। पर्दे की वजह से औरतों को तंग करना या पर्दा न करने पर मजबूर करना छोड़ दिया जाए।

4- टीचर्स की इज़्ज़त की जाए और उनकी नौकरी को सेक्योरिटी दी जाए।

5- इस्लाम के घरेलू ख़र्चों को चलाने वाले सिस्टम को पहचनवाया जाए।

6- बेसहारा देहाती औरतों की ज़िंदगी के लिए छोटे मंसूबों की तैयारी का आर्गनाइज़ेशन बनाया जाए जो उन्हें छोटी सतेह के कारोबार में माहिर बना सके और उन्हें छोटे बिला सूद कर्ज़े दिए जाएं।

7- प्राइवेट सेक्टर में औरतों की तरक़्क़ी के लिए नौकरी की शर्तों, तंख़्वाह या सहूलतों पर एक बार फिर ग़ौर किया जाए और औरत के एक्सप्लॉयटेशन को खत्म किया जाए।

8- नौकरी की जगह पर औरत को परेशान किए जाने वाले काम को बड़ा जुर्म माना जाए।

9- बड़े शहरों और क़स्बों में नौकरी पेशा औरतों के लिए मुफ़्त या सस्ती दरों पर हास्टल बनवाए जाएं।

10- पब्लिक ट्रांसपोर्ट को बेहतर बनाया जाए और औरतों के लिए खास ट्रांसपोर्ट का इंतेज़ाम किया जाए।

11- पढ़े-लिखे या तहज़ीब याफ़्ता ड्राइवर और कंडेक्टरों को भर्ती किया जाए।

12- शादीशुदा औरतें और ख़ास तौर पर जिनके बच्चे छोटे हों उनके साथ ख़ास रिआयत बरती जाए।

13- घनी आबादी वाले इलाक़ों में औरतों के लिए अलग आम टवायलेट्स बनाए जाएं। इसी तरह ऐसे तमाम दफ़्तरों में जहां औरतें नौकरी करती हैं उनके लिए अलग टवायलेट्स बनाए जाएं।

14- औरतों के बनाए हुए प्रोडक्ट्स की मार्केटिंग के लिए ऐसे इदारों की मदद हासिल की जाए जो उन्हें बेहतर मशवरे और मदद दे सकें।

15-औरतों के लिए रोज़गार बढ़ाया जाए।

16- ग़रीबी से जन्म लेने वाले तरह-तरह के मसलों जैसे भट्टे पर मज़दूरी करने वाली औरतों के सेक्चुअल एक्सप्लॉएटेशन को ख़त्म किया जाए।

17- नौकरी पेशा औरतों को तमाम बुनियादी सहूलतें उनके वक़्त पर पहुँचाई जाएं।

18- इस्लामी रिवायात और उसूलों को सामने रखते हुए शुरू से ही मर्दों के दिलों में औरतों की इज़्ज़त का जज़्बा उजागर किया जाए और उन्हें नज़रें नीची रखने पर उभारा जाए।

औरतों को चाहिए कि वह अपनी पाकीज़गी को बर्बाद न करें, पर्दा करें, इस्लामी रिवायात को अपनाएं और अपने मक़ाम को पहचानें।

खुलासा यह है कि मर्दों की तरह इस्लाम ने औरत को भी खास मुक़ाम दिया है। ख़र्चे चलाने की ज़िम्मेदारी तो मर्दों की है लेकिन अगर किसी मजबूरी से औरत यह ज़िम्मेदारी भी अपने कंधों पर उठाती है तो बजाए इसके कि परेशानियों और मसाएल का बोझ उसके कंधों पर डाला जाए, उसके फ़ाइनेंशल मक़ाम को माना जाए और मर्दों की तरह औरतों के हक़ों की भी हिफ़ाज़त की जाए। इस्लाम ने तो हमेशा औरत को इज़्ज़त दी है चाहे कोई भी मैदान हो। इसलिए अगर औरतें रोज़ी-रोटी की ज़िम्मेदारी भी पूरी कर रही हैं तो फिर हमें उनके हक़ों की जंग में भी हिस्सा लेना चाहिए और कभी मज़दूरों की तरह आदम की बेटियों को भी ख़िराजे तहसीन पेश करना चाहिए। जहां तक हो सके अपने वतन की तरक़्क़ी व खुशहाली के सफ़र में अपनी आधी आबादी से ज़्यादा को भी ले कर चलें और इस तरक़्क़ी व खुशहाली की राह पर यूँ ही आगे बढ़ते रहें। सैय्यद अली अब्बास इसी आदम की बेटी के बारे में यूं कहते हैं:

ऐ क़ौम की बेटी तुझे एक गीत सुनाऊं
जीने की ज़माने में तुझे रीत सुनाऊं
सदा हक़ के रस्ते पर तू चलते रहना
अंधेरों में सूरज तुलू करते रहना!

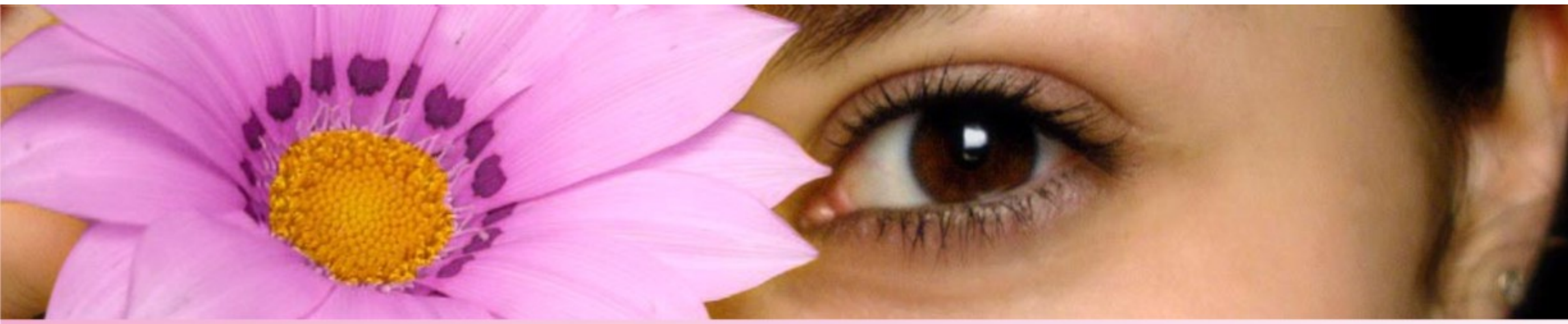

गुलाबी गुलाब

गुलाबी गुलाब पसंद करने वाले प्यार व खुलूस और पुर-खुलूस मोहब्बत करने वाले होते हैं। अल्लाह की मख़्लूक़ की ख़िदमत करने वाले और इन्तिहाई सेंसिटिव और मोहब्बत निछावर कर देने के साथ-साथ रामांटिक भी होते हैं। इनके दिल हर तरह के दिखावे से पाक होते हैं। हर हाल में खुश व खुर्रम नज़र आते हैं, किसी हद तक यह ख़्वाबों की दुनियां की ज़िंदगी बिताने वाले होते हैं।

वनीला का फूल

वनीला का फूल पसंद करने वाले तरक़्क़ी पसंद, हल्के अंदाज़ और ठंडे मिज़ाज के लोग होते हैं। यह ख़्वाबों की दुनिया में मगन होते हैं और पानी से क़रीब होना इन लोगों की शख़्सियत की ख़ास बात होती है। ख़्वाबों को हक़ीक़त बनाने की तलाश में होते हैं। यह लोग मोहब्बत और खुलूस की मिट्टी से गुंधे होते हैं, लोगों के लिए मददगार साबित होते हैं।

नरगिस का फूल

नरगिस का फूल पसंद करने वाले हमेशा हालात का रोना रोते हैं। हर नाकामी पर रो-धो कर और बचकाना तसल्लियां देकर खुद को मुतमइन कर लेते हैं। हर बात का निगेटिव पहलू देखते हैं यह लोग मुश्किल पसंद और परेशान करने वाले हालात का शिकार नज़र आते हैं। दूसरों को दुखी करने के साथ-साथ खुद भी दुखी होते हैं। इनकी शख़्सियत अन-बैलेंस्ड होती है।

फूल और आपकी शख़्सियत

लाल गुलाब

लाल गुलाब पसंद करने वाले लोग हमेशा मोहब्बत और फ़रेब की दुनिया में डूबी रहते हैं, ख़ासे लापरवाह होती हैं, चंचल-पन उनकी शख़्सियत की खास बात होती है। यह लोग साफ़ ज़ेहन और खुले दिल रखने के साथ-साथ साफ़ बात करने का मुज़ाहिरा करने में भी माहिर होते हैं। यह लोग माफ़ कर देने वाली सिफ़त भी रखते हैं।

सफ़ेद गुलाब

सफ़ेद गुलाब पसंद करने वाले लोग पुरअमन, धीमें मिज़ाज रखने के साथ-साथ पाकीज़ा सूरत व सीरत की भी मालिक होते हैं। इनके दिल बुग्ज़, रियाकारी और हसद व जलन से पाक होते हैं, यह लोग नाज़ुक बदन वाले भी होते हैं।

पीला गुलाब

पीला गुलाब पसंद करने वाले लोग उदास और मायूसी वाले होते हैं। यह हर हालत में नाशुक्रापन करते हैं। यह लोग झगड़ालू, हसद करने वाले और हर पहलू में उदास और ग़म वाली चीज़ें तलाश करते हैं।

काला गुलाब

काला गुलाब पसंद करने वाले रियाकार, फ़रेबी और झूठे होते हैं। साथ ही सीरत के काले भी होते हैं जिससे दूसरों को काफ़ी ज़ेहमतें और परेशानियां होती है। यह लोग अफ़वाहें फैलाने और लड़ाई-झगड़ें में माहिर होते हैं और बे वजह लोगों को तंग करते हैं, यह दो-रूख़ी शख़्सियत के मालिक होते हैं।

सूरजमुखी का फूल

सूरजमुखी का फूल पसंद करने वाले लोग हमेशा तेज़ी से तरक़्क़ी करना पसंद करते हैं, सूरज की तरह आसमान पर नज़र आने और मोहब्बत व खुलूस के साथ-साथ लोगों की मदद करने का जज़्बा भी रखते हैं। कामयाबियां भी हासिल करते हैं और हर नाकामी उन्हें एक नई कामयाबी की ख़ुशख़बरी देती है।

मोतिया के फूल

मोतिया के फूल पसंद करने वाले लोग रोमांटिक होते हैं और सदा अपने महबूब के क़रीब रहना पसंद करते हैं। यह लोग बे ज़रर और बहुत ज़्यादा सेसिंटिव नेचर वाले होते हैं, अमन-पसंद क़िस्म के होते हैं। ख़्वाब को हक़ीक़त में देखने के ख़्वाहिशमंद होते हैं लेकिन हक़ीक़त से क़रीब भी होते हैं।

चमेली का फूल

चमेली और चम्पा के फूल पसंद करने वाले हर वक़्त ख़्यालात और ख़्वाबों की दुनिया में रहना पसंद करते हैं और हर एक को मोहब्बत की नज़र से देखते हैं और आमतौर पर रोज़मर्रा की चीज़ों में भी रोमांस का कोई न कोई पहलू तलाश कर लेते हैं। बहुत पुर खुलूस, सेंसिटिव और मोहब्बत निछावर करने वाला नेचर रखते हैं। साथ ही हर किसी के लिए रहमत का ज़रिया होते हैं। ●

कौनसा फूल
किस चीज़ की निशानी है?

लाल गुलाब- मोहब्बत की निशानी

पीला गुलाब- उदासी व ग़म की निशानी

सफ़ेद गुलाब- पाकीज़गी की निशानी

नीला गुलाब- ख़ुशी की निशानी

गुलाबी गुलाब- प्यार व खुलूस की निशानी

गेंदा- ताज़गी की निशानी

वनीला- ठंडक व ताज़गी की निशानी

मोतिया के फूल- ख़ुशी की निशानी

सूरजमुखी- सेहत की निशानी

नरगिस का फूल आँसुओं की निशानी

सदाबहार का फूल हमेशा बाक़ी रहने वाली ख़ुशी की निशानी

रात की रानी- ख़्वाबों की दुनिया में ले जाने वाले ख़्यालों की निशानी

काला गुलाब परेशानी और डरावने

قرض حسنه

इमामों की ज़िन्दगी में क़र्ज़ुल हसना की अहमियत

■ हुज्जतुल इस्लाम मुहम्मद मुहम्मदी इश्तेहारदी

इस्लामी उसूलों में से एक खास उसूल क़र्ज़ुल हसना देना है। क़ुरआन ने भी इसको ख़ास अहमियत दी है और इमामों की ज़िंदगी में भी इस बारे में ख़ास एहतेमाम नज़र आता है।

क़र्ज़ुल हसना के बारे में हम इन तीन चीज़ों पर बात करेंगे :-

1-क़र्ज़ुल हसना के मायने
2-क़ुरआन में क़रज़ुल हसना
3-क़र्ज़ुल हसना और इमामों की ज़िंदगी

क़र्ज़ुल हसना के मायने

अरबी ज़बान में क़र्ज़ के मायने काटने के हैं। इसीलिए कैंची को मिक़राज़ कहते हैं क्योंकि वह काटती है। क़र्ज़ुल हसना बिना सूद वाले कर्ज़ को कहते हैं। बिना सूद के लिए इस लफ़्ज़ के इस्तेमाल से पता चलता है कि इंसान को उसी वक़्त इस नेक काम की तौफ़ीक़ हासिल हो सकती है जब वह माल व दौलत से अपने जुड़ाव को ख़त्म कर दे वरना उसे यह तौफ़ीक़ हासिल नही होगी। काटने के दूसरे मायने यह हैं कि क़र्ज़ देने वाला अपना कुछ माल अलग करके क़र्ज़ लेने वाले को दे देता है।

याद रहे कि क़र्ज़ देने का तअल्लुक़ सिर्फ़ रक़म से नही है बल्कि चीज़ें भी क़र्ज़ के तौर पर दी जाती हैं। जैसे आपके पड़ोसी को अपने घर में शादी के लिए बर्तनों की या किसी और चीज़ की ज़रूरत है और आप उसे एक दिन, एक हफ़्ता या एक महीने के लिए उसे वह चीज़ दे देते हैं तो इसे भी क़र्ज़ुल हसना ही कहा जाता है।

खुलासा यह कि माली बख़्शिश की तौफ़ीक़ का तअल्लुक़ व जुड़ाव के बंधन को तोड़ने और काटने से है क्योंकि अगर इंसान दुनिया की दौलत से जुड़ा हो और उससे अपने दिल को अलग न करे तो वह किसी ज़रूरतमंद को बिला सूद क़र्ज़ा बिल्कुल नही दे सकता।

कहते हैं कि इबादतों की दो क़िस्में हैं : माली और ग़ैर माली। नमाज़, रोज़ा वग़ैरा ग़ैर माली इबादतें हैं जबकि खुमुस, ज़कात, क़रज़ुल हसना वग़ैरा, यह माली इबादतें हैं। माली इबादतों में जेब से माल निकाल कर देना होता है और माल-दौलत से लगाव कम करना बहुत मुश्किल है।

क़र्ज़ुल हसना न सिर्फ़ यह कि एक समाजी मसला है बल्कि यह एक अख़्लाक़ी सिफ़त भी है क्योंकि मुहब्बत व को-आप्रेशन का जज़्बा जो कि एक अहम अख़्लाक़ी सिफ़त है, यह सोसाइटी में क़र्ज़ुल हसना के रिवाज को फैलाता है। साथ ही यह नेक काम भाईचारे और मेहरबानी के जज़्बात को भी बढ़ाता है और इससे समाज सूद और उसके खतरनाक असर से बचा रहता है। इसीलिए इस्लामी अहादीस में इसे मोमिन का एक हक़ बताया गया है। इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] मोमिन पर मोमिन के हक़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं, "मोमिन का मोमिन पर हक़ यह है कि उसके ग़म को दूर करे और उसके क़र्ज़ को अदा करे।"

क़ुरआन और क़र्ज़ुल हसना

क़ुरआने मजीद में 13 बार अलग-अलग अल्फ़ाज़ में क़र्ज़ का ज़िक्र आया है और इस पर ज़ोर दिया गया है। जहां भी 'क़र्ज़' का लफ़्ज़ आया है, उसके फौरन बाद 'हसना' भी है। इसीलिए इस्लाम में बिना सूद क़र्ज़ को क़रज़ुल हसना कहा जाता है। अल्फ़ाज़ की यह तरकीब बता रही है कि क़र्ज देने का काम 'अच्छे' तरीक़े से किया जाना चाहिए। इस 'अच्छाई' को हम कुछ चीज़ों में देख सकते हैं :

1- इज़्ज़त के साथ
2- एहसान जताए बग़ैर
3- मुनाफ़े की उम्मीद रखे बग़ैर
4- अल्लाह की मर्ज़ी के लिए
5- शौक़ व दिलचस्पी के साथ क़र्ज़ देकर।

क़र्ज़ुल हसना के बारे में नाज़िल होने वाली आयातों में से हम तीन आयातों की तरफ़ इशारा कर रहे हैं :-

1- सूरए माएदा की आयत नम्बर 12 में खुदा बनी इस्राईल से फ़रमाता है, "...ख़ुदा की राह में क़र्ज़ुल हसना दिया तो हम यक़ीनन तुम्हारी बुराईयों से दरगुज़र करेंगे और तुम्हें उन बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी।"

इस आयत में क़र्ज़ुल हसना के बारे में कुछ बातें कही गई हैं :-

पहली बात यह कि यह हुक्म कितना अहम है कि इसे नमाज़, ईमान और अल्लाह के रसूलों की मदद के बाद बयान किया गया है।

दूसरी बात यह कि यह हुक्म पिछले मज़हबों में भी खुदा का एक अहम हुक्म रहा है।

तीसरी बात यह कि इसका अज्र गुनाहों की बख़्शिश और नेमतों से भरी हुई जन्नत है।

चौथी बात यह कि क़र्ज़ुल हसना, खुदा को क़र्ज़ देना है यानी इसे खुदा की क़ुबूलियत का शरफ़ हासिल है और खुदा अपना हाथ ज़रूरतमंद

के हाथ की जगह रख देता है।

2- सूरए मुज़म्मिल की आयत नम्बर 20 में ख़ुदा फ़रमाता है, ''नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और अल्लाह को क़र्ज़ुल हसना दो।''

इस आयत में तीन बातें कही गई हैं :

1- क़र्ज़ुल हसना का ज़िक्र, नमाज़ और ज़कात के बाद तीसरे हुक्म के तौर पर आया है, जिससे उसकी अहमियत का अंदाज़ा होता है।
2- क़र्ज़ुल हसना, ख़ुदा को क़र्ज़ देना है। यानी क़र्ज़ देने वाला ख़ुदा से लेन-देन करता है और ख़ुदा उसका क़र्ज़ क़ुबूल करता है।
3- इस पाकीज़ा उसूल पर नमाज़ और ज़कात की तरह बड़े पैमाने पर अमल होना चाहिए इसीलिए इस आयत में जमा का सीग़ा इस्तेमाल किया गया है ताकि तमाम मर्द और औरतें इस हुक्म में शामिल हो जाएं।
3- सूरए तग़ाबुन की आयत नम्बर 17 में है, ''अगर तुम अल्लाह को क़र्ज़ुल हसना दोगे तो वह तुम्हारे लिए उसे कई गुना बढ़ा देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बड़ा क़द्र शनास, बुर्दबार है।''

इस आयत में भी क़र्ज़ देने की अहमियत के बारे में कुछ बातें कही गई हैं :

1- मोमिनों को क़र्ज़ देना, ख़ुदा को क़र्ज़ देना है और ख़ुदा उसे क़ुबूल करता है।
2- क़र्ज़ देने से नेमतों में क़र्ज़ की मिक़दार से कई गुना ज़्यादा इज़ाफ़ा होता है।
3- इससे गुनाहों की बख़्शिश होती है।
4- अल्लाह क़र्ज़ देने वाले का शुक्रिया अदा करता है यानी उसके काम को क़ुबूल करता है और दुनियावी और उख़रवी अज्र देकर उसका बदला देता है।

हमारे मासूमीन[अ॰] और क़र्ज़ुल हसना की अहमियत

मुहम्मद व आले मुहम्मद ने अपनी ज़िंदगियों में क़र्ज़ुल हसना को बहुत अहमियत दी है और वह ख़ुद इस मामले में आगे-आगे रहते थे और अपने पैरवकारों से इस अहम काम को करने पर ज़ोर दिया करते थे।

वसाएलुश शिया जो कि शियों की एक अहम फ़िक़ही किताब है, इसकी जिल्द नम्बर 13 में 134 रिवायतें क़र्ज़ुल हसना और इसके अज्र के बारे में नक़्ल हुई हैं।

कुछ हदीसें

क़र्ज़ुल हसना के अज्र के बारे में कुछ रिवायतें यह हैं :

1- रसूले ख़ुदा[स॰]: ''जो अपने मुसलमान भाई को क़र्ज़ देगा, उसे हर दिरहम के मुक़ाबले में 'रिज़वा' के पहाड़ों में से कोहे अहद और कोहे तूर के बराबर नेकियां मिलेंगी और अगर अपना क़र्ज़ वापस लेने में नर्मी से काम लेगा तो आंखों को चकाचौंध कर देने वाली रौशन बिजली की तरह बग़ैर हिसाब और बग़ैर अज़ाब के पुले सिरात से गुज़र जाएगा।''
2- इमाम सादिक़[अ॰]: ''जो मुसलमान ख़ुदा की ख़ुशनूदी के लिए किसी मुसलमान को क़र्ज़ देगा तो ख़ुदा उसका अज्र सदक़े की तरह शुमार करेगा, यहां तक कि वह क़र्ज़ उसे वापस लौटा दिया जाए।''
3- रसूले अकरम[स॰]: ''अगर कोई इंसान किसी मोमिन को उसकी सहूलत तक के लिए क़र्ज़ दे तो उसका माल ज़कात की तरह है (यानी उसे ज़कात का सवाब मिलेगा) और क़र्ज़ देने वाला क़र्ज़ की वापसी तक फरिश्तों के दरूद में शामिल होगा।''
4- इमाम जाफर सादिक़[अ॰]: ''जन्नत पर लिखा हुआ है सदक़े का अज्र दस गुना और क़र्ज़ का अठ्ठारह गुना है। क़र्ज़ का अज्र सदक़े से ज़्यादा इसलिए है क्योंकि क़र्ज़ लेने वाला बिना ज़रूरत क़र्ज़ नहीं लेता लेकिन सदक़ा लेने वाला कभी बिना ज़रूरत भी सदक़ा ले लेता है।''

क़र्ज़ुल हसना दे सकने के बाद न देने वाले की सज़ा

बहुत सी रिवायतों में उन लोगों को सख़्त सज़ाओं से डराया गया है जो दे सकने के बावजूद भी ज़रूरतमंदों को क़र्ज़ुल हसना देने से इंकार कर देते हैं। एक रिवायत में रसूले इस्लाम[स॰] फरमाते हैं, ''जिस शख़्स से उसका मुसलमान भाई (माली मुश्किलों) की शिकायत करे और वह उसे क़र्ज़ न दे तो ख़ुदा उस पर जन्नत को हराम कर देता है।''

एक और रिवायत में है, ''जिस शख़्स का मुसलमान भाई क़र्ज़ का ज़रूरतमंद हो और वह उसको दे सकता हो लेकिन न दे तो अल्लाह उस पर जन्नत की ख़ुशबू को भी हराम कर देगा।''

क़र्ज़ के बारे में इमामों का तरीक़ा

हमारे मासूमीन[अ॰] अपनी ज़िंदगी में क़र्ज़ दिया भी करते थे और दसूरे कर्ज़ लेने वालों के क़र्ज़ भी अदा कर दिया करते थे और लोगों की मुश्किलों को हल करने के लिए रास्ते भी बताते थे। इस बारे में हम यहां कुछ वाक़ेआत पेश कर रहे हैं :

पहला वाक़ेआ

रसूल अल्लाह[स॰] के एक सहाबी उसामा बिन ज़ैद बीमारी के बिस्तर पर थे और चूंकि बहुत मक़रूज़ थे, इसलिए बहुत परेशान भी थे। इमाम हुसैन[अ॰] उनको देखने के लिए तशरीफ़ ले गए और हाल-चाल पूछने के बाद कहा, ''ऐ भाई! इतने परेशान क्यों हो?''

उसामाः मुझ पर साठ हज़ार दिरहम क़र्ज़ हो गया है।

इमाम[अ॰]: परेशान न हो, तुम्हारे क़र्ज़ मेरे ज़िम्मे।

उसामाः मुझे डर है कि कहीं क़र्ज़ की अदाएगी से पहले मेरा दम न निकल जाए।

इमाम[अ॰] ने कहा कि घबराओ नहीं! तुम्हारे मरने से **पहले**

क़र्ज़ अदा कर दूंगा।

इमाम[अ०] ने अपने वादे को पूरा किया और उसके मरने से पहले उसका क़र्ज़ अदा कर दिया।

दूसरा वाक़ेआ

मदीने के मुसलमानों में से एक अंसारी, इमाम हुसैन[अ०] की ख़िदमत में आया। इमाम[अ०] ने उसके कुछ कहने से पहले ही कहा, ''ऐ भाई! मांगने की ज़िल्लत से अपने चेहरे को बचाओ और अपनी ज़रूरत एक कागज़ पर लिख लो। मैं इंशाअल्लाह जो तुम्हारी खुशी होगी, तुम्हें दे दूंगा।''

उसने कागज़ पर लिखा, ''फ़ुलां शख़्स के पांच सौ दीनार का क़र्ज़ मुझ पर है और वह चाहता है कि मैं वक़्त पर अदा कर दूं। आप उससे बात कीजिए कि मुझे उस वक़्त तक छूट दे दे जब तक कि मैं क़र्ज़ अदा कर सकूं।''

इमाम[अ०] ने कागज़ को पढ़ा और घर के अंदर तशरीफ़ ले गए और एक हज़ार दीनार की थैली लाकर उसको दी और कहा, ''इस में पांच सौ दीनार क़र्ज़ के वापस कर देना और बाक़ी अपनी ज़रूरतों के लिए रख लो और कभी भी अपनी ज़रूरत को इन तीन लोगों के अलावा किसी से न कहो, ''दीनदार, आला ज़र्फ़, नेक दिल इंसान। दीनदार का दीन तुम्हारी इज़्ज़त को महफ़ूज़ रखेगा। आला ज़र्फ़ इंसान अपनी आला-ज़र्फ़ी की वजह से तुम्हें नाउम्मीद नही करेगा और नेक दिल इंसान की शराफ़त, तुम्हें ख़ाली हाथ लौटाने से रोक देगी।''

तीसरा वाक़ेआ

मुहम्मद बिन उसामा की मौत क़रीब थी। इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ०] उसको देखने गए। कुछ लोग वहां पर मौजूद थे। मुहम्मद बिन उसामा ने वहां मौजूद लोगों से कहा कि मुझ पर कुछ क़र्ज़ है। मैं तुमसे दरख्वास्त करता हूं कि उसे अदा कर दो।

इमाम सज्जाद[अ०] ने कहा कि मैं उसमें से एक तिहाई अदा कर दूंगा।

लेकिन वहां मौजूद किसी शख़्स ने बाक़ी रक़म के लिए कुछ नही कहा तो इमाम[अ०] ने उसका क़र्ज़ा अपने ज़िम्मे ले लिया और कहा, ''मैंने इसलिए शुरू में ही मुहम्मद बिन उसामा का पूरा क़र्ज़ा अपने ज़िम्मे नही लिया ताकि बनी हाशिम यह न कहें कि मैं उनसे पहले ही बोल पड़ा और सारा क़र्ज़ अदा करने का वादा कर लिया। वरना मैं शुरू ही में पूरा क़र्ज़ा अपने ज़िम्मे ले लेता।''

चौथा वाक़ेआ

मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बकरी कहते हैं कि मैं बहुत कर्ज़दार था। मदीने पहुंच कर मैंने सोचा कि अगर इमाम मूसा काज़िम[अ०] की ख़िदमत में जाऊं तो बड़ा अच्छा रहेगा। मैं इमाम[अ०] के पास गया और अपने हालात बयान किए। इमाम[अ०] अपने घर तशरीफ़ ले गए और बाहर आकर अपने ग़ुलाम से कहा, ''यहां से चले जाओ।'' वह चला गया तो इमाम[अ०] ने अपना हाथ मेरी तरफ़ बढ़ाया और तीन सौ दीनार की एक थैली मुझे दे दी। फिर आप[अ०] चले गए और मैंने उस रक़म से अपना क़र्ज़ भी अदा कर दिया और अपनी रोज़ी-रोटी का भी इन्तिज़ाम कर लिया।

कुछ और बातें

1- क़र्ज़...परेशानी की एक वजह

इस्लामी रिवायात में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि जब तक इंसान या सोसाइटी पर सारे रास्ते न बंद हो जाएं और शदीद मुश्किलों में गिरफ़्तार न हो जाए, उस वक़्त तक क़र्ज़ न ले लेकिन अगर ज़िंदगी की मुश्किलें बरदाशत से बाहर हो जाएं तो क़र्ज़ लिया जा सकता है। इस बारे में कुछ रिवायतें यह हैं :-

> *क़र्ज़ुल हसना न सिर्फ़ यह कि एक समाजी मसला है बल्कि यह एक अख़्लाक़ी सिफ़त भी है क्योंकि मुहब्बत व कोआप्रेशन का जज़्बा जो कि एक अहम अख़्लाक़ी सिफ़त है, यह सोसाइटी में क़र्ज़ुल हसना के रिवाज को फैलाता है। साथ ही यह नेक काम भाईचारे और मेहरबानी के जज़्बात को भी बढ़ाता है और इससे समाज सूद और उसके ख़तरनाक असर से बचा रहता है।*

1- रसूले इस्लाम[स०] ने फ़रमाया है, ''क़र्ज़ लेने से बचो क्योंकि यह दीन की रुसवाई है।''
2- हज़रत अली[अ०] ने फ़रमाया है, ''क़र्ज़ लेने से बचो क्योंकि क़र्ज़ रात का ग़म और दिन की ज़िल्लत है।''
3- इमाम सादिक़[अ०] ने फ़रमाया है, ''आंख के दर्द से बढ़ कर कोई दर्द नही होता और क़र्ज़ से बढ़ कर कोई दुख नही होता।''

2- वक़्त पर क़र्ज़ अदा कर देने की अहमियत

क़र्ज़ लेना एक तरह की अमानत लेना है। इसलिए अमानत की हिफ़ाज़त करने की कोशिश करनी चाहिए और वक़्त पर उसकी अदाएगी का ख़्याल रखना चाहिए। इस्लामी रिवायात और इमामों[अ०] की ज़िंदगी में क़र्ज़ की वक़्त पर अदाएगी पर बहुत ज़ोर दिया गया है। यहां तक नक़ल हुआ है कि रसूले इस्लाम[स०] के ज़माने में एक मुसलमान का इन्तेक़ाल हो गया जिस पर दो दीनार का क़र्ज़ था। यह ख़बर रसूल अल्लाह[स०] को मिली तो आप ने उसके जनाज़े पर नमाज़ पढ़ने से मना कर दिया।

इमाम सादिक़[अ०] ने फ़रमाया है कि रसूले इस्लाम[स०] ने यह काम इसलिए किया ताकि मुसलमान अपने क़र्ज़ की अदाएगी को अहमियत दें और इस बारे में सुस्ती से काम न लें।

इस बारे में इन रिवायतों पर ग़ौर कीजिए :

1- चोरों के तीन गिरोह हैं : ज़कात अदा न करने वाले, बीवियों के मेहर को हलाल समझ कर अदा न करने वाले और इसी तरह वह क़र्ज़ लेने वाला जो वापसी की नियत न रखता हो।
2- रसूल अल्लाह[स०] ने फ़रमाया है, ''अगर कोई शख़्स किसी का हक़ अदा करने की ताक़त रखने के बावजूद हक़दार का हक़ देने में सुस्ती करे तो हर रोज उस पर दसवां हिस्सा (सूद) लेने वाले का गुनाह होगा।''
3- इमाम बाक़र[अ०] ने फ़रमाया है, ''शहीद के खून का पहला क़तरा उसके तमाम गुनाहों का कफ़्फ़ारा है सिवाए क़र्ज़ के क्योंकि क़र्ज़ का कफ़्फ़ारा उसको अदा कर देना है।''
4- अबू समामा कहते हैं, ''मैंने इमाम बाक़िर[अ०] से कहा, '' मैं मक्के और मदीने (हज करने के लिए) जाना चाहता हूं लेकिन मेरी गर्दन पर क़र्ज़ है। क्या क़र्ज़ की अदाएगी से पहले सफ़र पर चला जाऊं?''
   इमाम[अ०] ने फरमाया, ''वापस लौट जाओ और अपना क़र्ज़ मालिक को वापस कर दो। याद रखो कि खुदा के साथ इस तरह से मुलाक़ात करो कि तुम्हारी गर्दन पर किसी का क़र्ज़ न हो क्योंकि मोमिन (क़र्ज़ की अमानत में) ख़्यानत नही करता।
5- इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने फ़रमाया है, ''अगर कोई शख़्स किसी से क़र्ज़ ले और वापस करने का इरादा न हो तो वह शख़्स चोर की जगह पर है।''

3- क़र्ज़दार को छूट देने की अहमियत

यूं तो तय किए हुए वक़्त पर क़र्ज़ लौटा देना बहुत ज़रूरी है और उसमें जान-बूझ कर देरी करना बहुत बड़ा गुनाह है लेकिन अगर क़र्ज़दार क़र्ज़ को अदा न कर सकता हो तो उसे छूट देने की बड़ी ताकीद की गई है और उसका बड़ा अज्र है।

कुरआने करीम में सूरए बक़रा की आयत नम्बर 280 में आया है, ''अगर तुम्हारा क़र्ज़दार परेशान है तो उसे उस वक़्त तक छूट दी जाएगी जब तक उसके हालात सही न हो जाएं और अगर तुम समझो तो माफ़ कर देना, तुम्हारे हक़ में ज़्यादा बेहतर है।''

इस आयत से बिल्कुल साफ़ हो जाता है कि क़र्ज़दार के घर और दूसरी चीज़ों पर क़ब्ज़ा नही करना चाहिए बल्कि उन्हें छूट देनी चाहिए और अगर वह क़र्ज़ उनको बख़्श दिया जाए तो यह बहुत नेक और अच्छा काम है।

इस्लाम का यह अहम हुक्म सोसाइटी के ग़रीब तबक़ों की हिमायत की खुली मिसाल है।

ग़रीब क़र्ज़दारों को छूट देने के बारे में हदीसों में बहुत ज़ोर दिया गया है। मासूमीन[अ॰] उनको क़र्ज़ के बोझ से छुड़ाने की भी कोशिशें करते थे बल्कि ज़्यादातर आप[अ॰] हज़रात दूसरों से क़र्ज़ लेकर ग़रीब क़र्ज़दारों का क़र्ज़ अदा कर दिया करते थे। इस सिलसिले में इन हदीसों पर ग़ौर कीजिए :

रसूले ख़ुदा[स॰] फ़रमाते हैं, ''जो शख़्स किसी ग़रीब क़र्ज़दार को छूट दे दे, उसके लिए अपने क़र्ज़ की रक़म के बराबर रोज़ाना सदक़े का अज्र ख़ुदा के पास है, जब तक कि उसका क़र्ज़ अदा न हो जाए।''

''अगर कोई शख़्स चाहता है कि ख़ुदा उस दिन उसे अपने अर्श के साए में रख ले कि जिस दिन सिवाए ख़ुदा के कोई और साया न होगा तो उसे चाहिए कि क़र्ज़दार को छूट दे या अपना हक़ उसे बख़्श दे।''

''जो शख़्स परेशान हाल मोमिन के साथ नर्म बर्ताव रखे तो ख़ुदा दुनिया व आख़िरत में उसकी ज़रूरतों में नर्मी रखेगा।''

इमाम मूसा काज़िम[अ॰] के एक शार्गिद का एक क़र्ज़दार पर एहसान

मुहम्मद बिन अबी अमीर इमाम मूसा काज़िम[अ॰] के एक मशहूर शार्गिद थे और नेक व मुख़्लिस इंसान थे। उनका कपड़े का कारोबार था और उन्होंने किसी को दस हज़ार दिरहम क़र्ज़ दिया हुआ था। ख़ुदा का करना यह हुआ कि क़र्ज़दार मोमिन दिवालिया हो गया और पाई-पाई को मोहताज हो गया। इसी बीच में क़र्ज़ वापस करने का वक़्त आ गया। उसने अपने घर को बेच

दिया और दस हज़ार दिरहम लेकर इब्ने अबी अमीर के घर आया और दस हज़ार दिरहम उसको दे दिए।

इब्ने अबी अमीर ने उससे पूछा, ''यह रक़म कहां से लेकर आए हो? क्या मीरास मिली है?''

''नहीं।'' उसने जवाब दिया।

''क्या किसी ने यह रक़म तुम्हें तोहफ़े में दी है?'' इब्ने अबी अमीर ने फिर सवाल किया।

''नहीं! मैंने अपना घर बेच दिया है ताकि अपना क़र्ज़ अदा कर सकूं।''

इब्ने अबी अमीर ने यह सुना तो इमाम[अ॰] का एक फ़रमान सुना कर रक़म लेने से इंकार कर दिया। इब्ने अबी अमीर ने कहा कि इमाम सादिक़[अ॰] ने फ़रमाया है, ''इंसान के लिए ज़रूरी नही है कि वह क़र्ज़ अदा करने के लिए अपना घर बेचे।'' उसके बाद इब्ने अबी अमीर ने कहा कि यह रक़म यहां से उठा लो। मैं इसे नहीं ले सकता। ख़ुदा की क़सम! इस वक़्त मुझे एक-एक दिरहम की सख़्त ज़रूरत है लेकिन मैं इसमें से एक दिरहम भी नही लूंगा।

4- ज़रूरतमंदों के लिए इमामों[अ॰] का क़र्ज़ लेना

कभी-कभी मासूमीन[अ॰] अपने लिए और ज़्यादा तर दूसरे लोगों की ज़रूरतों जैसे शादी, घर, ख़ुराक वग़ैरा के हल और समाजी कामों को करने के लिए क़र्ज़ लिया करते थे। इसीलिए कुछ इमाम जब इस दुनिया से गए तो क़र्ज़दार थे। जैसे इमाम बाक़िर[अ॰] फ़रमाते हैं, ''जब हज़रत अली[अ॰] की शहादत हुई तो आप पर आठ लाख दिरहम क़र्ज़ था। इमाम हसन[अ॰] ने उनका एक बाग़ पांच लाख दिरहम में और दूसरा बाग़ तीन लाख दिरहम में बेचकर के वह क़र्ज़ अदा किया।''

रिवायत में है कि इमाम हुसैन[अ॰] शहादत के वक़्त क़र्ज़दार थे। इमाम सज्जाद[अ॰] ने उनका एक खेत तीन लाख दिरहम में बेचा और उनका क़र्ज़ अदा किया।

एक और रिवायत में है कि इमाम सज्जाद[अ॰] एक बार माली मुश्किलों में गिरफ़्तार हो गए तो अपने एक गुलाम से कहा कि आसानी के दिन तक के लिए दस हज़ार दिरहम क़र्ज़ ले कर आओ।

यह भी रिवायत हुई है कि रसूल अल्लाह[स॰] ने अपने घर की ज़रूरत के लिए मदीने के यहूदियों से बीस मन गेंहू क़र्ज़ के तौर पर लिया और अपनी ज़िरह रेहन रखवाई।

मक़सद पर ईमान

■ हुज्जतुल इस्लाम जाफ़र सुबहानी

मक़सद पर ईमान एक ऐसा रूहानी मोटिवेशन है कि इंसान चाहे या न चाहे, ये ईमान और यक़ीन उसे उसके मक़सद की तरफ़ खींच कर ले ही जाता है। इंसान को अपनी ज़ात से बहुत ज़्यादा मुहब्बत होती है और यह मुहब्बत ख़त्म होने वाली नही होती। इस एतेबार से अगर इंसान को यह यक़ीन हो जाए कि उसकी अपनी कामयाबी फुलां काम में छुपी है तो वह यक़ीनी तौर पर उस काम की तरफ़ बढ़ेगा।

जिस शख़्स को अपनी सेहत व तंदुरुस्ती प्यारी है अगर वह कभी बीमार हो जाए तो कड़वी दवा भी आसानी से पी लेता है और अपने आपको सर्जन के रहमो करम के ऊपर छोड़ देता है।

क्यों...?

क्योंकि वह जानता है कि उसकी सलामती इसी में है कि वह कड़वी दवा पी ले और इसका फ़ायदा इसी में है कि उसके जिस्म के सड़े हुए हिस्से काट दिए जाएं।

इसी यक़ीन के साए में इंसान अपने ज़ेहन में कामयाबी और मक़सद तक पहुँचने का ख़्याल मज़बूत करता रहता है। इसकी खातिर वह तकलीफ़ों और परेशानियों की भी परवाह नहीं करता।

कभी मक़सद को हासिल करने का इश्क़ इतना ज़्यादा होता है कि वह जान की बाज़ी भी लगा देता है, वह जान व माल को मक़सद पर कुर्बान कर देता है, मुस्कुराते चेहरे के साथ वह मौत के इस्तेक़बाल के लिए बढ़ता है और इन्तेहाई ख़ुशी के साथ मक़सद के लिए जान दे देता है।

चौदह सौ साल पहले 'बद्र' नामी बयाबान में मुसलमानों की तादाद तीन सौ तेरह से ज़्यादा नही थी। जंगी और डिफेंसिव हथियार भी उनके पास बहुत कम थे। जबकि उनका मुक़ाबला 'कुरैश' की ताक़तवर फ़ौज से था। एक जंगी माहिर की नज़र से अगर देखा जाए तो मुसलमानों की कामयाबी के चांसेज़ बहुत ही कम थे। यह तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता था कि मुसलमानों का यह छोटा सा गिरोह एक ताक़तवर फ़ौज को तहेस नहेस करके रख देगा।

लेकिन आम जंगी माहिरों की सोच के उलट मक़सद पर ईमान की ताक़त से लैस यह छोटी सी फ़ौज कुछ ही घंटों में एक ताक़तवर फ़ौज पर भारी पड़ गई।

इस छोटी सी फ़ौज की कामयाबी और जीत की वजह वही मक़सद पर ईमान था जिसने मंज़िल की राह में शहादत और जान देने को उनके लिए आसान बना दिया था।

और यह वह हक़ीक़त है कि जिसको दुश्मन ने भी माना है क्योंकि बद्र की लड़ाई से पहले दुश्मनों के एक बहादुर फ़ौजी को यह ज़िम्मेदारी सौंपी गई थी कि वह मुसलमान सिपाहियों की फ़ौजी और रूहानी ताक़त का अंदाज़ा लगाए और कमांडर को इस सिलसिले में सही इंफ़ार्मेशन पहुंचाए। उसने तहक़ीक़ात कीं और यह रिर्पोट दीः "मुसलमान अगरचे तादाद के ऐतबार से कम हैं लेकिन रूहानी ताक़त और अपने दीन की राह में जमे रहने के ऐतबार से बहुत ताक़तवर हैं, यह वह गिरोह है जिसकी पनाह सिर्फ़ उसकी तलवार है। जब तक उनमें से हर एक तुम्हारे कम से कम एक आदमी को न मार ले, मरेगा नही। जब यह अपनी तादाद के बराबर तुम्हारे लोगों को मार डालेंगे तो फिर ज़िन्दगी में क्या फायदा रह जाएगा।"

कैसर के दरबार में हज़ाफ़ा

जिस सिपाही को अपने मक़सद पर यक़ीन हो वह किसी तरह की कुरबानी से झिझकता नही है, उसके लिए मैदाने जंग और शादी के जश्न में कोई फ़र्क़ नही रहता।

इस्लामी हिस्ट्री में इसकी बहुत मिसालें मिल सकती हैं बल्कि दुनिया की क़ौमों की हिस्ट्री में भी इस की काफ़ी मिसालें मौजूद हैं।

इस्लामी फ़ौज का एक दस्ता अपने कमांडर हज़ाफ़ा समेत रोम के ईसाईयों के हाथों गिरफ़्तार हो गया था। दुश्मन की फ़ौजी अदालत ने तमाम मुसलमान फ़ौजियों को क़त्ल कर देने का हुक्म दे दिया। इसी दौरान कमांडर से कहा गया कि अगर वह ईसाई हो जाए तो अदालत अपना फ़ैसला वापस ले लेगी।

लेकिन मुसलमानों का यह कमांडर मक़सद को अपनी जान से ज़्यादा अहमियत देता था, वह जानता था कि अगर वह सिर्फ़ ज़ाहिरी तौर पर इस्लाम छोड़ दे और ईसाई बन जाए तो भी दूसरे मुसलमान फ़ौजी जो मैदाने जंग में इन्तेहाई बहादुरी से लड़े थे, कमज़ोर पड़ जाएंगे और दुश्मन की साज़िश का शिकार हो जाएंगे।

यह सोचकर उसने साफ़-साफ़ अदालत की पेशकश को ठुकरा दिया। यह देखकर अदालत ने उस मुसलमान कमांडर से वादा किया कि अगर वह ईसाई हो जाए तो बादशाह क़ैसर की बेटी से उसकी शादी कर दी जाएगी और उसको बड़े ओहदे दिए जाएंगे। उसने अदालत की यह पेशकश भी ठुकरा दी।

जब यह दोनों रास्ते भी बंद हो गए तो बादशाहे क़ैसर ने जो खुद उस वक़्त अदालत में मौजूद था, हुक्म दिया कि एक फ़ौजी को ज़ैतून के तेल से भरी हुई एक गर्म देग में डाल दिया जाए ताकि हज़ाफ़ा अपनी आंखों से देख ले कि अदालत का हुक्म अटल है और मज़ाक़ नही है।

बहरहाल हज़ाफ़ा ने अपनी आंखों से मुसलमान सिपाही के गोश्त को हड्डियों से जुदा होते हुए और उसके जिस्म को गर्म तेल में डूबते उभरते हुए देखा।

यह देखकर हज़ाफ़ा बहुत रोया। दुश्मन समझा कि वह ख़ौफ़ की वजह से रो रहा है। लेकिन वह फ़ौरन उन लोगों की तरफ़ मुड़ा और यह कहना शुरू किया, "मैं इसके इस अंजाम पर नहीं रो रहा हूं। मैं तो खुद इस अंजाम के इन्तिज़ार में हूं। मैं तो इसलिए रो रहा हूं कि मेरे पास 'इस्लाम' पर फ़िदा करने के लिए सिर्फ़ एक जान है। ऐ काश! मेरे बालों की तादाद के बराबर मेरी जानें होतीं और मैं सबको अपने दीन पर कुर्बान कर देता।"

सारे दरबारी उनके इतने पक्के ईमान पर हैरत में डूब गए और उन्होंने बहाना बनाकर उसे अस्सी फ़ौजियों समेत आज़ाद कर दिया।

मक़सद पर ईमान की कई मिसालें हैं, ईमान की सबसे बड़ी मिसाल वह होती है जिसमें जान की बाज़ी लगा दी जाए। इस बारे में कुरआन में बहुत साफ़ तौर पर आयतें मौजूद हैं।

कहानी

एहसास

■ हुज्जतुल इस्लाम जाफ़र सुबहानी

''डैड! मेरा कम्प्यूटर अभी तक नहीं आया और मेरे एक्ज़ाम्स ख़त्म हुए एक हफ़्ता हो गया है। आपने कहा था कि एक्ज़ाम्स ख़त्म होने के दूसरे दिन कम्प्यूटर मेरे रूम में होगा।'' एहतिशाम साहब को आते देखकर असद एक दम बोल उठा।

एहतिशाम साहब का हाथ टाई की नाट खोलते-खोलते वहीं रुक गया। उन्होंने मुड़कर अपने इक्लौते बेटे को देखा और बोले, ''सॉरी बेटा! मैं भूल गया था, चलो कल तक तुम्हारा कम्प्यूटर तुम्हारे रूम में होगा।'' यह कहते हुए वह एक हाथ में कोट और दूसरे हाथ में ब्रीफ़केस संभालते हुए अपने कमरे की तरफ़ बढ़ गए और असद ख़ुश होकर अपने दोस्त इमरान के घर चला गया।

एहतिशाम साहब का अपना बिज़नेस था और वह बिज़नेस टाइकोन की हैसियत से अपने इलाक़े में जाने पहचाने जाते थे। उनकी वाइफ़ भी उनका हाथ बटाने के लिए उनके बिज़नेस में शामिल थीं।

एहतिशाम साहब का ख़्याल था कि तरक़्क़ी के लिए औरत को मर्द के शाना-बशाना काम करना ज़रूरी है। एहतिशाम साहब कोई ख़ानदानी अमीरज़ादे नहीं थे बल्कि उन्होंने बहुत छोटे पैमाने पर एक दुकान से अपना बिज़नेस शुरू किया था और अपनी समझदारी और मेहनत से अब वह कई फ़ैक्ट्रियों के मालिक थे। चूंकि एहतिशाम साहब भी अपने पैरेंट्स की इक्लौती औलाद थे, इसलिए उनके पैरेंट्स ने उनकी परवरिश अच्छी तरह से और अख़्लाक़ी लाइंस पर की थी। उनके फ़ॉदर तो कुछ वक़्त पहले इंतेक़ाल कर गए थे लेकिन मम्मी उनके साथ रहती थीं। वह अक्सर अपने कमरे में इबादत में मसरूफ़ रहतीं। वह चाहती थीं कि जिस तरह से उन्होंने अपने बेटे की परवरिश की है, उसी तरह उनके बहू बेटा भी अपनी औलाद की परवरिश करें लेकिन...उन्हें अपने बिज़नेस से ही फ़ुरसत न थी।

उन्हें अपने बेटे और बहू की ज़िंदगी का ढंग बिल्कुल पसंद नहीं था और चूंकि असद उनका एक ही पोता था और अभी उसकी बढ़ती हुई उम्र थी। इसलिए वह चाहती थीं कि बहू उस पर ज़्यादा ध्यान दे और बिज़नेस के बजाए घर को वक़्त दे।

मगर अपने इस ख़्याल का इज़हार जब वह अपनी बहू से करतीं तो मिसेज़ एहतिशाम हत्थे से उखड़ जातीं और अपने मियाँ से कहतीं कि अम्मा बहुत पुराने ख़्यालात की हैं।

इसलिए एहतिशाम साहब अपनी मम्मी से खिंचे-खिंचे रहने लगे तो उन्होंने उनको रोकना-टोकना छोड़ दिया।

मगर वह अपने पोते असद के लिए फ़िक्रमंद रहती थीं क्योंकि वह आज कल ज़्यादा वक़्त अपने दोस्तों के साथ बाहर गुज़ारता था और उसके पैरेंट्स को कोई फ़िक्र नही थीं।

''हैलो ग्रैंड मॉम!''

असद ने आते ही अपनी दादी को बड़े मार्डन तरीक़े से विश किया।

दादी जो अभी नमाज़ से फ़ारिग़ होकर तख़्त पर बैठी थीं, सुनकर बहुत नाराज़ हुईं और नागवारी से असद को टोकते हुए बोलीं, ''अरे यह तू मुझे फ़िरंगियों के नामों से मत समझा!''

फिर उन्होंने बहुत मुहब्बत और प्यार से उसे तख़्त पर पास बिठाते हुए कहा, ''तू मुझे दादी या दद्दा के नाम से भी पुकार सकता है।''

''अरे ग्रैंड मॉम...यह आजकल का फ़ैशन है। यह दादी सब पुराने वक़्तों के नाम हैं। अच्छा छोड़िए! मैं आपको अपने नए कम्प्यूटर पर चैटिंग करना सिखाऊँ। मैंने डैडी से चैटिंग सीख ली है।''

लाहौल वला कुव्वत...अरे क्या पागल हुआ है। यह क्या चैटिंग वैटिंग तू मुझे इस उम्र में सिखाएगा!'' दादी ने उसे घूरते हुए कहा। ''और यह क्या तू उलटे-सीधे काम सीख रहा है। कुछ रोज़ा सीख। कितना बड़ा हो गया है तू! तुझ पर रोज़ा फ़र्ज़ है, नमाज़ और तू...''

दादी अम्मा ने उसे लताड़ा। वह किसी ऐसे ही मौक़े की तलाश में थीं।

"अरे ग्रैंड मॉम! इन चीज़ों के लिए सारी उम्र पड़ी है पढ़ लेंगे बुढ़ापे में। अभी उम्र ही क्या है मेरी।" उसने रटे-रटाए जुमले दोहरा दिए।

"न बेटा ना! ज़िंदगी को कोई भरोसा नहीं। हर वक़्त अल्लाह तआला से ख़ैर की दुआ मांगनी चाहिए और तेरे अम्मा-बाबा! इनको तो इस मूए बिज़नेस से ही फ़ुरसत नहीं है और तुझ पर भी धयान नहीं देते।"

दादी अम्मा का लेक्चर शुरू हो गया।

"बैकवर्ड थिंकिंग़..." असद यह सोचता हुआ खड़ा हो गया। वह कितना खुश-खुश घर आया था। उसने आज कल नई-नई चैटिंग सीखी थी और अब चूंकि उसका कम्प्यूटर भी आ गया था इसलिए वह बड़े मज़े से अपने कम्प्यूटर पर बैठ कर आराम से चैटिंग करेगा। लेकिन यह ग्रैंड माम का लेक्चर.... ओ हो! असद ने उकताहट से सोचा।

वह फ़ौरन कमरे में आया और कम्प्यूटर आन करके बैठ गया।

दादी अम्मा सर हिला कर रह गईं और उसके सही रास्ते पर आने की दुआएं मांगने लगीं कि ख़ुदा उसको सही रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ दे और शायद यह क़ुबूलियत का ही वक़्त था कि...

"हैलो...आई एम..."

असद ज्यों ही नेट पर कनेक्ट हुआ, उसकी वेबसाइट पर किसी अग्रवाल नामी लड़के का मैसेज आया।

"वॉट इज़ योर नेम?" उसकी तरफ़ से सवाल हुआ।

"आई एम असद एहतिशाम।" उसने जवाब में जल्दी लिखा।

"ओह! आर यू ए मुस्लिम?" असद ने ज्यों ही अपना नाम लिखा उसकी तरफ़ से फिर एक सवाल हुआ।

और असद गड़बड़ा गया कि शायद अब वह डिसकनेक्ट हो जाएगा वह यह सोच ही रहा था कि सवाल दोबारा दोहराया गया। "आर यू ए मुस्लिम।"

असद ने बड़ी ही बेदिली से टाइप किया।

"यस आई एम।"

असद की हैरत की इंतेहा न रही जब उसने स्क्रीन पर उसका जवाब पढ़ा।

"आर यू ए मस्लिम? आई लव मुस्लिम्स... प्लीज़ डू मी फ्रेंडशिप!"

"प्लीज़!" और फिर उनके बीच बातें शुरू हो गई। सुनील अग्रवाल ने अपना पूरा इंट्रोडक्शन करवाने के बाद कहा, "हैप्पी रमज़ान!" और असद एक दम चौंक गया कि उसको पता है कि रमज़ान आने वाला है। उसको तो कल तक इस बात का कुछ पता ही नहीं था। आज सुबह उसको ग्रैंड मॉम ने बताया था और उसको रोज़ा रखने की ताकीद भी की थी।

"थैंक्स..." उससे सिर्फ़ यही टाइप हो सका।

फ़ौरन ही दूसरा सवाल कर दिया गया, "प्लीज़! टेल मी एबाउट योर रेलीजन...?"

"आई वांट टू नो एबाउट इस्लाम?" वह बग़ैर रुके टाइप किए जा रहा था।

और असद...?वह तो उसके इस सवाल से शर्म से जैसे ज़मीन में गड़ गया।

उसको खुद कौन सी मालूमात थीं इस्लाम के बारे में रोज़ा, नमाज़ के नाम के अलावा। वह खुद कौन सा नमाज़ पढ़ता था। हांलाकि अब वह अठारह साल का हो चुका था मगर ईद बक़रईद की नमाज़ भी कम ही पढ़ता था और दादी...वह उसको नमाज़ के बारे में कितनी ताकीद किया करती थीं! मगर वह सुनी अनसुनी कर दिया करता था।

अब वह बहुत शर्मिंदा था कि एक शख़्स जिसका रिश्ता उसके मज़हब से भी नही है लेकिन वह उसके मज़हब को कितना पसंद करता है।

और एक वह खुद जो इस मज़हब में पैदा हुआ, लेकिन उसे कुछ भी पता नहीं है अपने मज़हब के बारे में।

"आई विल टेल यू टुमारो बिकॉज़, आई गो टू दिस टाइम.....?" उसने बहाना बनाया क्योंकि उसके पास कोई चारा न था।

वह यह कहते ही नेट से डिसकनेक्ट हो गया। अब उसको रह-रह कर अपने आप पर अफ़सोस हो रहा था, अपनी जिहालत पर लेकिन फिर वह कुछ सोच कर एक जज़्बे और हौसले से उठा और उसी वक़्त दादी अम्मा के पास पहुंच गया।

"अस्सलामु अलैकुम... दादी अम्मा!"

दादी अम्मा जो नमाज़ से फ़ारिग़ होकर तसबीह में मसरूफ़ थीं एक दम चौंक गईं। असद उनके बराबर में तख़्त पर आकर बैठ गया।

"दादी अम्मा! मुझे नमाज़ पढ़नी है। मुझे उसका तरीक़ा समझा दें।"

दादी अम्मा तो उसके अस्सलामु अलैकुम कहने ही पर बेहोश होने को थीं कि उसने नमाज़ की बात की तो वह निहाल हो गईं।

"हां! हां! क्यों नही मेरे बच्चे! मैं अपने बच्चे को सब कुछ बताऊंगी।" यह कहते हुए दादी अम्मा ने असद को सीने से लगा लिया।

"और हां! दादी अम्मा!" असद को जैसे कुछ याद आ गया। "इस रमज़ान में मैं भी रोज़े रखूंगा! इंशाअल्लाह!"

"इंशाअल्लाह! मेरे बेटे इंशाअल्लाह! ज़रूर क्यों नहीं तुम पर फ़र्ज़ हैं रोज़े।"

"और मॉम-डैड को भी मैं एहसास दिलाऊंगा।" उसने दादी अम्मा से कहा तो दादी अम्मा एक दम मुस्कुरा दीं।

वह सोच रहा था कि मैं सुनील अग्रवाल को सब कुछ बताऊंगा इस्लाम के बारे में क्योंकि असद के पास उसका ई-मेल एड्रेस था ही और दादी जान यह सोच रही थीं कि चलो शुक्र है मेरे बच्चे को एहसास तो हुआ और वह फ़ौरन शुक्राने की नमाज़ अदा करने के लिए खड़ी हो गईं।

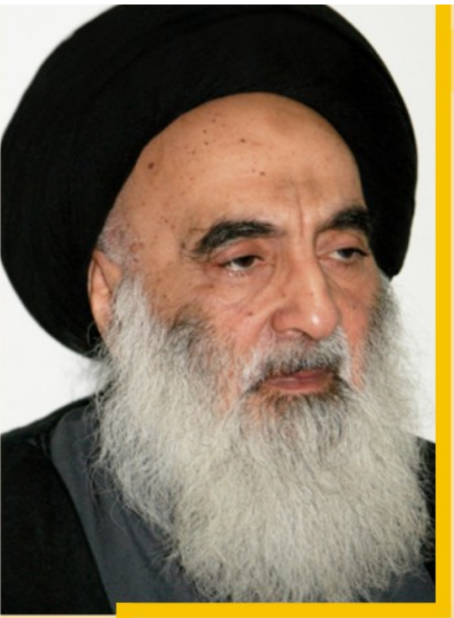

शरई मसाएल

वुज़ू

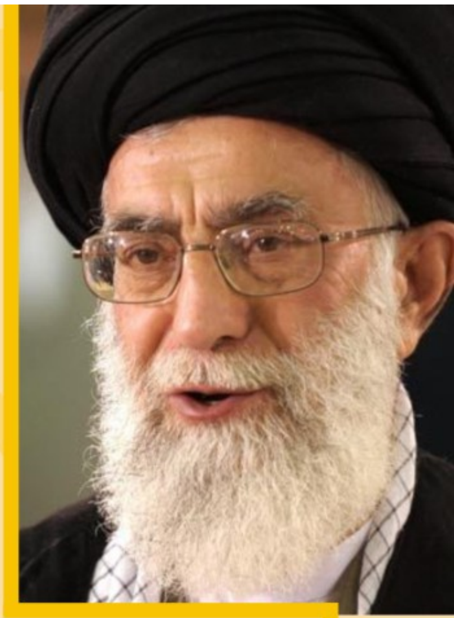

वुज़ू के दो फ़ाएदे हैंः

पहला इंसानी सेहत को फ़ाएदा

दूसरा अख़्लाक़ी और रूहानी फ़ाएदा

अगर इंसानी जिस्म के एतेबार से बात की जाए तो दिन में पाँच या कम से कम तीन बार मुँह-हाथ धोने से इनकी सफ़ाई होती रहती है। इसी तरह सर और पैरों का मसह कि जिसमें बाल और बदन की खाल तक पानी पहुँचना ज़रूरी है, इसमें सफ़ाई के साथ-साथ पानी के खाल तक पहुँचने से आसाब भी एक्टिव रहते हैं।

अख़लाकी और रूहानी फ़ाएदा यह है कि वुज़ू चूँकि ख़ुदा से क़रीब होने और उसकी ख़ुशनूदी के लिए किया जाता है इसलिए इंसान की तरबियत में भी इसका असर होता है जैसा कि इमाम अली रज़ा[अ०] की इस हदीस से पता चलता है जिसमें आप फ़रमाते हैं कि पालने वाले हम सर से पैर तक तेरी इताअत के लिए तैयार हैं।

सवालः मैं वुज़ू में तीन बार हाथ धोती थी। शादी के बाद मेरे शौहर ने कहा कि यह सही नहीं है। अगर कोई वुज़ू में अपना चहरा और हाथ तीन बार धोए तो क्या उसका वुज़ू और इबादतें सही नहीं होंगी?

जवाबः वुज़ू में एक बार पानी डालना वाजिब, दूसरी बार मुस्तहब मगर तीसरी बार डालना सही नहीं है लेकिन एक बार धोने का मतलब यह है कि इंसान एक बार की नियत से पूरा धोले, चाहे इस एक बार के धोने के लिए कई बार पानी डाले। जब एक बार मुकम्मल हो जाए तो दूसरी बार शुरू करे। दो बार या उस से ज़्यादा बार पानी डालने में कोई हरज नहीं है।

सवालः वह औरतें जिनके बाल बड़े हों वह मसह कैसे करेंगी?

जवाबः जिनके सर के बाल इतने बड़े हों कि कंघी करने से चहरे पर या सर के दूसरे हिस्सों तक पहुँच जाएं, उनको चाहिए कि बालों की जड़ में मसह करें। बहतर है कि वुज़ू से पहले बालों को हटा लें ताकि बायाँ हाथ धोने के बाद मसह करने में मुश्किल न हो।

सवालः अगर वुज़ू करते वक़्त नामेहरम की नज़र पड़ जाए तो क्या वुज़ू बातिल हो जाएगा?

जवाबः औरत अगर किसी ऐसी जगह वुज़ू करे जहाँ नामेहरम उसे देख ले तो उसका वुज़ू सही है अगरचे उसने गुनाह किया है।

सवालः मैं वुज़ू कर रही थी कि अचानक देखा कि चुल्हे पर खाना उबलने लगा है। जल्दी से भाग कर चुल्हे को बंद किया और वापस आकर वुज़ू को पूरा किया। क्या मेरा वुज़ू सही है?

जवाबः आपका वुज़ू सही है।

सवालः काफ़ी दिनों तक मेरी बेटी लौटे से पानी डालती थी और में वुज़ू करती थी। फिर पता चला कि 'इंसान को खुद वुज़ू करना चाहिए और कोई उसकी मदद न करे'। क्या मेरा वुज़ू सही है? मेरी नमाज़ और दूसरी इबादतों का क्या हुक्म है?

जवाबः जब आपकी बेटी पानी डालती थी, अगर उस वक़्त आप पानी को हाथ में लेकर अपने चहरे या हाथों पर डालती थीं तो आपका वुज़ू सही है। वैसे यह काम मकरूह है।

सवालः नाख़ुन बड़े हों तो क्या वुज़ू सही है?

जवाबः सही है।

सवालः ब्युटी पार्लर में औरतों की आई-ब्रो की लाईन बदल देते हैं। उसके बाद वुज़ू या ग़ुस्ल सही है?

जवाबः लाईन बदलने का मतलब अगर यह है कि बाल हटा दिए जाएं तो पानी खाल तक पहुँच जाए तो वुज़ू और ग़ुस्ल दोनों सही हैं लेकिन अगर ऐसा रंग लगा दिया जाए जिसकी वजह से पानी खाल तक न पहुंच सके तो वुज़ू सही नहीं है।

सवालः पेन या मार्कर की इंक या कोई रंग बदन पर लग जाए तो क्या पानी खाल तक पहुँच जाएगा? इसी तरह औरतें बालों में जो रंग लगाती हैं, उसका क्या हुक्म है?

जवाबः अगर इन चीज़ों का फ़िज़िकल जिस्म न हो तो वुज़ू सही है यानी खाल तक पानी पहुंचने में रूकावट न हो तो वुज़ू सही है।

सवालः जो औरतें अपने शौहर के लिए मेकअप करती हैं उन्हें वुज़ू से पहले साबुन वग़ैरा से अपने चेहरे को धोना चाहिए या ऐसे ही वुज़ू कर सकती हैं?

जवाबः मेकअप के लिए जो चीज़ें इस्तेमाल की जाती हैं अगर वह खाल तक पानी के पहुँचने में रूकावट पैदा नहीं करती हैं तो साबुन से धोने की ज़रूरत नहीं है।

सवालः अगर पैर के नाखुन पर नेल-पालिश लगी हो तो क्या मसह नहीं हो पाएगा?

जवाबः हाँ! मसह नहीं हो पाएगा। यह हो सकता है कि किसी एक नाख़ुन पर नेल-पालिश मत लगाइए और उस पर मसह कर लीजिए।

सवालः क्या अंगूठी पहनकर वूज़ू किया जा सकता है?

जवाबः अंगूठी और ब्रसलेट अगर खाल तक पानी के पहँचने में रूकावट न बनें तो इन्हें पहन कर वुज़ू करने में कोई हरज नहीं है। बस इनको इनकी जगह पर हिला दीजिए ताकि पानी इनके नीचे तक पहँच जाए।

सवालः कुछ फ़क़ीह कहते हैं कि मर्द अपने हाथों को पीछे से और औरतें अंदर की तरफ़ से धोएं। इस मसले में आपका हुक्म है?

जवाबः क़ुरबत की नियत से ऐसा करने में कोई हरज नहीं है।

मेदा गिज़ाई स्टोर

जिस्म के अजाएबात

बहुत से लोग दवाएं बड़े शौक़ से इस्तेमाल करते हैं यह जाने बग़ैर कि उन्हें इस दवा की ज़रूरत है भी या नही। अक्सर माएं अपने बच्चों को ज़रा-ज़रा सी बात पर दवाएं खिला कर खुद को मुतमईन कर लेती हैं। यह बिल्कुल ग़लत है। तक्लीफ़ हो तो डाक्टर जो कहे उसके मुताबिक़ दवा इस्तेमाल करें, खुद डाक्टर बनने से परहेज़ करें। दवा कोई भी हो मेदे को नुक़सान पहुँचाती है, ख़ास तौर पर दर्द रोकने वाली दवाएं बड़े मसले पैदा करती हैं।

लोग मेदे को बहुत सी ऐसी बातों का ज़िम्मेदार बताते हैं जिनका मेदे से तअल्लुक़ नही होता जैसे गुड़गुड़ाहट। आप कहते हैं कि मेरे मेदे में गुड़गुड़ाहट हो रही है। यह आवाज़ें दरअस्ल आपकी आंत से बरआमद होती हैं। यही मामला डकार आने का है। लोग समझते हैं कि इसकी वजह मेदा है। असल मामला यह है कि यह हवा मेदा पैदा नही करता। यह हवा बड़े-बड़े बिना चबाए निवालों और पानी के बड़े-बड़े घूंट पीने के दौरान मेदे में दाख़िल हो जाती है। यह हवा बाहर निकालना मेदे के लिए बेहद ज़रूरी है।

अगर आप छोटे-छोटे निवाले अच्छी तरह चबा कर हलक़ से उतारें, पानी छोटे-छोटे घूंटों से पिएं और थोड़ी भूक बाक़ी हो तो खाना बंद कर दें तो पेट फूलने, तेज़ाबियत, बदहज़मी और डकारों से आपको निजात मिल सकती है।

कुछ लोग खाने के बाद तेज़ चलने को फायदेमंद समझते हैं, यह बिल्कुल ग़लत है। दोपहर का खाना खाने के बाद थोड़ी देर आराम करना और रात के खाने के बाद हल्की सी चहेल क़दमी मेदे के लिए बहुत फ़ायदेमंद है। भारी एक्सर्साइज़ मेदे के मूवमेंट्स को रोक देती है और खाना बहुत देर तक बिना हज़्म हुए जूं का तूं अंदर पड़ा रहता है।

एक बहुत ज़रूरी बात और है जिसे हमेशा याद रखें और दूसरों को भी बताएं।

अगर किसी के पेट (मेदे) में शदीद दर्द महसूस हो और एक घंटे तक होता रहे तो जल्द से जल्द डाक्टर से मिलिए। बहुत से लोग हार्ट अटैक से मर जाते हैं यह समझते हुए कि उनके पेट में दर्द है। यह पेट का दर्द नही होता बल्कि दिल का दर्द होता है मगर मेदे में महसूस होता है। यही मामला पित्ते के दर्द का भी है। यह दर्द भी अक्सर मेदे ही में महसूस होता है।

ज़्यादा खाना या कोई नुक़्सानदेह चीज़ खा लेना आम बात है। ऐसी गिज़ा ज़हरीले असर वाली होती है या उसकी मिक़दार मेदे की गुंजाइश से ज़्यादा होती है। ऐसी ग़िज़ा इंसान को मौत का निवाला बना सकती है मगर खुश क़िस्मती से खुदा ने आपको एक ऑटोमेटिक सिस्टम अता किया है जिसके ज़रिए मेदे की सफाई हो जाती है। यह सिस्टम न होता तो अस्पताल जाना पड़ता। इसे उल्टी आना या क़ै आना कहते हैं।

सीना जलना कई वजहों से होता है। ज़्यादा सिग्रेट पीना भी उनमें से एक है। इसमें मेदे का वह मुंह जो आंत में खुलता है, पूरी तरह नही खुल पाता। गैस का एक बुलबुला मेदे के तेज़ाबी माद्दों के साथ ग़िज़ा में दाख़िल होता है और ग़िज़ा की नाली की सेंसिटिव खाल को नुक़्सान पहुंचाता है इसी से सीने में जलन होती है। यह कभी-कभार हो तो परेशान होने की ज़रूरत नही, बार-बार हो तो डाक्टर से ज़रूर मिलिए।

अक्सर लोग बदहज़मी और तेज़ाबियत के इलाज के तौर पर सोडे की बोतल पीते हैं इस सिलसिले में एहतियात ज़रूरी है। सोडा तेज़ी से खून में शामिल हो जाता है। अगर सोडे की मिक़दार ज़्यादा हो तो यह नुक़्सानदेह बन जाता है। इससे खून में नमक की मिक़दार बढ़ जाती है और गुर्दों के काम का बोझ बढ़ जाता है। खाने के बाद तेज़ाबियत होती है। मेगनीशिया एल्युमूनियम कम्पाउंड का इस्तेमाल ज़्यादा अच्छा है।

लोग समझते हैं कि उनका मेदा उनकी ग़िज़ा को हज़्म करता है हांलाकि मेदा तो उस ग़िज़ा को हज़्म के क़ाबिल बनाता है। दरअसल, असली काम आपकी आंतें करती हैं।

आइए! अब हम आपको खाना खाने और तंदुरुस्त व सेहतमंद रहने के सुनहरे उसूलों के बारे में बताते हैं। यह उसूल डेढ़ हज़ार साल पहले इंसानियत के उस्ताद, हज़रत मोहम्मद मुस्तफा[स०] और उनके अहलेबैत[अ०] ने उस वक़्त मुसलमानों को बताए थे, जब फ्रांस और इंग्लैंड के शहरों में कीचड़, गंदगी, चूहों, पिस्सुओं, मच्छरों और बीमारियों की भरमार थी। उस वक़्त यह 'मार्डन सोसाइटीज़' अपने बीमारों का इलाज लोहे की सलाखों से जलाने और जादू टोटके के साथ किया करती थीं!

वैसे अगर आप खाना खाते वक़्त रसूले अकरम[स०] और दूसरे मासूमीन[अ०] की हिदायतों पर अमल करें तो आप कभी भी तेज़ाबियत, बदहज़मी और दूसरी बीमारियों का शिकार नहीं होंगे।

खाने के आदाब, तंदुरुस्ती के राज़

रसूले इस्लाम[स०] ने फरमाया है, "एक दिन एक बार खाना खाओ और दूसरे दिन दो बार और इस तरह कि न कम न ज़्यादा। कुछ भूख बाक़ी हो तो खाना छोड़ दो।"

खाना खाने से पहले हाथ धोईए और खुश्क मत कीजिए। खाना शुरू करें तो "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर रहीम" और खत्म करें तो "अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन" कहिए!

हज़रत अली[अ०]: "चार बातों पर अमल करोगे तो दवा और इलाज के मोहताज नही होगेः

1- जब तक भूख न लगे खाना न खाओ!
2- कुछ भूख बाक़ी हो तो खाना छोड़ दो!
3- रात में बाथरूम वग़ैरा से फ़ारिग़ होकर सोओ।
4- जब खाने बैठो तो हाथ ज़रूर धो लो चाहे हाथ पहले से साफ़ ही क्यों न हों!"

बच्चों को अपने खिलौने ख़ुद बनाने दें

■ मुहम्मद रज़ा मतहरी

जब इंसान को कोई काम दिया जाए और उसे उस काम में दिलचस्पी न हो तो वह काम सही वक़्त पर सही तरीक़े से नहीं हो पाता क्योंकि दिलचस्पी से रग़बत पैदा होती है और इंसान जब इस काम को दिलचस्पी से करता है तो घंटों तक बग़ैर उकताहट के वह काम करता रहता है। दूसरी तरफ यह बात भी याद रहे कि जो काम इंसान खुद अपने हाथों से अंजाम देता है, उसमें इंसान की दिलचस्पी और रग़बत ज़्यादा होती है। बड़ों की तरह यह बात आपके बच्चे की दिलचस्पी पर भी लागू होती है।

पैरेंट्स को चाहिए कि वह बच्चों को अपनी सोच, दिलचस्पी और पसंद के हिसाब से खुद अपने लिए खिलौने बनाने का मौक़ा दें। जो पैरेंट्स ऐसा करते हैं उन्होंने नोट किया होगा कि बाज़ार से तैयार किए हुए क़ीमती खिलौनों के मुक़ाबले बच्चे अपने हाथ से बनाए हुए खिलौनों से खेलने में ज़्यादा लुत्फ़ उठाते हैं और बहुत शौक़ से खेलते हैं। ऐसा करने से बच्चे के ज़ेहनी और फ़िक्री सतेह बुलंद होती है और उनकी क्रिएटिव सलाहियतें उभर कर सामने आती हैं।

पैरेंटस को चाहिए कि ऐसी चीज़ें जो उनके इस्तेमाल में न हों या बेकार हो चुकी हों और वह उन्हें फेंकना चाहते हों, जैसे बचा हुआ ऊन या धागा, कीलें, तार, पुराने बर्तन, बोतलें, बोतलों के ढक्कन, छोटे बड़े टीन या गत्ते के डिब्बे, दवाईयों और लोशन वग़ैरा की बोतलें, माचिस की डिब्बियां, लकड़ी और प्लास्टिक वग़ैरा के टुकड़े, सलाई से बचे हुए कपड़ों के टुकड़े वग़ैरा फेंकने के बजाए बच्चों के हवाले कर दें और उनसे कहें कि इन चीज़ों से अपने लिए खिलौने बना लो या उनसे खेल लो। बच्चे उन चीज़ों की मदद से अपने ज़ेहन से अपनी पसंद की चीज़ें बनाएंगे और बहुत शौक़ से उन खिलौनों से खेलेंगे। बच्चों की नज़र में आपके ख़रीदे हुए क़ीमती खिलौने उतने अहम नही होंगे जितना अपने हाथ से बनाए हुए खिलौनों में उन्हें मज़ा आएगा।

बच्चों की परवरिश के एक एक्सपर्टस इस काम की अहमियत को बयान करते हुए कहते हैं, जब मेरे बच्चे छोटे थे तो मैं मोहल्ले की दुकान से कोक की बोतलों के ढक्कन लाके बच्चों को दे दिया करता था। बच्चे उनमें सुराख़ करते, उन पर रंग करते और जो दिल चाहता उससे बनाते। मैं माचिस की ख़ाली डिब्बियां भी उनके हवाले कर देता था ताकि जो चाहें अपनी मर्ज़ी से बनाएं। मैंने अपने दोस्तों से कह रखा था कि अपने अख़्बार और पुराने मैगज़ीन वग़ैरा फेंकने के बजाए मुझे दे दिया करें। मैं यह सारे अख़्बार और मैगज़ीन जमा करके अपने बच्चों को दे देता और उनसे कहता कि उन्हें कैंची से जैसा दिल चाहे काटो! और जो चाहो अपनी मर्ज़ी से बनाओ। मेरे बच्चे बहुत शौक़ से उन कागज़ों की अपनी मर्ज़ी से कटिंग करते और अलग-अलग चीज़ें बना कर ख़ुशी-ख़ुशी उनसे खेला करते।

अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि आज कल ज़्यादातर पैरेंट्स बनी बनाई चीज़ें बच्चों को ख़रीद कर देते हैं और समझते हैं कि इस तरह क़ीमती चीज़ें ख़रीद कर बच्चों को देने से वह बच्चों की ज़ेहनी और क्रिएटिव सलाहियतों को बढ़ा रहे हैं और बच्चों के लिए बहुत बड़ा काम कर रहे हैं।

ऐसे पैरेंट्स को मालूम होना चाहिए कि अगरचे खिलौने बच्चों के लिए ज़रूरी हैं लेकिन

यह बात ध्यान देने वाली है कि जब हम बच्चे के लिए बनी बनाई कश्ती ख़रीदते हैं तो दरअसल उसे कश्ती बनाने की फ़िक्र से महरूम कर देते हैं। एक बच्ची अपने हाथ से पुराने कपड़े और बचे हुए धागे से बनाई हुई गुड़िया से खेलने में जितनी ख़ुशी महसूस करती है उतनी ख़ुशी उसे बाज़ार से ख़रीदी हुई गुड़िया से खेलने में महसूस नही होगी।

पैरेंट्स को इस तरफ़ तवज्जोह देना ज़रूरी है कि खिलौने खरीदने के साथ-साथ बच्चे की उम्र के मुताबिक़ कुछ औज़ार जैसे हथौड़ी, कीलें, कैंची वग़ैरा भी कभी कभार बच्चे को दिया करें ताकि इन चीज़ों और इन जैसी दूसरी चीज़ों को इस्तेमाल करते हुए उनकी क्रिएटिव सलाहियतों में निखार पैदा हो और वह अपनी समझ-बूझ से फ़ायदा उठाते हुए अपने फ़ालतू वक़्त में कुछ न कुछ करते रहें।

जिस वक़्त बच्चे खिलौने बना रहे हों या पेंटिंग और ड्राइंग वग़ैरा में बिज़ी हों तो उस वक़्त पैरेंट्स को इस बात का ख़्याल रखना चाहिए कि बे-वजह उनके कामों में दख़ल अंदाज़ी न करें और न उनके कामों में अपनी मर्ज़ी शामिल करें। बेहतर है कि ऐसे मौक़ों पर उन्हें आज़ाद छोड़ दें ताकि वह अपनी मर्ज़ी या ज़ेहनियत और सोच के हिसाब से अपनी मर्ज़ी से कुछ करके दिखाएं। लेकिन इंडायरेक्टली उन पर नज़र रखना और गाइड करते रहना भी ज़रूरी है। जब बच्चा खुद मदद मांगें तो आप बच्चे को शौक़ दिलाएं और बहुत कम वक़्त में मुख़्तसर सी रहनुमाई करें। सिर्फ़ उतनी ही जितनी बच्चे ने आपसे चाही है। बहुत ज़्यादा वज़ाहत करने से परहेज़ करें क्योंकि बच्चों के कामों में बड़ों के बेजा इंटरफ़ेयर करने से हो सकता है कि बच्चे गुस्से में आ जाएं। इससे उनका कांफ़िडेंस भी कमज़ोर हो सकता है।

खुद अपने हाथ से खिलौने बनाने के फायदे

जब बच्चा खुद अपने हाथ से कुछ बनाता है तो उसके ऐतेमाद और इत्मीनान में काफ़ी इज़ाफ़ा होता है। उसकी क्रिएटिव सलाहियतों में चार चांद लग जाते हैं। हाथों, आंखों और सोच के बीच बैलेंस और ज़ेहनी उपज भी बढ़ती है। ज़ेहनी और नफ़सियाती ताक़तें और तहक़ीक़ का जज़्बा सही रास्ते पर इस्तेमाल होने लगता है। बच्चे चीज़ों को गहरी नज़र से देखने लगते हैं। उनके आब्ज़र्वेशन की ताक़त बढ़ जाती है। क्रिएटिविटी बढ़ती है और इस तरह वह अपनी कमज़ोरियों को भी जान जाते हैं। नेचुरल और क़ुदरती चीज़ों से लगाव पैदा होता है और बच्चा नेचर और दुनियावी सिस्टम को समझने लगता है।

बच्चा खुद अपने हाथ से खिलौने बनाने के बीच बहुत सी बातें जैसे ऊपर-नीचे, आगे-पीछे, बड़ा-छोटा, बीच, भारी-हल्का, अंदर-बाहर वग़ैरा को पहचानने लगता है।

उम्मीद है कि आप भी अपने बच्चे को अपने हाथ से खिलौने बनाने की इजाज़त दे कर उनके लिए बहुत से फ़ायदे हासिल करेंगी। ●

हमारे बनाए हुए पिंजरे

एक ज़माना था जब मकान ख़रीदते, बनाते या किराए पर लेते वक़्त मकान के बड़ा होने उसकी ख़ूबसूरती और इलाक़े के माहौल को बुनियादी दर्जा दिया जाता था लेकिन अब हालात दूसरे हैं। अब मकान लेते वक़्त सबसे बुनियादी चीज़ सेक्योरिटी और हिफ़ाज़त को समझा जाता है। गलियाँ, मोहल्ले, नाले, मैदान, इलाक़े बटे हुए हैं। सियासी व मज़हबी जमाअतों, दहशतगर्दों और जुर्म करने वालों ने अपने-अपने इलाक़े तय कर रखे हैं जहां अमन पसंद शहरी रहते तो हैं लेकिन अपनी जान हथेली पर रख कर ज़िंदगी गुज़ारते हैं।

इसी वजह से एक आम आदमी दफ़्तर, मकान या फ़्लैट लेते वक़्त सबसे ज़्यादा ध्यान सेक्योरिटी के मसले पर देता है। ताले और लोहे की गिर्लें पहले भी बिक्ती थीं लेकिन अमनो अमान की बिगड़ती हुई हालत की वजह से पिछले दस बारह साल में इनके कारोबार ने इतनी ज़्यादा तरक़्क़ी की है जो पिछले पचास सालों में कभी नही हुई थी।

किसी भी हाऊसिंग स्कीम को देख लीजिए। हर फ़्लैट लोहे का एक ख़ूबसूरत पिंजरा नज़र आता है। लोहे की सलाख़ों में से झांकते हुए बच्चों को देख कर चिड़िया घर का मंज़र निगाहों के सामने आ जाता है।

ऊंचे तबक़े के लोग जिन इलाक़ों में रहते हैं वहां सेक्योरिटी का ज़्यादा ख्याल रखा जाता है इसीलिए इन पॉश इलाकों में लोहे के पिंजरों के साथ-साथ डरावने कुत्तों और सेक्योरिटी गार्डस नज़र आते हैं। यह कुत्ते भी आज़ाद होते हैं और सेक्योरिटी गार्डस भी लेकिन उनके मालिक बहेरहाल लोहे और पत्थर के ख़ूबसूरत पिंजरों में क़ैद रहते हैं।

फ़र्क़ सिर्फ़ छोटे-बड़े, तंग व तारीक या खुले व रौशन, बेरंग और दिलकश रंगों के मिलन का है लेकिन इसमें कोई शक नही कि एक अल्लाह के आगे सर झुकाने के बजाए बेशुमार अपने बनाए हुए ख़ुदाओं को सजदा करने वाले इंसान अपनी ज़ाहिरी हालत में भी हैवानों की तरह लोहे के पिंजरों में ज़िंदगी गुज़ारने पर मजबूर हैं।

शैतान को भी ज़माने की बड़ी अच्छी पहचान है। जाहिलियत के दिनों में उसने इंसानों के लिए मिट्टी, लकड़ी और पत्थर के बुत बनवाए थे। ''पढ़े-लिखे ज़माने'' में जब इंसान की अक़्ल ने इन बेजान बुतों को ख़ुदा मानने से इंकार कर दिया तो उसने हमारे लिए ऐसे जीते-जागते, चलते-फिरते, काम करते, बातें करते और मसलों को हल करते हुए बुत तैयार करा दिए जो अपनी नाक से मक्खी ही नही इंसानी आबादियों को भी बारूद से उड़ा सकते हैं। ऐसे ताक़तवर बुत आज के इंसानों को बहुत सूट करते हैं।

ज़ाती अना, ज़ात-बिरादरियां, ज़बानें, नज़रिए, स्टेट्स, फिरक़े, जमाअतें यह सब आज कल के जीते-जागते, चलते-फिरते ताक़तवर बुतों की बेहद की जाने वाली पूजा के साइड्-इफ़ेक्ट्स हैं और नतीजे के तौर पर भूख, ग़रीबी, बीमारियां, इन-सेक्योरिटी की बेसुकून ज़िंदगी सारी दुनिया और ख़ास तौर पर मुसलमान अवाम का मुक़द्दर बन चुकी है।

यह दुनिया के बहुत बड़े चिड़ियाघर के मालिक हज़रात ही हैं जिन्होंने धीरे-धीरे सारे इंसानों को इज़्ज़त और आज़ादी की ज़िंदगी से महरूम करके चिड़ियाघर के जानवरों की तरह लोहे और पत्थरों के पिंजरों में क़ैद रखने का प्रोग्राम बना लिया है और मज़े की बात यह है कि एक सजदा करने से भागने वाले आज भी बेशुमार ख़ुदाओं को सजदा करने को तैयार हैं। ●

दुनिया आपके
इंतेज़ार
में है...

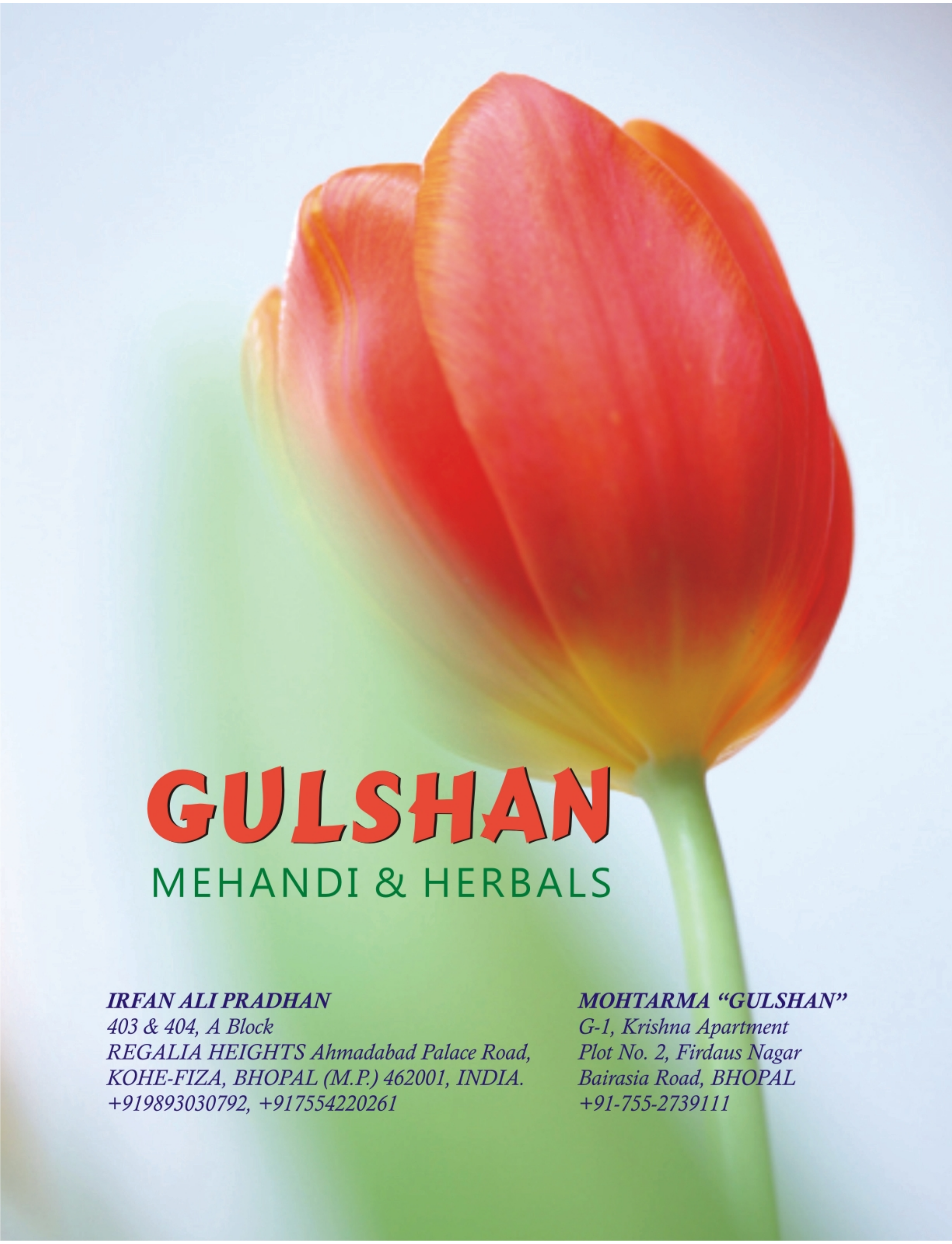

GULSHAN

MEHANDI & HERBALS

IRFAN ALI PRADHAN
403 & 404, A Block
REGALIA HEIGHTS Ahmadabad Palace Road,
KOHE-FIZA, BHOPAL (M.P.) 462001, INDIA.
+919893030792, +917554220261

MOHTARMA "GULSHAN"
G-1, Krishna Apartment
Plot No. 2, Firdaus Nagar
Bairasia Road, BHOPAL
+91-755-2739111